हिन्दी दैनिक समाचार पत्र

RNI NO - CTHIN/25/A0716

मूक पत्रिका

निष्पक्ष, निर्भीक, स्वतंत्र आवाज...

वर्ष - 01 | अंक - 335 | बेमेतरा, मंगलवार 22 जुलाई 2025 | रायपुर एवं बेमेतरा से प्रकाशित | कुल पेज - 8 | मूल्य - 5 रूपये

पहला कॉलम

हिमाचल में कल से तीन दिनों तक होगी भारी बारिश, बाढ़ की भी चेतावनी

शिमला। हिमाचल प्रदेश में मौसम विभाग ने 22 23 व 24 जुलाई को भारी से बहुत भारी वर्षा की संभावना जताई है। 22 जुलाई को चंबा, किन्नौर और लाहुल स्पीति को छोड़कर प्रदेश के अन्य जिलों में कुछ स्थानों पर भारी से बहुत भारी वर्षा का ऑरेंज अलर्ट जारी किया गया है। 22 जुलाई को कांगड़ा, मंडी, कुल्लू और सिरमौर जिलों में भारी से बहुत भारी वर्षा होने की संभावना है। कुछ क्षेत्रों में बाढ़ आने की भी चेतावनी दी गई है। इसके अलावा, 22 जुलाई को मंडी और ऊना में भी कुछ स्थानों पर भारी वर्षा की संभावना जताई गई है। हालांकि, अधिकांश स्थानों पर मौसम साफ रहने का अनुमान है। शनिवार को शिमला सहित प्रदेश के कई इलाकों में खिली धूप के साथ दिन की शुरुआत हुई, लेकिन शाम के समय बादल छाने के साथ धुंध भी छा गई।

यूपी पुलिस ने एक और धर्मांतरण रैकेट का किया पर्दाफाश, 10 लोग गिरफ्तार

लखनऊ। उत्तर प्रदेश पुलिस ने एक और बड़े धर्मांतरण का रैकेट चलाने वाले गिरोह का पर्दाफाश किया है। यह गिरोह प्रदेश में युवतियों को बरगलाकर, प्रलोभन देकर और कट्टरपंथी सोच के जरिए धर्मांतरण कराने में संलिप्त था। पुलिस ने गिरोह का भंडाफोड़ करते हुए विभिन्न राज्यों से 10 आरोपियों को गिरफ्तार किया है। पुलिस महानिदेशक राजीव कृष्ण ने बताया कि सीएम योगी के निर्देश पर अवैध धर्मांतरण पर रोक लगाने के लिए प्रदेशभर में मिशन अस्मिता चलाया जा रहा है। ऐसे में पुलिस को आगरा से दो सगी बहनों के लापता होने की सूचना मिली। पुलिस ने मामले की जांच की तो अवैध धर्मांतरण का पूरा खेल सामने आया। जांच में पता चला कि दोनों लड़कियों का ब्रेनवॉश कर धर्मांतरण किया गया। इसके बाद पुलिस ने मामले की तह तक जाना शुरू किया। इस दौरान कई चौंकाने वाले तथ्य सामने आए। डीजीपी ने बताया कि अवैध धर्मांतरण के लिए कनाडा, अमेरिका और दुबई समेत कई देशों से करोड़ों रुपए की अंतरराष्ट्रीय फंडिंग मिली थी।

चाय की दुकान पर तृणमूल नेता की बम मारकर हत्या

बीरभूम। सत्तारूढ़ तृणमूल के राज में लगातार तृणमूल के कर्मी, समर्थक और नेताओं की हत्या की घटनाओं से बंगल की पुलिस वयवस्था खुद सवालों के घेरे में आ गई है। बीरभूम ज़िले में बम से हमले में तृणमूल कांग्रेस के एक स्थानीय नेता बाइतुल्ला शेख (40) की मौत हो गई। आंकड़ों की बात करे तो पिछले नौ दिनों में तृणमूल कांग्रेस नेताओं पर हुआ यह चौथा जानलेवा हमला है। उक्त ठीक तब घटी जब तृणमूल के द्वारा 21 जुलाई के दिन होने वाले पार्टी की शहीद दिवस रैली की तैयारी की जा रही थी। लेकिन शनिवार रात को बीरभूम जिले के मल्लारपुर थाना अंतर्गत विषियाग्राम गांव में तृणमूल नेता बाइतुल्ला शेख की बम मारकर हत्या कर दी गई।

मोदी ने की विपक्षी नेताओं की तारीफ

दल हित में मत भले न मिले, पर देश हित में मन जरूर मिले.......

नई दिल्ली/ एजेंसी

संसद के मानसून सत्र की शुरुआत से पहले प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने संसद भवन के बाहर मीडिया से बात की। उन्होंने ऑपरेशन सिंदूर के बाद भारत की स्थिति से रू-बरू कराने के लिए दुनिया के विभिन्न हिस्सों का दौरा करने वाले बहुदलीय प्रतिनिधिमंडलों की सराहना की। इन प्रतिनिधिमंडलों ने आतंकवादियों के आका पाकिस्तान को बेनकाब करने में अहम योगदान दिया। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा, 'देश ने एकता की ताकत देखी है। इसलिए सदन के सभी सांसदगण इसे ताकत दें, इसे आगे बढ़ाएं और मैं निश्चित तौर पर कहूंगा कि हर राजनीतिक दल का अपना एजेंडा होता है, अपनी भूमिका होती है, लेकिन मैं इस सच्चाई को स्वीकार करता हूं कि दल हित में मत भले न मिले, लेकिन देश हित में मन जरूर मिले...'इससे पहले पीएम मोदी ने कहा कि मानसून सत्र एक 'विजय उत्सव' है, क्योंकि ऑपरेशन सिंदूर में भारत की सैन्य शक्ति और क्षमता का प्रदर्शन हुआ। पीएम मोदी ने कहा, 'ऑपरेशन सिंदूर में भारतीय सशस्त्र बलों ने अपने निर्धारित लक्ष्यों को शत-प्रतिशत हासिल किया। ऑपरेशन सिंदूर के तहत सशस्त्र बलों ने 22 मिनट के भीतर आतंकवाद के आकाओं को उनके घरों में घुसकर मारा, उनके ठिकानों को मलबे में तब्दील कर दिया। उन्होंने कहा कि मैंने बिहार में पहलगाम आतंकी हमले के गुनहगारों को मिट्टी में मिलाने की बात कही थी और हमारी सेना ने हमारी सैन्य शक्ति बहुत कम समय में ही साबित कर दी। दुनिया भी 'मेड इन इंडिया' की सैन्य क्षमता की ओर आकर्षित हुई है। पीएम मोदी ने विश्वास व्यक्त किया कि सत्र के दौरान सांसद एक स्वर में और विजयी भावना के साथ इन भावनाओं को व्यक्त करेंगे, जिससे भारत की सैन्य क्षमता मजबूत होगी, लोगों को प्रेरणा मिलेगी और मेड इन इंडिया रक्षा क्षमताओं को भी बढ़ावा मिलेगा। उन्होंने यह भी कहा कि पहलगाम में हुए क्रूर नरसंहार ने पूरी दुनिया को झकझोर दिया। हमले ने आतंकवाद और उसकी जड़ों की ओर दुनिया का ध्यान आकर्षित किया। पीएम मोदी ने नक्सलवाद के खिलाफ अपनी सरकार की निर्णायक कार्रवाई की भी सराहना की। उन्होंने कहा कि लाल गलियारे अब हरित विकास क्षेत्रों में बदल रहे हैं। देश शुरू से ही हिंसक घटनाओं से जूझ रहा है।

जस्टिस यशवंत वर्मा को हटाने की प्रक्रिया शुरू, लोकसभा में 145, राज्यसभा में 63 सांसदों ने दिया

नई दिल्ली। संसद के मानसून सत्र की आज से शुरुआत हो गई है। 21 अगस्त तक ये मानसून सत्र चलेगा। सत्र का पहला दिन हंगामे से भरा रहा। संसद में विपक्ष ने कई मुद्दों को लेकर हंगामा किया। दरअसल, दोनों सदनों में कार्यवाही की शुरुआत होते ही सदस्यों ने हंगामा किया। विपक्ष ने सत्र के पहले दिन ही अपने तेवर दिखा दिए। इसके साथ ही जाहिर कर दिया कि वह ऑपरेशन सिंदूर और बिहार में मतदाता सूची के पुनरीक्षण को लेकर सरकार को थोड़ी भी ढील देने के मूड में नहीं है। सोमवार मानसून सत्र की शुरुआत के साथ विपक्ष ने अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के युद्ध विराम वाले दावे को लेकर सदन में हंगामा किया। इसके अलावा हंगामा के बीच ही राज्य सभा में एक बिल को पारित किया गया। मानसून सत्र के पहले दिन इलाहाबाद हाई कोर्ट के जस्टिस यशवंत वर्मा के खिलाफमहाभियोग की प्रक्रिया सोमवार दोपहर से शुरू हो गई।

सरकार पर बड़ा आरोप लगाया

मैं विपक्ष का नेता हूं.. लेकिन मुझे बोलने नहीं दिया जा रहा..राहुल...

नई दिल्ली/ एजेंसी

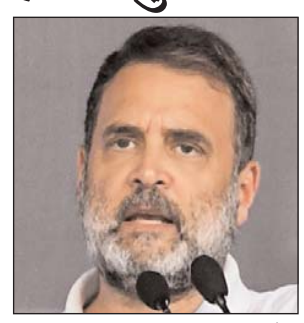

मानसून सत्र के पहले दिन दोपहर 2 बजे तक के लिए स्थगित होने के बाद, लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी ने सरकार पर बड़ा आरोप लगाया है। उन्होंने कहा कि सवाल यह है कि रक्षा मंत्री को सदन में बोलने की अनुमति है, लेकिन विपक्ष के सदस्यों, जिनमें मैं भी शामिल हूं, जो विपक्ष का नेता हूं, को बोलने की अनुमति नहीं है। यह एक नया दृष्टिकोण है। परंपरा कहती है कि यदि सरकार की ओर से लोग बोल सकते हैं, तो हमें भी बोलने की जगह दी जानी चाहिए। कांग्रेस सांसद प्रियंका गांधी वाड्रा ने कहा कि अगर वे (सरकार) चर्चा के लिए तैयार हैं, तो उन्हें विपक्ष के नेता को बोलने देना चाहिए। वह बोलने के लिए खड़े हुए हैं, इसलिए उन्हें बोलने दिया जाना चाहिए। सपा सांसद राजीव राय ने कहा कि हमारे लिए राष्ट्रहित सर्वोच्च है। पूरा विपक्ष और जनता सशस्त्र बलों और सरकार के साथ खड़ी है। प्रधानमंत्री को देश को बताना चाहिए कि पहलगाम में निर्दोष लोगों की हत्या करने वाले आतंकवादी कहां हैं? सुरक्षा में इस नाकामी की जिम्मेदारी कौन लेगा? ऑपरेशन सिंदूर और पहलगाम हमले पर चर्चा की मांग को लेकर विपक्षी सांसदों के लगातार नारे लगाने के कारण लोकसभा की कार्यवाही 1400 बजे तक स्थगित कर दी गई। रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने कहा कि सरकार किसी भी मुद्दे पर चर्चा के लिए पूरी तरह तैयार है। वहीं, केंद्रीय संसदीय कार्य मंत्री किरेन रिजिजू ने कहा कि चर्चा के एजेंडे पर निर्णय लेने के लिए 1430 बजे बिजनेस एडवाइजरी कमेटी की बैठक होगी। सरकार चर्चा के लिए तैयार है। लेकिन वे (विपक्षी सांसद) यहां (सदन के वेल में) विरोध कर रहे हैं। मानसून सत्र के पहले दिन इस तरह विरोध करना सही नहीं है।

शहीद दिवस रैली में ममता बनर्जी की हुंकार

हमारे पश्चिम बंगाल में एसआईआर जैसा कुछ नहीं होने देंगे

नई दिल्ली/ एजेंसी

पश्चिम बंगाल में 2026 में होने वाले विधानसभा चुनावों से पहले अपनी 'बंगाली अस्मिता' (गौरव) की बात को तेज करते हुए मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने सोमवार को भाजपा पर बंगालियों पर भाषाई आतंकवाद फैलाने का आरोप लगाया और कहा कि पहचान और भाषा की लड़ाई तब तक जारी रहेगी जब तक कि भगवा पार्टी राज्य और केंद्र दोनों में हार नहीं जाती। बनर्जी ने कहा कि हम सभी भाषाओं का सम्मान करते हैं, चाहे वह हिंदी हो, गुजराती हो, मराठी हो, राजस्थानी हो। पश्चिम बंगाल के लोगों ने स्वतंत्रता आंदोलन में बड़ी भूमिका निभाई थी। पश्चिम बंगाल के लोग जो कर सकते हैं, वह कोई और नहीं कर सकता। कोलकाता में टीएमसी शहीद दिवस रैली को संबोधित करते हुए, बनर्जी ने 2026 के चुनावों में भगवा पार्टी को हराने और अंतत: केंद्र की सत्ता से भाजपा को बेदखल करने का आह्वान किया। मध्य कोलकाता स्थित रैली स्थल पर भारी भीड़ के सामने बनर्जी ने गरजते हुए कहा कि बंगाली भाषा पर भाजपा के आतंकवाद के खिलाफ एक भाषाई आंदोलन होगा। 27 जुलाई से, बंगालियों पर हमलों के विरोध में पश्चिम बंगाल में भाषाई आंदोलन शुरू होगा। उन्होंने ज़ोर देकर कहा, हमें 2026 के विधानसभा चुनावों में और सीटें जीतनी हैं और फिर भाजपा को हराने के लिए दिल्ली कूच करना है। तृणमूल कांग्रेस की शहीद दिवस रैली में ममता बनर्जी ने कहा कि भाजपा बंगाल में एसआईआर।

2026 के चुनावों की तैयारी का बिगुल

कोलकाता में भारी जनसमूह को संबोधित करते हुए ममता ने कहा कि 2026 के विधानसभा चुनाव में भाजपा को हराना जरूरी है, और इसके बाद केंद्र से भी भाजपा को हटाना होगा। उन्होंने लोगों से आह्वान किया कि वे बंगाली अस्मिता (गौरव) के लिए एकजुट होकर लड़ें। इसके साथ ही मुख्यमंत्री ने एलान किया कि 27 जुलाई से राज्य में भाषा आंदोलन की शुरुआत की जाएगी। उन्होंने कहा कि भाजपा द्वारा बंगाली भाषा और पहचान पर हो रहे हमलों के खिलाफहमें आवाज उठानी होगी।

आतंकियों की तलाश के लिए घाटी के चार जिलों में 10 जगहों पर चलाया अभियान

श्रीनगर। जम्मू-कश्मीर में आतंक से जुड़े एक मामले में श्रीनगर की कई जगहों पर तलाशी अभियान जारी है। इस बारे में अधिकारियों ने बताया कि जम्मू-कश्मीर पुलिस की काउंटर-इंटेलिजेंस विंग एक आतंकी मामले के सिलसिले में घाटी में कई जगहों पर तलाशी ले रही है। अधिकारियों ने बताया कि काउंटर इंटेलिजेंस कश्मीर (सीआईके) द्वारा कश्मीर घाटी के चार जिलों में 10 जगहों पर तलाशी ली जा रही है। आतंकवादी स्लीपर सेल और भर्ती मॉड्यूल का पता लगाने के लिए तलाशी ली जा रही है।

कहीं न कहीं कांवड़ यात्रा की सुरक्षा में बड़ी चूक

सरधना में गंगनहर में बहते मिले चार शव, कांवड़ यात्रा के बीच हड़कंप, पुलिस पर लापरवाही का आरोप लगा

मेरठ / एजेंसी

मेरठ के सरधना में कांवड़ यात्रा के बीच सोमवार को मेरठ जिले के सरधना क्षेत्र में गंगनहर में एक के बाद एक चार अज्ञात शव बहते हुए नजर आए। शवों को अटेरना पुलिस चौकी और सरधना गंगनहर पुल के पास देखा गया, जिससे पूरे क्षेत्र में हड़कंप मच गया। स्थानीय लोगों और श्रद्धालुओं ने जब शवों को गंगनहर में बहते देखा तो तुरंत पुलिस को सूचना दी, लेकिन थाना प्रभारी मौके पर आकर केवल भीड़ हटाकर चले गए, शवों को बाहर निकालने का कोई प्रयास नहीं किया गया। स्थानीय नागरिकों का आरोप है कि पुलिस का यही रवैया पहले भी रहा है। पिछले सप्ताह भी मानपुरी गांव, सरधना पुल और अहमदाबाद के पास इसी तरह तीन शव गंगनहर में बहते हुए मिले थे, जिनका जिम्मा एक थाने से दूसरे थाने पर डालकर औपचारिकता निभा दी गई। अब लगातार शव मिलने और पुलिस की निष्क्रियता से जनता में भारी नाराजगी है। कई लोगों ने यह भी बताया कि हाल में युवक-युवती के शव भी कांवड़ियों जैसे वस्त्रों में मिले थे, जिससे श्रद्धालुओं की सुरक्षा को लेकर गंभीर सवाल उठने लगे हैं। स्थानीय निवासियों का कहना है कि यह केवल दुर्घटना या आत्महत्या नहीं, बल्कि कहीं न कहीं कांवड़ यात्रा की सुरक्षा में बड़ी चूक भी हो सकती है। लोगों की मांग है कि शवों की शिनाख्त कराकर मामले की गहन जांच की जाए। पुलिस की ओर से अब तक शव निकालने या शिनाख्त की दिशा में कोई ठोस कार्रवाई नहीं हुई। इससे न केवल कांवड़ यात्रा की सुरक्षा पर प्रश्नचिह्न लगा है, बल्कि प्रशासन की कार्यशैली पर भी।

जम्मू से अमरनाथ यात्रा के लिए 6,000 से अधिक तीर्थयात्रियों का नया जत्था हुआ रवाना।

101 साल की उम्र में ली अंतिम सांस

केरल के पूर्व सीएम अच्युतानंदन का निधन

केरल। केरल के पूर्व मुख्यमंत्री वीएस अच्युतानंदन का सोमवार को तिरुवनंतपुरम के एक निजी अस्पताल में निधन हो गया। वह 101 वर्ष के थे। वह 2006 से 2011 तक मुख्यमंत्री रहे। अच्युतानंदन 2019 में मामूली स्ट्रोक के बाद सार्वजनिक जीवन से दूर हो गए थे। उसके बाद से वे अपने बेटे वी. अरुण कुमार के तिरुवनंतपुरम स्थित आवास पर जीवन व्यतीत कर रहे थे। अनुभवी कम्युनिस्ट और स्वतंत्रता सेनानी केरल में कम्युनिस्ट आंदोलन के एक मजबूत प्रतीक थे और दशकों तक राज्य की राजनीति में उनकी उपस्थिति बहुत मजबूत थी। विपक्ष के एक जुझारू नेता के रूप में, अच्युतानंदन वंचितों और कठिन सार्वजनिक मुद्दों के लिए एक ध्वजवाहक थे।

बांग्लादेश एफ-7 प्लेन क्रैश

16 छात्र समेत 19 लोगों की मौत, 100 से ज्यादा घायल हुए

ढाका/ एजेंसी

बांग्लादेशी वायुसेना का एक एफ -7 प्रशिक्षण विमान सोमवार को कॉलेज परिसर में हादसे का शिकार हो गया। विमान कॉलेज की बिल्डिंग से जा टकराया। स्थानीय मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक, हादसे में 19 लोगों की मौत हो गई, जबकि 160 से अधिक लोग घायल बताए जा रहे हैं। हादसे के वक्त माइलस्टोन कॉलेज में बच्चे मौजूद थे। प्लेन क्रैश होने के बाद स्कूल-कॉलेज में अफरातफरी मच गई। मौके पर अग्निशमन और बचाव दलों ने पहुंचकर बचाव कार्य शुरू कर दिया है। नेशनल बर्न इंस्टीट्यूट के अधिकारी प्रोफेसर मोहम्मद सईदुर रहमान ने बताया कि वायुसेना का विमान माइलस्टोन कॉलेज परिसर में दुर्घटनाग्रस्त हो गया था। जिसमें विमान के पायलट सहित कम से कम 19 लोगों की मौत हो गई। हजरत शाहजलाल अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे के एक वरिष्ठ अधिकारी ने भी घटना की पुष्टि की है। सूचना मिलने पर बांग्लादेशी सेना के सदस्य, अग्निशमन सेवा और नागरिक सुरक्षा की आठ गाड़ियां घटनास्थल पर पहुंचीं और बचाव अभियान शुरू किया। बांग्लादेश सेना के जनसंपर्क कार्यालय ने बताया कि वायुसेना का प्रशिक्षण विमान स्न-7 क्चत्नढ्ढ ढाका के उत्तरा क्षेत्र के दियाबारी इलाके में माइलस्टोन स्कूल और कॉलेज परिसर में गिर गया। अग्निशमन अधिकारी लीमा खान ने बताया कि हादसे में एक व्यक्ति की मौत हो गई और चार अन्य घायल हो गए। अधिकारियों ने बताया कि प्रशिक्षण विमान ने दोपहर लगभग 1:06 बजे उड़ान भरी थी और उड़ान भरने के तुरंत बाद ही दुर्घटनाग्रस्त हो गया। हादसे के बाद विमान में आग लग गई। आग बुझाने के लिए अग्निशमन दल की आठ दमकल मौके पर पहुंच गईं। माइलस्टोन स्कूल और कॉलेज के प्रवक्ता ने कहा कि विमान स्कूल के गेट के पास गिरा। स्कूल परिसर में जहां विमान हादसा हुआ, वहां कक्षा चल रही थी। घायलों को एक-एक करके बाहर निकाला जा रहा है। बांग्लादेशी मीडिया के मुताबिक एक प्रत्यक्षदर्शी सादमान रुहसिन ने बताया कि विमान स्कूल की इमारत से टकराया। सेना और अग्निशमन सेवा के सदस्य घटनास्थल पर पहुंचे और छात्रों तथा अभिभावकों को सुरक्षित स्थान पर पहुंचाया। सेना के जवान घायल छात्रों को बाहों में बाहर लाते देखे गए।

नारायणपुर विधानसभा को मंत्री केदार कश्यप ने दी 42 लाख की सौगात, व्यवसायिक परिसर सहित विभिन्न निर्माण कार्यों का किया भूमिपुजन

बस्तर के विकास का संकल्प होगा पूरा - केदार कश्यप

कांग्रेस शासन में रुके सभी विकास कार्यों को साय सरकार ने किया गतिमान, सड़कों और पुल पुलियों का हो रहा निर्माण- केदार कश्यप

वनमंत्री केदार कश्यप ग्राम पंचायत नवा रतेंगा व घोटिया में आयोजित लोकार्पण,भूमिपूजन और एक पेड़ माँ के नाम कार्यक्रम में हुए शामिल

जगदलपुर/दंतेवाड़ा/मूक पत्रिका

छत्तीसगढ़ शासन के वनमंत्री केदार कश्यप इन दिनों बस्तर प्रवास पर हैं। आज उन्होंने बस्तर के विकास और समृद्धि के लिये क्षेत्रवासियों को कई सौगात दिए। मंत्री केदार कश्यप ने ग्राम पंचायत रतेंगा, नवा रतेंगा, घोटिया, नारायणपाल में भवन निर्माण, व्यवसायिक परिसर, पुल- पुलिया सहित विभिन्न निर्माण कार्यों के लिये 42 लाख रूपये की सौगात दी। मंत्री केदार कश्यप ने इस दौरान जन समूह को सम्बोधित करते हुए कहा कि बस्तर के विकास के लिये विष्णुदेव साय सरकार लगातार प्रयासरत है। लगातार क्षेत्र को मिल रही सौगात विष्णुदेव साय जी की बस्तरवासियों के प्रति सकारात्मक दृष्टि को दर्शाता है। बस्तर क्षेत्र में विकास की पहलों को बढ़ावा देने और स्थानीय लोगों के जीवन स्तर में सुधार लाने के लिए सरकार द्वारा कई कदम उठाए जा रहे हैं। बस्तर के विकास के लिये सड़कों का सुधार और निर्माण कार्य जारी : वनमंत्री केदार कश्यप ने क्षेत्रवासियों से कहा कि सड़क निर्माण और सुधार कार्य साय सरकार में तेजी से चल रहा है। बस्तर में कॉंग्रेस सरकार ने पिछले पाँच साल एक भी सड़क का निर्माण नहीं किया न ही सड़क की मरम्मत की जिसके कारण आज क्षेत्र के लोगों को काफी दिक्कतों का सामना करना पड़ रहा है। लेकिन भाजपा शासन और विष्णुदेव साय सरकार ने क्षेत्र में आवागमन की सुविधा को दुरुस्त करने कई सड़कों के पुनर्निर्माण के लिये स्वीकृति दी है। उन्होंने बताया कि नारायणपुर कोंडागांव मार्ग का निर्माण कार्य जारी है वहीँ, अंतागढ़ से नारायणपुर, ओरछा से नारायणपुर सड़क निर्माण और सुधार के कार्य के लिये प्रशासकीय स्वीकृति मिल गयी है जल्द ही क्षेत्रवासियों को सुलभ सड़क प्राप्त होगा।

शिक्षा और स्वास्थ्य के क्षेत्र में सुधार जारी :- मंत्री केदार कश्यप ने कहा कि कांग्रेस शासन काल में प्रदेश की स्वास्थ्य व्यवस्था और शिक्षा व्यवस्था का बुरा हाल था। शिक्षा और स्वास्थ्य क्षेत्र में कांग्रेस सरकार ने काम के नाम पर केवल नाम बदलने का काम किया। कांग्रेस ने बस्तर ही नहीं पुरे प्रदेश में एक नया स्वास्थ्य केंद्र और न ही नये स्कूल का निर्माण किया। मंत्री केदार कश्यप ने कहा कि प्रदेश में जबसे विष्णुदेव साय जी की सरकार आयी है तब से बस्तर क्षेत्र में विकास कार्यों में तेजी आयी है। 15 हजार प्रधानमंत्री आवास स्वीकृत हुए, 45 आंगनबाडी केंद्र, पीएससी भवन, नवीन स्वास्थ्य केंद्र, महतारी सदन की स्वीकृति बस्तर क्षेत्रवासियों के सुविधा और सेवा के लिये प्राप्त हुए हैं।

उद्योग और रोजगार के क्षेत्र में कौशल विकास और सहकारिता को बढ़ावा देने पर हमारा प्रयास –वनमंत्री केदार कश्यप ने कहा कि बस्तर में उद्योग और रोजगार के अवसरों को बढ़ावा देने के लिए सरकार द्वारा प्रयास किए जा रहे हैं, जिससे स्थानीय युवाओं को रोजगार मिल सके। कौशल विकास के माध्यम से आज बस्तर में आत्म समर्पित नक्सलीयों को प्रशिक्षण दिया जा रहा है। स्थानीय युवाओं को पर्यटन क्षेत्र में होटल मैंनेजमेंट, फूड प्रोसेसिंग, डिजिटल मार्केटिंग जैसे विधाओं में पारंगत किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि साय सरकार स्थानीय स्तर पर व्यापार और उद्योग को बढ़ावा देने के लिये बस्तर क्षेत्र में व्यवसायिक परिसर का निर्माण कर रही है जिससे क्षेत्र के लोगों को स्थानीय स्तर पर व्यापारिक केंद्र प्राप्त होगा।

बाराद्वार के 125 शिवभक्त कावड़िये रवाना हुए सुल्तानगंज

मारवाड़ी कांवड़ सेवा संघ विगत 50 वर्षों से कर रही है बैजनाथ धाम की कावड़ यात्रा

जांजगीर चांपा/सक्ती /मूक पत्रिका

श्रावणी मास के शुभारंभ होते ही जहां लोग बाबा भोलेनाथ की आराधना में लग जाते हैं, तो वहीं बाराद्वार शहर के मारवाड़ी कावड़ संघ द्वारा पिछले 50 वर्षों से निरंतर बाबा बैजनाथ धाम की सफल कावड़ यात्रा की जा रही है, तथा प्रतिवर्ष इस संघ के माध्यम से सैकड़ो की संख्या में शिव भक्त सुल्तानगंज पहुंचकर वहां से जल उठाकर सैकड़ो किलोमीटर की यात्रा करते हुए बाबा बैजनाथ को जलाभिषेक करते हैं, तो इसी श्रृंखला में 21 जुलाई को बाराद्वार के मारवाड़ी कावड़ संघ के 125 शिव भक्त सुल्तानगंज की ओर रवाना हो गए, ये सभी साउथ बिहार ट्रेन से बाबा धाम के लिए रवाना हुए वे वहां से गंगाजल लेकर पैदल बाबाधाम में बाबा को जल अर्पण करेंगे, इन भक्तों में महिलाएं और बच्चे भी शामिल है, इस संबंध में शिव भक्त सुनील जिंदल ने बताया कि करीब 50 वर्षों से मारवाड़ी कावड़ संघ बाबाधाम जा रहा है, एवं शहर के शिव भक्तों का उत्साह देखते ही बनता है, इस वर्ष भी लोगों में बाबा बैजनाथ धाम जाने के लिए जहां उत्साह देखा जा रहा था, तो वहीं पूरे यात्रा मार्ग में भी जगह-जगह रात्रि विश्राम के माध्यम से बाबा की आराधना करते हुए उनके जलाभिषेक किया जाएगा, 21 जुलाई को ब्रैडब्सर शहर से बाबा बैजनाथ धाम के लिए रवाना होने वालों में जिसमें प्रमुख रुप से गोलू सिंघानिया, संतोष, बंटी, लालू सिंघानिया, प्रमोद, बंटी, राकू बंसल, सुनील जिंदल, दीपक बूटी, अंकित, नरेश जिंदल, अतुल, गोपाल शर्मा, मोहित डिंपू, मनीष, मोगा सेन, उमेश,नारायण, सहित काफी संख्या में शिव भक्त शामिल हैं।

झेरिया धोबी बरेठ समाज परिक्षेत्र ओड़ेकेरा के शपथ ग्रहण समारोह मे बतौर मुख्य अतिथि शामिल हुए विधायक बालेश्वर

जांजगीर चांपा/मूक पत्रिका

झेरिया धोबी बरेठ समाज परिक्षेत्र ओड़ेकेरा के शपथ ग्रहण समारोह का आयोजन किया गया। यह कार्यक्रम जैजैपुर विधायक बालेश्वर साहू के मुख्य आतिथ्य में संपन्न हुआ। कार्यक्रम की अध्यक्षता झरिया धोबी बरेठ सेवा समिति संभाग बिलासपुर अध्यक्ष रोशन लाल बरेठ ने किया।

बैठक में समाज के पदाधिकारियों का निर्वाचन भी संपन्न हुआ जिसमें जवाहर लाल कर्ष नवनिर्वाचित अध्यक्ष, श्याम लाल कर्ष को उपाध्यक्ष, जम्मू लाल कर्ष को सचिव लक्ष्मण कर्ष को कोषाध्यक्ष, महादेव कर्ष को सह सचिव निर्वाचित किया गया। मुख्य अतिथि की आसंदी से क्षेत्रीय विधायक बालेश्वर साहू ने सभी नव निर्वाचित पदाधिकारियों को बधाई और शुभकामना देते हुए उम्मीद जताई और कहा कि सभी पदाधिकारी समाज को शिक्षित एवं विकासशील बनाने मे अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे. कार्यक्रम मे जनप्रतिनिधियां सरपंच पंच एवं समाज के समस्त पदाधिकारी व सदस्यगण बड़ी संख्या में उपस्थित रहे।

'नवपदस्थ बीईओ एंव बीआरसी द्वारा ली गयी स्कूली गतिविधियों की जानकारी'

सिंघौरी स्कूल में बीईओ द्वारा किया गया निरीक्षण

बेमेतरा/मूक पत्रिका

शासकीय प्राथमिक एंव पूर्व माध्यमिक स्कूल सिंघौरी में कामिनी महिलांग बेमेतरा विकासखंड के नवपदस्थ बीईओ एंव राजेन्द्र साहू विकासखंड स्त्रोत समन्वयक द्वारा निरीक्षण किया गया।अधिकारी द्वारा दोनों संस्था के शिक्षकों की बैठक लेकर शैक्षणिक गतिविधियों की जानकारी ली गयी।संस्था प्रमुख मीनाक्षी शर्मा ने पाठ्यपुस्तक, गणवेश वितरण,दर्ज संख्या एंव शिक्षकों की दैनंदिनी संबंधित जानकारी दी गई। चर्चा के दौरान बीईओ मैडम द्वारा अपनी प्रारंभिक शिक्षा सिंघौरी स्कूल से ही ग्रहण करना बताया गया।तत्पश्चात बीईओ द्वारा बच्चो के साथ बैठकर मध्यान्ह भोजन चखकर गुणवत्ता की परख की गई। अधिकारी को अपने बीच पाकर बच्चें उत्साहित नजर आये।मध्यान्ह भोजन संतोषप्रद पाया गया।मिनू में चावल, दालफ्राई,आचार एंव पापड़ देना पाया गया।इसी बीच युगल देवांगन अध्यक्ष भाजपा शहर मंडल बेमेतरा, नारद साहू एसएमसी अध्यक्ष, बादल वर्मा उपाध्यक्ष,पोषण वर्मा शिक्षाविद,कमल मानिकपुरी, गजाधर ने भी बैठकर मध्यान्ह भोजन का स्वाद चखा।इस दौरान स्कूल में धनीराम बंजारे संकुल समन्वयक,सरस्वती साहू,देवेंद्र साहू,नुतेश्वर चंद्राकर, प्रशांत बघेल,किरण खरे,पूनम साहू एंव साजन वर्मा भी उपस्थित रहे।

घर में घुसकर महिला से छेड़छाड़ करने वाले आरोपी गिरफ्तार थाना पामगढ़ पुलिस की त्वरीत कार्यवाही

जांजगीर चांपा /मूक पत्रिका

महिला पर घटित अपराध को गंभीरता से लेते हुए आरोपी के विरुद्ध त्वरित कार्रवाई करते हुए न्यायिक रिमाण्ड पर भेजा गया। आरोपी - श्रीराम यादव उम्र 30 वर्ष निवासी व्यासनगर थाना पामगढ़ जिला जांजगीर चाम्पा ने मामले में बीते शनिवार को पीड़िता घर में थी तभी आरोपी द्वारा सूनेपन का फायदा उठाकर बेइज्जती करने की नियत से छेड़छाड़ करने लगा पीड़िता चिल्लाई तो आरोपी वहां से भाग गया जिसकी सूचना रिपोर्ट पर अपराध क्रमांक 321/25 धारा 74, 333 बी.एन.एस. कायम कर विवेचना में लिया गया।

महिला पर घटित अपराध को गंभीरता से लेते हुए पुलिस अधीक्षक जांजगीर चांपा विजय कुमार पाण्डेय के निर्देशन में थाना पामगढ़ पुलिस द्वारा त्वरित कार्रवाई करते हुए आरोपी श्रीराम यादव निवासी व्यासनगर थाना पामगढ़ को उसके सकुनत से पकड़ा जिसको हिरासत मे लेकर घटना के सम्बंध मे पुछताछ किया किया जो सुनेपन का फायदा उठाकर महिला से छेड़छाड़ करना जुर्म स्वीकार किए जाने से विधिवत गिरफ्तार कर न्यायिक रिमांड पर भेजा गया है।

VPD (वैक्सीन प्रिवेंशन डिजीज) के लिए कार्य शाला सम्पन्न हुई

रायपुर /मूक पत्रिका

सीएमएचओ सभाकक्ष में बीते सोमवार को कलेक्टर डॉ गौरव सिंह के निर्देशानुसार सर्विलेंस मेडिकल ऑफिसर, डब्लू.एच.ओ रायपुर डॉ. नितीन पाटिल के द्वारा एक दिवसीय ड्ढ्ढक्क्ष्ठ सर्विलेंस कार्यशाला का आयोजन किया गया। प्रशिक्षण में खंड/शहरी चिकित्सा अधिकारी, शहरी/विकासखंड नोडल अधिकारी, बीपीएम, सी पी एम, बीईटीओ, सुपर वाइजर एवं जिला कार्यालय से जिला सांख्यिकी अधिकारी दिलीप बंजारे उपस्थित रहें। वैक्सीन प्रिवेंशन डिजीज अंतर्गत स्स्न्न्ह के द्वारा, मिजिल्स रुबेला सर्विलेंस,स्न्नक्क गलघोंटू, कुकुर खांसी, काली खासी, नवजात टेटनस, धनुषटंकार इत्यादि बीमारियों पर विस्तार से चर्चा की गई एवं सर्विलेंस के महत्व को समझाया गया। साथ ही टीकाकरण के बाद होने वाली प्रतिकूल प्रभाव के बारे में जानकारी देते हुए एनाफिलेक्सिस और इसके किट के बारे में समझाया गया। वर्क शाप में प्रशिक्षण के दौरान प्रतिभागियों ने प्री एवं पोस्ट पेपर को हल किया। इस प्रशिक्षण को प्राप्त करने के उपरांत उपरोक्त सभी डिजीज के लिए सर्विलेंस में तेजी आएगी। टीकाकरण कार्यकम की विगत 3 माह की उपलब्धि की समीक्षा मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ मिथलेश चौधरी द्वारा की गई गया। सभी विकासखंड के बीएमओ को आनुपातिक लक्ष्य के अनुरूप आगामी महीनों में शत प्रतिशत उपलब्धि प्राप्त करने हेतु सीएमएचओ डॉ चौधरी जी द्वारा निर्देश दिए गए।

पीएम आवास पर भाजपा के झूठे दावे की रोज खुल रही है पोल, पात्र हितग्राही आत्महत्या करने मजबूर

रायपुर /मूक पत्रिका

धमतरी कलेक्टोरेट में जनदर्शन के दौरान पीएम आवास से बार बार नाम काटे जाने से व्यथित युवक के आत्मदाह के प्रयास को भाजपा सरकार के वादाखिलाफी का प्रमाण करार देते हुए प्रदेश कांग्रेस कमेटी के वरिष्ठ प्रवक्ता सुरेंद्र वर्मा ने कहा है कि यह सरकार 18 लाख प्रधानमंत्री आवास देने के नाम पर केवल झूठे दावे करके वाहवाही लूट रही है प्रार्थी को नियमो का हवाला देकर डेढ़ साल से घुमाया जा रहा था, सर्वे सूची में शामिल करने का झांसा देकर योजना का लाभ अब तक नहीं दिया गया जिससे व्यथित होकर युवक ने खुद पर केरोसिन डाल लिया है और आग लगाने की कोशिश की। पूरे प्रदेश में पीएम आवास के पात्र हितग्राही करण सोनवानी की तरह पक्के मकान की बाट जोह रहे हैं लेकिन यह सरकार केवल झूठे दावे करके श्रेय लेने में लगी है अब लोगों के धैर्य खत्म होने लगा है। इस सरकार से उम्मीदें खत्म हो चुकी है। प्रदेश कांग्रेस कमेटी के वरिष्ठ प्रवक्ता सुरेंद्र वर्मा ने कहा है कि भाजपा सरकार के द्वारा खिलाफ से पूरे प्रदेश की जनता अपने आप को ठगा महसूस कर रही है। भाजपा नेता राजनैतिक इवेंट के लिए बार बार योजना का फार्म भरवाते हैं, उनकी लालच देकर उनकी मजबूरी का तमाशा बनाते हैं लेकिन जब देने की बारी आती है तो नाम कट जाता है। डोमा गांव रहने वाले करण सोनवानी ने पीएम आवास योजना के लिए इसी तरह ही आवेदन किया है, लेकिन बार बार सूची से उसका नाम काटा जा रहा था, इसी से परेशान होकर ऐसा अनुचित कदम उठाने मजबूर होना पड़ा। संवेदनहीन सरकार में पीड़ित ही प्रताड़ित हो रहे हैं। प्रदेश कांग्रेस कमेटी के वरिष्ठ प्रवक्ता सुरेंद्र वर्मा ने कहा है कि मोदी की गारंटी छत्तीसगढ़ में पूरी तरह से फेल हो चुकी है। 2022 तक हर सर पर पक्का छत देने का वादा जुमला साबित हो चुका है। 2023 की विधानसभा चुनाव के दौरान 18 लाख प्रधानमंत्री आवास देने का वादा किया गया, दावा किया गया कि साय सरकार के शपथ ग्रहण के बाद पहला निर्णय 18 लाख पीएम आवास की स्वीकृति का फर्जी दावा किया गया लेकिन आज तक उन 18 लाख प्रधानमंत्री आवास के हितग्राहियों की सूची जारी नहीं की गई। सरकार के पास लाखों शिकायत पीएम के संदर्भ में है लेकिन यह सरकार केवल कागजी दावे करके गरीबों के हक और अधिकारों पर डकैती कर रही है। पूरे प्रदेश में पात्र हितग्राही दर दर भटकने मजबूर हैं।

विद्युत समस्याओं को लेकर कांग्रेस ने किया न प भिभौरी में विद्युत कार्यालय का घेराव

बेमेतरा/मूक पत्रिका

विधानसभा के नगर पंचायत भिभौरी में कांग्रेस कमेटी के द्वारा छत्तीसगढ़ विद्युत मंडल कार्यालय का घेराव किया गया एवं रैली निकालकर प्रदर्शन किया गया जिसमें जिला कांग्रेस कमेटी अध्यक्ष आशीष छावड़ा ने भी शिरकत की इस दौरान आम जनता तथा कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुए पूर्व विधायक एवं जिला कांग्रेस कमेटी अध्यक्ष आशीष छाबड़ा ने कहा कि भाजपा की सरकार को छत्तीसगढ़ में सत्ता संभाले हुए 2 वर्ष भी नहीं हुए हैं और इन दो वर्षों में भाजपा ने राज्य की जनता को चार बार विद्युत टैरिफ बढ़ाने की सौगात दी है और तो और नगर पंचायत भिभौरी बेरला तथा ग्रामीण अंचलों में चार-चार ,छह छह घंटे की विद्युत कटौती की जा रही है तथा घर के विद्युत बिलों में अनाप-शनाप बिलिंग की शिकायतें क्षेत्र से लगातार प्राप्त हो रही है राज्य की भाजपा सरकार किसानों को ना तो खाद दे पा रही है और ना ही बिजली भाजपा का काम केवल लूटने का है और पूरी बीजेपी पार्टी उसे काम में एक जुटता के साथ लगी हुई है यही कारण है कि आज बेमेतरा के भाजपा जनप्रतिनिधियों को बेमेतरा विधानसभा क्षेत्र के न प भिभौरी में हो रही विद्युत कटौती तथा अनाप-शनाप बिजली बिल की शिकायतें नहीं दिख रही हैं पूर्व विधायक आशीष छाबड़ा ने विद्युत मंडल तथा शासन प्रशासन को आगाह करते हुए कहा कि अगर व्यवस्थाएं नहीं सुधरी तो कांग्रेस चुप नहीं बैठेगी इससे भी बड़ा प्रदर्शन और कार्यवाही करेगी जिसके लिए विभाग और प्रशासन जिम्मेवार होगा इस दौरान बेरला ब्लॉक कांग्रेस कमेटी अध्यक्ष रामेश्वर देवांगन तथा जनपद अध्यक्ष प्रतिनिधि रवि परगनिया जिला कांग्रेस कमेटी महामंत्री ललित विश्वकर्मा शुभम वर्मा नवाज खान चन्द्र विजय धीवर नेतराम निषाद निहाल परगनिया रवि साहू निलेश वर्मा नरेंद्र धीवर प्रकाश यादव मोहित धीवर बुद्धदेव नेवल वीणा साहू विक्की साहू राजेंद्र वर्मा तुलाराम धीवर मोतीलाल साहू दुर्गेश साहू टीकम वर्मा किशन साहू भूषण साहू रास बिहारी कुर्रे भारत भूषण साहू सुमित राजपूत प्रवीण शर्मा जयंत जांगड़े बबली सोनवानी किशन साहू कृष्णा चतुर्वेदी दिगंबर परगनिया लोकनाथ यादव रमेश पाटिल सहित बड़ी संख्या में कांग्रेस कार्यकर्ता एवं नगर वासी उपस्थित रहे।

स्कूलों एवं आंगनबाड़ी केन्द्रों के आसपास स्थित तालाबों, नालों एवं अन्य जल स्रोतों के पास सूचना बोर्ड लगाने एवं आवश्यक सुरक्षा व्यवस्था करने के निर्देश

कलेक्टर जन्मेजय महोबे ने ली साप्ताहिक समय सीमा की बैठक, निर्माण कार्यों की गुणवत्ता से समझौता नहीं, लापरवाह ठेकेदारों पर करें कार्रवाई

सड़कों से आवारा मवेशियों को हटाने के संबंध में सीईओ, सीएमओ को दिए आवश्यक दिशा-निर्देश

विद्युत समस्याओं का करें त्वरित निराकरण, विद्युत संबंधी समस्याओं के निराकरण के लिए शिविर लगाने के दिए निर्देश

खाद-बीज भंडराण एवं वितरण की ली जानकारी, शतप्रतिशत किसानों का एग्रीस्टैक में पंजीयन कराने के दिए निर्देश

जांजगीर-चांपा /मूक पत्रिका

कलेक्टर जन्मेजय महोबे ने बीते सोमवार को जिला कार्यालय सभाकक्ष में साप्ताहिक समय सीमा की बैठक ली। कलेक्टर ने विभागीय कार्यों की समीक्षा करते हुए कहा कि समय-सीमा में कार्यों को प्राथमिकता से पूर्ण किया जाए। उन्होंने कहा कि जनहित से जुड़ी योजनाओं के क्रियान्वयन में किसी भी प्रकार की लापरवाही बर्दाश्त नहीं की जाएगी। इसके साथ ही उन्होंने जिले में चल रहे निर्माण कार्यों की समीक्षा करते हुए स्पष्ट निर्देश दिए कि निर्माण कार्यों में लापरवाही बरतने वाले ठेकेदारों पर कड़ी कार्यवाही की जाए। जिले में निर्माण कार्यों की गुणवत्ता से किसी भी तरह का कोई समझौता नहीं किया जाएगा। कलेक्टर ने अधिकारियों को निर्देशित किया कि हाईकोर्ट एवं अन्य न्यायालयों में प्रकरणों का समय पर एवं गंभीरता से निराकरण किया जाए। कलेक्टर महोबे ने कहा कि यदि स्कूल या आंगनबाड़ी तक जाने वाले रास्तों में कोई तालाब, नाला या जलभराव क्षेत्र स्थित हो, तो ग्रामवार चिन्हांकन कर ऐसे स्थलों की जानकारी संकलित कर चेतावनी बोर्ड लगाएं व दीवार लेखन द्वारा जनजागरूकता फैलाएं, ताकि किसी भी घटना की आशंका को रोका जा सके। इसके लिए मुनादी कर ग्रामीणों एवं परिजनों को जागरूक करने के निर्देश दिए। साथ ही मनरेगा अंतर्गत निर्मित तालाबों एवं गहरीकरण कार्यों के पूर्ण होने के उपरांत उन्हें सुरक्षित रूप से निस्तारी उपयोग में लाने, जलभराव की स्थिति में खतरे के चिन्ह लगाने एवं अन्य सुरक्षा उपाय किए जाएं। कलेक्टर ने स्कूलों व आंगनबाड़ी भवन परिसर में बारिश के कारण पानी भरने या आवागमन में बाधा की शिकायत प्राप्त होने पर वहां शीघ्र जल निकासी की व्यवस्था सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। साथ ही उन्होंने कहा कि परिसर में नियमित साफ-सफाई तथा स्वच्छ पेयजल की व्यवस्था अनिवार्य रूप से की जाए। कलेक्टर महोबे ने स्कूल निरीक्षण के दौरान अधिकारियों को बच्चों की उपस्थिति, भवन की स्थिति, गणवेश एवं पाठ्य-पुस्तक वितरण, छात्रवृत्ति योजनाओं की स्थिति की वस्तुस्थिति को देखने के निर्देश दिए। कलेक्टर महोबे ने कहा कि सभी कार्यालयों में फाइलों का मूवमेंट ई-फाइल के माध्यम से ही किया जाना है। उन्होंने ई-ऑफिस की क्रियान्वयन के संबंध में सभी विभागों को निर्देशित कर कहा कि ई-ऑफिस से जुड़ी समस्याओं का तत्काल समाधान किया जाए। कलेक्टर ने अधिकारियों को निर्देश दिए कि विद्युत आपूर्ति से संबंधित समस्याओं का निराकरण प्राथमिकता पर किया जाए। इसके साथ ही आमजनों की विद्युत से संबंधित समस्याओं के लिए शिविर लगाकर निराकरण करने के निर्देश विद्युत विभाग के अधिकारियों को दिए। उन्होंने दिव्यांगता जांच शिविर लगाने के निर्देश समाज कल्याण विभाग एवं स्वास्थ्य विभाग सहित अन्य विभाग के समन्वय से आयोजित करने के निर्देश दिए। कलेक्टर ने खाद-बीज के भंडारण और किसानों को किए जा रहे वितरण की जानकारी ली। उन्होंने कहा कि सभी सोसायटी में पर्याप्त मात्रा में खाद का भंडारण रखें और किसानों की मांग पर वितरण किया जाए। उन्होंने अधिकारियों को निर्देशित किया कि किसानों को अनावश्यक खाद-बीज के लिए दिक्कत नहीं होना चाहिए। इसके साथ ही उन्होंने एग्रीस्टैक में शत प्रतिशत किसानों का अनिवार्य रूप से पंजीयन कराने के निर्देश दिए। कलेक्टर ने बैठक में नगरीय क्षेत्रों एवं ग्रामीण क्षेत्रों, सड़कों से आवारा मवेशियों को तत्काल सड़को से हटाने की कार्रवाई करने के निर्देश दिए। कलेक्टर ने पशु चिकित्सा विभाग, सीईओ जनपद, सीएमओ, सहित संबंधित विभागों को समन्वय से कार्य करने के निर्देश दिए। उन्होंने आवारा मवेशियों के सड़क पर बैठने वाले चिन्हित स्थलों की पहचान कर वहां से हटाने और गौशाला व कांजी हाऊस पहुंचाने की समुचित व्यवस्था करने के निर्देश दिए। इसके साथ ही मवेशियों के मालिकों को पशु सौंपने और निर्धारित जुर्माना लगाने के निर्देश दिए हैं। कलेक्टर ने पशु चिकित्सा विभाग को रात्रिकालीन दुर्घटनाओं की रोकथाम के लिए मवेशियों को रेडियम बेल्ट बांधने की कार्रवाई करने के निर्देश दिए। इसके साथ ही उन्होंने फसल चक्र, फॉर्मर रजिस्ट्रेशन, स्वामित्व योजना, अनुकम्पा नियुक्ति, मौसमी बीमारी सहित विभिन्न योजनाओं की समीक्षा करते हुए आवश्यक निर्देश दिए। बैठक में जिला पंचायत सीईओ गोकुल रावटे, अपर कलेक्टर ज्ञानेन्द्र सिंह ठाकुर, अपर कलेक्टर आर के तंबोली, अपर कलेक्टर श्रीमती आराध्या राहुल कुमार, सर्व एसडीएम सहित विभागीय अधिकारी-कर्मचारी उपस्थित थे।

ग्रामीणों ने नलवा स्टील एण्ड पॉवर लिमिटेड के लोक सुनवाई व उक्त परियोजन को निरस्त करने विधायक को सौंपा ज्ञापन

आप चिंता न करें, आपका विधायक हमेशा आपके साथ हैं-अनुज

धरसींवा /मूक पत्रिका

विधानसभा के खरोरा तहसील के ग्राम आलेसुर, पचरी, छडिया, मंधईपुर, एवं मोतिमपुर खुर्द क्षेत्र मे मेसर्स नलवा स्टील एण्ड पॉवर लिमिटेड खदान के लोक सुनवाई को निरस्त करवाने कि मांग को लेकर क्षेत्रवसियों ने विधायक निवास पहुँच कर विधायक अनुज शर्मा को ज्ञापन सौंपा7 ग्रामीणों ने विधायक के समझ अपनी समस्याओं को बताते हुए कहा कि मेसर्स नलवा स्टील एण्ड पॉवर लिमिटेड के खदान से आसपास कि हमारी 6 गाँवों प्रभावित होगी,निकटतम बस्ती जिसमे गांव पचरी उत्तर पश्चिम दिशा में 90 मीटर ग्राम छडिया पश्चिम दिशा मे 140 मीटर ग्राम मंधईपुर उत्तर दिशा मे 170 मीटर ग्राम नहरडीह 400 मीटर ग्राम मोतिमपुर दक्षीण दिशा 230 मीटर ग्राम आलेसुर उत्तर दिशा पुर्व दिशा 350 मीटर है इससे स्पष्ट है कि प्रस्तावित खनन क्षेत्र की दुरी जनजीवन से मात्र 90 से 400 मीटर में है सभी दीशाओं को इससे होने वाले ध्वनी प्रदुषण और ब्लास्टिंग के कारण विस्फोट के इस्तेमाल से चटटानो में होने वाले कंपन की मात्रा से पुरे गांव के घरो की नीव टुट जाएगी एवं सभी गांवो के मकानो की नींव बनाने मे भुकंप रोधी विधि का उपयोग नही हुआ है।प्रस्तावित खनन दो शिफ्ट में किया जायेगा अर्थात खनन और भारी वाहन का परिवहन ट्रक इत्यादी मध्य रात्रि के उपरांत भी चलेगा ग्रामीणजनों की दिनचर्या पूरी तरह ध्वस्त हो जाएगी ,इस खदान के आसपास स्थित स्कूलों के सामने से खनिज के परिवहन हेतु भारी वाहनों के लगातार आवागमन से अपने बच्चों की भविष्य एवं जीवन की चिंता सताने लगी है इन सभी समयस्यों को देखते हुए हमारी मांग हैं कि ये नलवा खदान की लोक सुनवाई को निरस्त की जाए। विधायक पद्मश्री अनुज शर्मा ने ग्रामीणों कि समयस्यों को सुनते हुए कहा कि आप सभी क्षेत्रवासियों को परेशान होने कि जरूरत नही हैं मैं हमेशा आप सभी के साथ हू हम सब मिल कर अपने गांवों को बचाने कि जंग को लड़ेंगे। यदि आप सभी ने ठाना है की वहा खदान शुरू न किया जाए तो उसे शुरू नहीं होने दिया जाएगा। जैसे मैंने विधानसभा के मानसून सत्र में ध्यानाकर्षण के माध्यम से आपकी समस्याओं और माँगो को शासन तक पहुचाया और सहानुभूतिपूर्वक विचार करने का आग्रह किया है। मैं मुख्यमंत्री व जिला प्रशासन को पत्र लिख कर आपकी समयस्यों को उनके समक्ष रख कर लोक सुनवाई को निरस्त करने का आग्रह करूँगा।

बस्तर पुलिस की बड़ी कार्यवाही, 51 किलो गांजा के साथ युवक गिरफ्तार

जगदलपुर/मूक पत्रिका

बस्तर जिले की पुलिस ने मादक पदार्थों की तस्करी के विरुद्ध एक और बड़ी सफलता अर्जित की है। थाना लोहंडीगुड़ा पुलिस ने गुप्त सूचना के आधार पर ग्राम तारागांव में एक युवक को 51 किलो 520 ग्राम अवैध गांजा के साथ गिरफ्तार किया है, जिसकी बाजार कीमत लगभग ?2,57,600/- आंकी गई है।

गिरफ्तार आरोपी की पहचान: राजेश उर्फ राजेश्वर यादव, पिता स्व. सुखराम यादव, उम्र 24 वर्ष, जाति राउत, निवासी तिकीरपाल बेकोपारा, थाना पुसपाल, जिला सुकमा (छ.ग.) के रूप में हुई है।

कार्यवाही का विवरण: थाना लोहंडीगुड़ा पुलिस को सूचना मिली थी कि एक व्यक्ति, लाल कत्था रंग की शर्ट और क्रीम रंग की पैंट पहनकर एक नीले रंग की पुरानी कार (छ्त्र 05 स्न 0703) से अवैध गांजा लेकर मलकानगिरी (उड़ीसा) से रायपुर की ओर जा रहा है। पुलिस अधीक्षक शलभ कुमार सिन्हा के निर्देश पर, अति. पुलिस अधीक्षक माहेश्वर नाग और एसडीओपी ईश्वर त्रिवेदी के पर्यवेक्षण में थाना प्रभारी रवि कुमार बैगा के नेतृत्व में टीम गठित कर तत्काल कार्यवाही की गई। टीम ने ग्राम तारागांव नरो दुकान के सामने मेन रोड पर संदिग्ध वाहन की पहचान की और तलाशी लेने पर उसमें दो प्लास्टिक बोरी में पैक 6 पैकेट गांजा मिला। पूछताछ में आरोपी ने गांजा परिवहन की बात कबूल की लेकिन वैध दस्तावेज प्रस्तुत नहीं कर सका।

कानूनी कार्यवाही: आरोपी के खिलाफ एनडीपीएस एक्ट की धारा 20(ख) के तहत मामला दर्ज कर उसे न्यायिक रिमांड पर भेज दिया गया है।

कार्रवाई में शामिल अधिकारीगण: निरीक्षक रवि कुमार बैगासउनि. वी.एस. सोलंकीप्र. आर. तुलाराम कश्यप (1023)आरक्षक ओंकार राज (658), डबल सिंह ठाकुर (640)आर. चालक सुलधर बघेल (4095)

बस्तर पुलिस की प्रतिबद्धता: पुलिस अधीक्षक शलभ कुमार सिन्हा ने कहा कि बस्तर पुलिस मादक पदार्थों की तस्करी पर रोक लगाने के लिए सतत अभियान चला रही है और आगे भी यह कार्रवाई जारी रहेगी।

कांग्रेसी पार्षद पर बलात्कार का मामला दर्ज, पुलिस जांच में जुटी

कांकेर/मूक पत्रिका

उदय नगर के कांग्रेस पार्षद त्रिलोक सिंह ठाकुर के खिलाफ एक विधवा महिला ने शादी का झांसा देकर दुष्कर्म का गंभीर आरोप लगाया है। पुलिस ने रविवार को महिला की शिकायत पर पार्षद के विरुद्ध दुष्कर्म का अपराध पंजीबद्ध कर लिया है। इस सनसनीखेज मामले के सामने आने के बाद शहर में राजनीतिक और सामाजिक हलकों में हलचल मच गई है। प्राप्त जानकारी के अनुसार, वर्ष 2025 के स्थानीय निकाय चुनाव के दौरान कांग्रेस पार्षद प्रत्याशी त्रिलोक सिंह ठाकुर और उसी वार्ड की विधवा महिला के बीच संपर्क बढ़ा। प्रचार-प्रसार के दौरान दोनों के बीच करीबी रिश्ते बने और पार्षद ने चुनाव जीतने के बाद शादी का वादा किया। महिला का आरोप है कि वादे के बाद शारीरिक संबंध भी बनाए गए। पार्षद चुनाव जीतने के बाद महिला को अनदेखा करने लगा और फिर बात करना ही बंद कर दिया। इस बीच महिला को जानकारी मिली कि त्रिलोक सिंह ठाकुर की शादी कहीं और तय हो गई है। जब महिला ने दबाव डाला, तो पार्षद ने उसे दो माह बाद विवाह का आश्वासन देकर शिकायत वापस लेने के लिए राजी कर लिया। लेकिन, इसके बाद भी जब स्थिति नहीं बदली, तो महिला ने अंततः 20 जुलाई को कांकेर कोतवाली में दुष्कर्म की रिपोर्ट दर्ज करवाई।कोतवाली थाना प्रभारी ने बताया, कि महिला की शिकायत पर त्रिलोक सिंह ठाकुर के विरुद्ध भारतीय दंड संहिता की धारा के अंतर्गत दुष्कर्म का प्रकरण दर्ज किया गया है। मामले की जांच की जा रही है, और आरोपी की तलाश जारी है। यह मामला सामने आने के बाद कांग्रेस पार्टी की स्थानीय इकाई भी असहज स्थिति में नजर आ रही है। हालांकि पार्टी की ओर से अब तक कोई आधिकारिक प्रतिक्रिया नहीं दी गई है।

अंतरराष्ट्रीय रियल मीडिया फाउंडेशन के तत्वाधान में वर्ल्ड प्रेस फ्रीडम डे पर सम्मानित हुए राजेन्द्र सक्सेना

छत्तीसगढ़ राज्य के दूरस्थ अंचल दंतेवाड़ा के पत्रकार हैं राजेन्द्र सक्सेना

विदेशी यूनिवर्सिटी एसआईएस ने बैलाडीला के पत्रकार राजेन्द्र सक्सेना को किया सम्मानित

किरंदुल /मूक पत्रिका

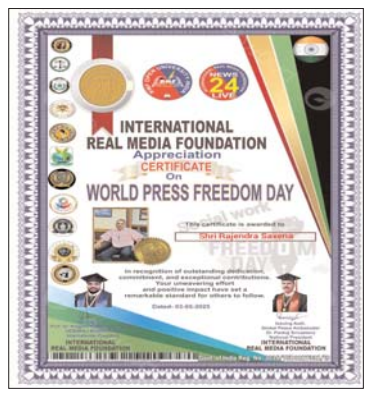

अंतरराष्ट्रीय रियल मीडिया फाउंडेशन के तत्वाधान में ग्लोबल एकेडमी ऑफ डिजिटल मीडिया मेस कम्युनिकेशन जॉर्नलिसम इंटेलिजेंस इन्वेस्टिगेशन रिसर्च एंड ट्रेनिंग अफ्फिलेटेड की विदेशी यूनिवर्सिटी एस आई एस यूनिवर्सिटी के द्वारा छत्तीसगढ़ राज्य के दूरस्थ अंचल में स्थित दंतेवाड़ा जिले के बैलाडीला के पत्रकार राजेन्द्र सक्सेना को वर्ल्ड प्रेस फ्रीडम डे के अवसर पर यूनिवर्सिटी शील्ड अवार्ड 2025 के तहत वर्ल्ड प्रेस फ्रीडम डे पत्रकार सम्मान से सम्मानित किया गया । दंतेवाड़ा जिले के पत्रकार राजेन्द्र सक्सेना को वर्ल्ड प्रेस फ्रीडम डे पर पत्रकार सम्मान इंटरनेशनल रियल मीडिया फाउंडेशन के ग्लोबल पीस एम्बेसडर और इंटरनेशनल रियल मीडिया फाउंडेशन के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ पंकज श्रीवास्तव एवं इंटरनेशनल रियल मीडिया फाउंडेशन के इंटरनेशनल अध्यक्ष प्रोफेसर डॉ देशराज विक्रांत की अनुशंसा पर छत्तीसगढ़ राज्य के दंतेवाड़ा जिले के वरिष्ठ पत्रकार राजेन्द्र सक्सेना को उनके द्वारा कई वर्षो से पत्रकारिता के क्षेत्र में किये जा रहे योगदान को देखते हुए वर्ल्ड प्रेस फ्रीडम डे पर पत्रकार सम्मान से नवाजा गया ।

एनआरएलएम योजना से मिली उड़ान

ग्राम भालापुर की कुलेश्वरी मछली पालन कर सालाना कमा रही 03 लाख रुपए

मुंगेली /मूक पत्रिका

स्वसहायता समूह को ऋण प्रदान कर उनकी आजीविका संवर्धन सुनिश्चित करने की शासन की महत्वपूर्ण एनआरएलएम योजना का लाभ गांव,गरीब वंचित महिलाओं को मिल रहा है। इसकी एक बानगी जिले के मुंगेली विकासखंड के ग्राम भालापुर में देखने को मिली। मां शीतला स्व सहायता समूह से जुड़ी कुलेश्वरी साहू पहले खेती, किसानी एवं मजदूरी करती थी। परिवार की आय कम होने के कारण घर चलाना काफी मुश्किल हो रहा था। गांव में उन्हें शासन के महत्वपूर्ण एनआरएलएम योजना की जानकारी मिली और मां शीतला स्व सहायता समूह से जुड़कर उन्होंने शासन की मदद से 03 लाख का ऋण लिया और अपने निजी डबरी में मछली पालन का काम शुरू किया और महज एक साल में उन्होंने 06 लाख रुपए का मछली बेचकर 03 लाख रुपए का लाभ कमाया। उन्होंने इस मदद के लिए खुशी जाहिर करते हुए शासन-प्रशासन का धन्यवाद एवं आभार जताया। उन्होंने कहा कि एनआरएलएम योजना गांव, गरीब महिलाओं को रोजगार से जोड़ने, उन्हें आर्थिक संबल प्रदान कर सशक्त बनाने की दिशा में महत्वपूर्ण योजना है। निश्चित रूप से इस योजना से गांव में आजीविका संवर्धन के साथ-साथ महिलाओं के लिए सशक्तिकरण का द्वार खुलेगा और गांव की तस्वीर बदलेगी।

आंगनबाड़ी कार्यकर्ता- सहायिकाओं की भर्ती हेतु आवेदन 04 अगस्त तक

मुंगेली /मूक पत्रिका

पथरिया विकासखण्ड अंतर्गत संचालित विभिन्न आंगनबाड़ी केन्द्रों में रिक्त कार्यकर्ता-सहायिकाओं के पदों पर भर्ती हेतु 04 अगस्त तक पंजीकृत डाक के माध्यम से आवेदन मंगाए गए हैं। परियोजना अधिकारी पथरिया ने बताया कि आंगनबाड़ी केन्द्र, सिलतरा केन्द्र क्रमांक 03 में कार्यकर्ता व सहायिका पद के लिए और गोइन्द्रा केन्द्र क्रमांक 04 में सहायिका के पद पर भर्ती की जाएगी। अधिक जानकारी के लिए बाल विकास परियोजना कार्यालय पथरिया का अवलोकन किया जा सकता है।

विभिन्न कोर्सो में प्रशिक्षित युवाओं के मध्य जिला स्तरीय कौशल तिहार प्रतियोगिता 23 जुलाई को

मुंगेली । युवाओं को तकनीकी कौशल के प्रदर्शन का अवसर प्रदान कर उनमें आत्मविश्वास और प्रतिस्पर्धात्मक भावना का विकास करने, इंडिया स्कील 2025 एवं वर्ल्ड स्कील 2026 के लिए संभावित प्रतिभाओं की पहचान व चयन करने के लिए जिला स्तरीय कौशल तिहार प्रतियोगिता 23 जुलाई को प्रातः 10 बजे से जिला परियोजना लाईवलीहुड कालेज जमकोर में आयोजित की जाएगी। इस प्रतियोगिता में प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना के तहत जिले में पिछले तीन वर्षों में प्रशिक्षित एवं प्रशिक्षणरत युवा जनरल ड्यूटी असिस्टेंट, असिस्टेंट इलेक्ट्रीशियन, ऑटोमोटिव सर्विस टेक्नीशियन, टैक्सी ड्राइवर, एरियल फाइबर लाइनमैन इत्यादि ट्रेडों में अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन करेंगे। प्रतिभागी इच्छुक युवा जिला परियोजना कार्यालय, जमकोर, मुंगेली में स्वयं उपस्थित होकर या फिर https://cssda.cg.nic.in/global/KaushalTiharEntryForm.asp के माध्यम से 22 जुलाई तक ऑनलाइन आवेदन कर सकते हैं।

लगातार मिल रही स्वीकृतियों से बदल रही आरंग विधानसभा की तस्वीर

- गुरु खुशवंत साहेब के अथक प्रयासों से आरंग को मिली एक और बड़ी सौगात,फरफौद - गुखेरा मार्ग के चौड़ीकरण व मजबूतीकरण के लिए 11 करोड़ 48 लाख 69 हजार रुपये की प्रशासकीय स्वीकृति जारी,पुल-पुलिया निर्माण कार्य से ग्रामीणों को मिलेगा राहत और आवागमन में सुविधा

आरंग/नया रायपुर/रायपुर/मूक पत्रिका

छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय, उपमुख्यमंत्री व लोक निर्माण मंत्री अरुण साव एवं वित्त मंत्री ओपी चौधरी के नेतृत्व में राज्य में विकास की बयार तेज़ी से बह रही है। इसी क्रम में आरंग विधानसभा क्षेत्र को एक और बड़ी सौगात प्राप्त हुई है। लोक निर्माण विभाग, मंत्रालय (नया रायपुर) द्वारा जारी आदेशानुसार, फरफौद - गुखेरा मार्ग के सड़क चौड़ीकरण, मजबूतीकरण एवं पुल-पुलिया निर्माण कार्य हेतु ?11 करोड़ 48 लाख 69 हजार की प्रशासकीय स्वीकृति दी गई है। यह स्वीकृति वर्ष 2024-25 के बजट में शामिल कार्यों के अंतर्गत लोक निर्माण विभाग, रायपुर संभाग द्वारा प्राप्त हुई है। इस मार्ग की लंबाई 5.50 किलोमीटर होगी। इस स्वीकृति को लेकर गुरु साहेब जी ने कहा कि हर गांव को मजबूत सड़कों से जोड़ना भारत रत्न अटल बिहारी वाजपेयी का सपना था, जिसे भाजपा सरकार मूर्त रूप दे रही है। यह स्वीकृति न केवल मेरी जनता की जीत है, बल्कि हमारी सरकार की दूरदर्शिता और विकास के प्रति प्रतिबद्धता का प्रमाण है। मैं मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय, उप मुख्यमंत्री अरुण साव तथा वित्त मंत्री ओपी चौधरी के प्रति हृदय से आभार प्रकट करता हूं। गुरु साहेब ने आगे कहा कि ङ्कइन मार्गो के सुधारीकरण से कृषि, परिवहन, रोजगार और स्वास्थ्य जैसी मूलभूत ज़रूरतों में व्यापक सुधार होगा। आवागमन आसान होगा और ग्रामीण अर्थव्यवस्था को सीधा लाभ मिलेगा। जानकारी देते हुए गुरु खुशवंत साहेब(अजा प्राधिकरण) के पीए सबेरा शर्मा ने बताया कि ङ्क इन कार्यों की निविदा प्रक्रिया शीघ्र प्रारंभ की जाएगी और समयबद्ध निर्माण कार्य सुनिश्चित किया जाएगा, ताकि जनता को जल्द से जल्द इसका प्रत्यक्ष लाभ मिल सके।÷

हर दिन एक नई सौगात ङ्क यह है गुरु खुशवंत साहेब जी की प्रतिबद्धता का परिणाम!

विश्व आदिवासी दिवस की तैयारियों में आदिवासी समाज, हर्षोल्लास पूर्वक मनाने बैठकों का दौर जारी

बीजापुर/मूक पत्रिका

बीजापुर स्थित गोंडवाना भवन में रविवार को विश्व आदिवासी दिवस को हर्षोल्लास पूर्वक मनाए जाने को लेकर एक महत्वपूर्ण बैठक संपन्न हुई। सर्व आदिवासी समाज के जिलाध्यक्ष जग्गूराम तेलामी की अध्यक्षता में हुई इस बैठक में सभी समाज प्रमुखों ने अपनी मौजूदगी दर्ज कराई। बैठक में पिछले वर्ष के विश्व आदिवासी दिवस कार्यक्रम की विस्तृत समीक्षा की गई। तत्कालीन आयोजन समिति ने बीते वर्ष के कार्यक्रम से जुड़े व्यय का पूरा ब्यौरा भी समाज प्रमुखों के समक्ष प्रस्तुत किया।

रक्षाबंधन के चलते कार्यक्रम में आंशिक बदलाव संभव –समाज प्रमुखों ने बताया कि इस साल रक्षाबंधन का त्यौहार होने के कारण आम सभा के कार्यक्रम में आंशिक बदलाव किए जाने की चर्चा हुई। हालांकि, आम रैली और सामूहिक नृत्य जैसे पारंपरिक कार्यक्रम पहले की तरह ही आयोजित करने पर सर्वसम्मति बनी है। यह निर्णय आदिवासी समुदाय की सांस्कृतिक पहचान को बनाए रखने और पर्व को भव्यता से मनाने की प्रतिबद्धता को दर्शाता है।

24 जुलाई को होगा नई आयोजन समिति का गठन – समाज प्रमुखों ने जानकारी दी कि आगामी 24 जुलाई को दोपहर 2:30 बजे विश्व आदिवासी दिवस आयोजन समिति 2025 के गठन को लेकर एक और महत्वपूर्ण बैठक आयोजित की जाएगी। इस बैठक में अगले वर्ष के आयोजन की रूपरेखा भी तय की जाएगी।

बैठक में इनकी रही उपस्थिति –इस महत्वपूर्ण बैठक में विभिन्न समाजों के प्रमुखों ने हिस्सा लिया, जिनमें हल्बा समाज के बीआर साहनी, मुरिया समाज के तेलम पाण्डुराम, उरांव समाज के पीआर भगत, कंवर समाज के कमलेश पैंकरा, गोंडवाना समन्वय समिति के अमित कोरसा, गोंड समाज के कामेश्वर दूब्बा, कुडुक उरांव समाज के जूलियस तिर्की सहित बीएल पुजारी, पाकलू तेलाम, सतीश मंडावी और अन्य समाज प्रमुख शामिल थे।

भूपेश के बेटे कांग्रेस के कौन से पद पर है जो कांग्रेस प्रदर्शन कर रही है-चैतराम अटामी

पुत्र मोह में भूपेश ने पूरी कांग्रेस को झोंका- चैतराम अटामी

भ्रष्टाचारियों को बचाने प्रदेश की जनता को परेशान किया जा रहा है इसे कहते है चोरी ऊपर से सीना जोरी-चैतराम अटामी

जारी किए,कोयला आबंटन और पेड़ों की कटाई के भूपेश बघेल सरकार के कई दस्तावेज-संतोष गुप्ता

भूपेश बघेल झूठ की फैक्ट्री, कोयला आबंटन के लिए कई पत्र लिखे-संतोष गुप्ता

दंतेवाड़ा/मूक पत्रिका

विधायक दंतेवाड़ा चैतराम अटामी ने कहा कि कांग्रेस बताएं कि भूपेश बघेल के बेटे चैतन्य बघेल कांग्रेस के किस पद पर है जिस व्यक्ति का कांग्रेस में कोई पद नहीं उसे व्यक्ति के लिए पूरी कांग्रेस प्रदेश में प्रदर्शन कर रही है इसका साफ मतलब है भूपेश बघेल ने पूरी कांग्रेस को पुत्र मुंह में झोंक दिया है। अटामी ने कहा हमने पहले भी बड़े-बड़े ऐसे उदाहरण देखें हैं जिसमें लोगों ने पुत्र मोह में खुद को भी बर्बाद किया और अपने पूरे साम्राज्य को भी बर्बाद किया भूपेश बघेल इस दिशा में काम करते हुए दिखाई दे रहे हैं। भूपेश बघेल और कांग्रेस भ्रष्टाचारियों को बचाने पूरे प्रदेश की जनता को परेशान कर रही है और साथ ही उनका आर्थिक रूप से नुकसान भी करने जा रही है जो की प्रदेश की जनता स्वीकार नहीं करेगी। भाजपा जिलाध्यक्ष दंतेवाड़ा संतोष गुप्ता ने कहा की कोल ब्लॉक आवंटन को लेकर कांग्रेस पार्टी और भूपेश बघेल के झूठ का पर्दापाश हो गया है। उन्होंने कहा कि कांग्रेस चोरी और सीनाजोरी का उदाहरण बार-बार प्रस्तुत कर रही है। आप सबको पता होगा कि अपने शासनकाल के पाँच वर्ष में भूपेश बघेल ने छत्तीसगढ़ को दस जनपथ का चारागाह बना दिया था। गुप्ता ने कहा कि शराब घोटाले, कोयला घोटाले, चावल घोटाले, गोठान घोटाले से लेकर पीएससी घोटाले तक में इसने प्रदेश के संसाधनों को जम कर लूटा था, आज इन घोटालों के आरोपी एक एक कर नप रहे हैं। सभी जेल जा रहे हैं। गुप्ता ने कहा कि बेवजह जिस तरह अपराधियों के विरुद्ध हो रही कानून सम्मत कार्रवाई को कहीं और मोड़ा जा रहा है, वह दुर्भाग्यजनक और कांग्रेस में हिप्पोक्रेसी का सबसे बड़ा नमूना है। गुप्ता ने कहा कि जब भी आप सभी कॉल ब्लॉक आवंटन और पेड़ कटाई आदि पर सवाल उठाते थे, तो दस जनपथ के दबाव में सीधे तौर पर भूपेश बघेलजी बचाव में आ जाते थे। कहते थे कि कोल ब्लॉक आवंटन का विरोध करने वाले अपने-अपने घरों की बिजली बंद कर दें। सवाल यह है कि अब जब झूठे और बेबुनियाद आरोप लगा कर भूपेशजी अपनी कालिख धोने की कोशिश कर रहे हैं, तो क्या वह अपने घर और राजीव भवन की बिजली बंद करेंगे? गुप्ता ने कहा कि यह तथ्य है कि न केवल भूपेश बघेल ने कोल ब्लॉक अशोक गहलोत को आवंटित किया था, बल्कि उससे पहले भी मनमोहन सिंह जी की सरकार में तमाम नियमों को धत्ता बताते हुए छत्तीसगढ़ के कोल ब्लॉक आवंटन की राह आसान की थी। उन्होंने कहा कि साल 2010 में केन्द्र में कॉंग्रेस की सरकार थी, तब कोयला मंत्रालय और पर्यावरण एवं वन मंत्रालय द्वारा हसदेव अरण्य को पूरी तरह से नो-गो जोन घोषित किया गया था। उसे कांग्रेस नीत सरकार के पर्यावरण मंत्री जयराम रमेश ने ही सबसे पहले गो एरिया घोषित किया था। भाजपा जिलाध्यक्ष संतोष गुप्ता ने कहा कि 23 जून 2011 को केन्द्र में कांग्रेस की सरकार रहते ही तारा परसा ईस्ट और कांटे बेसन कोल ब्लॉक को खोलने का प्रस्ताव दिया गया। जब छत्तीसगढ़ और राजस्थान में कांग्रेस की सरकार थी, उस वक्त अडानी को दो बड़ी खदानों गारे पेलमा सेक्टर-2 और राजस्थान में केते एक्सटेंशन ब्लॉक का ऑपरेटर बनाया गया। इसी तरह भूपेश बघेलजी के मुख्यमंत्री कार्यकाल में ही 16 अक्टूबर 2019 को राज्य सरकार ने पर्यावरण स्वीकृति के लिए सिफारिश भेजी। गुप्ता ने कहा कि 31 मार्च 2021 को ओपन कास्ट गारे पेलमा सेक्टर-2, मांड-रायगढ़ कोलफील्ड के लिए हुआ समझौता भी सबके सामने है। इसी क्रम में 19 अप्रैल 2022 को भूपेश बघेल जी के मुख्यमंत्री रहते ही कांग्रेस सरकार द्वारा वन स्वीकृति स्टेज-1 और 23 जनवरी 2023 को वन स्वीकृति स्टेज-2 के लिए सिफारिश भेजी गई। गुप्ता ने कहा कि महाजेंको कोल फील्ड की स्वीकृति में तत्कालीन मुख्यमंत्री भूपेश बघेल की संलिप्तता को लेकर तब अनेक अखबारों ने समाचार भी प्रकाशित किए थे। 25 मार्च 2022 को भूपेश सरकार ने राजस्थान में अशोक गहलोत की सरकार के रहते राजस्थान को कोल माइंस का आबंटन किया था। भाजपा जिलाध्यक्ष संतोष गुप्ता ने कांग्रेस से सवाल किया कि क्या वह मनमोहन सिंह सरकार के समय हुए निर्णयों के लिए आज माफ़ी मांगेंगे, क्या भूपेश बघेल यह घोषणा करेंगे कि अब कांग्रेस कभी बिजली का उपयोग नहीं करेगी, क्योंकि स्वयं यह कह चुके हैं कि विरोध करने वाले अपने घर की बिजली बंद कर दें,क्या कांग्रेस हर अपराधी के पक्ष में ऐसे ही खड़ी होगी, जैसे आज पूर्व मुख्यमंत्री के बेटे के लिए हुई है? श्री गुप्ता ने कहा कि जब छत्तीसगढ़ में कांग्रेस की सरकार रही तब राजस्थान के तत्कालीन मंत्री बी डी कल्ला ने भूपेश बघेल को पत्र लिखा और राजस्थान के तत्कालिक मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने एक सप्ताह के भीतर कई पत्र लिखे कोल ब्लॉक आंबटन के लिए। जिसे छत्तीसगढ़ और देश की जनता ने देखा है।

संपादकीय

भारत ने एससीओ में दिखाया पाकिस्तान का असली चेहरा

आतंकवाद अब पूरी दुनिया में शांति और स्थिरता के लिए गंभीर खतरा बन गया है। इसे जड़ से खत्म करने के लिए सामूहिक प्रयास के दावे तो बहुत किए जाते हैं, लेकिन धरातल पर ऐसा कुछ होता नजर नहीं आ रहा है। इसका कारण है कुछ देशों की कथनी और करनी में अंतर, जो कई अवसरों और मंचों पर साफ नजर आता है। इस मामले में भारत की नीति और नीयत पूरी तरह स्पष्ट है कि आतंक को कतई बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। वहीं, पाकिस्तान जैसे मुल्क दोहरे मापदंड अपना कर एक तरफ खुद को आतंकवाद से पीड़ित बताते हैं, दूसरी ओर अपनी जमीन पर आतंकियों की फौज भी तैयार कर रहे हैं।इन तथ्यों का आकलन शंघाई सहयोग संगठन (एससीओ) की हालिया बैठकों में आतंक के मुद्दे पर भारत और पाकिस्तान के रुख से किया जा सकता है। चीन के तियानजिन में बीते मंगलवार को हुई एससीओ के विदेश मंत्रियों की बैठक में विदेश मंत्री एस जयशंकर ने दो टूक कहा कि इस समूह को आतंकवाद से निपटने के अपने स्थापना उद्देश्य पर कायम रहना चाहिए। भारत आतंकवाद के खात्मे के लिए पूरी तरह प्रतिबद्ध है और इस दिशा में सामूहिक प्रयासों को मजबूत करने के लिए नए विचारों और प्रस्तावों पर सकारात्मक रुख अपना रहा है। एससीओ की स्थापना के मूल उद्देश्य में आतंकवाद, अलगाववाद और चरमपंथ से निपटने के मुद्दे भी शामिल थे। हालांकि, इस संगठन में शामिल पाकिस्तान और चीन की दखल से इन मुद्दों को हाशिये पर धकेलने का प्रयास किया जाता रहा है। इसके पीछे नापाक मंसूबे छिपे हुए हैं, जो आतंकियों का वित्त पोषण कर उन्हें हथियार की तरह इस्तेमाल करने से प्रेरित हैं। भारत कई बार अंतरराष्ट्रीय मंचों पर पाकिस्तान के इन खतरनाक इरादों को बेनकाब कर चुका है। हालांकि पाकिस्तान हमेशा इससे इनकार करता आया है।एससीओ सम्मेलन में भी उसने पहलगाम आतंकी हमले में अपनी भूमिका नहीं कबूली। जबकि, कंधार विमान अपहरण से लेकर मुंबई हमले, संसद पर हमला तथा उरी, पठानकोट और पहलगाम हमले में उसका हाथ होने की बात साक्ष्यों के साथ जाहिर हो चुकी है। वैश्विक आतंकवाद वित्त पोषण निगरानी संस्था एफएटीएफ की हालिया रपट में भी इस बात का उल्लेख किया गया है कि पहलगाम आतंकी हमला बिना वित्त पोषण के संभव नहीं था।इससे पहले जून में हुए एससीओ के रक्षा मंत्रियों के सम्मेलन में रक्षामंत्री राजनाथ सिंह ने आतंकवाद के मुद्दे को प्रमुखता से उठाया था। उन्होंने पहलगाम आतंकी हमले का हवाला देते हुए कहा था कि कुछ देश अपनी नीतियों में सीमापार आतंकवाद को एक हथियार की तरह इस्तेमाल कर रहे हैं और आतंकियों को पनाह दे रहे हैं। इसके बाद जब सम्मेलन का संयुक्त घोषणा-पत्र तैयार किया गया, तो उसमें पहलगाम आतंकी हमले का कोई जिक्र नहीं था और भारत ने इसका कड़ा विरोध किया था।इससे पाकिस्तान और चीन के मंसूबों का अंदाजा सहज ही लगाया जा सकता है। अगर ये देश वास्तव में आतंकवाद को खत्म करने की इच्छा रखते हैं, तो संयुक्त घोषणा-पत्र में पहलगाम हमले की निंदा करने से गुरेज क्यों किया गया? दोराय नहीं कि ऐसे दोहरे मापदंड को खत्म करना बेहद जरूरी है और एससीओ जैसे मंच को ऐसी ताकतों की खुलेआम आलोचना करनी चाहिए। अब जरूरी है कि आतंकवाद के वित्त पोषकों और प्रायोजकों को न्याय के कठघरे में लाने के लिए ईमानदारी से प्रयास किए जाएं।

भारत का रूस के साथ व्यापार, खासतौर से तेल आयात, अब अमेरिका और पश्चिमी देशों को बहुत अखरने लगा है। उन?होंने भारत पर तलवार लटका दी है। यह किसी 'अग्निपरीक्षा' से कम नहीं है। भारत पर अपनी ऑयल स?ट्रैटेजी को बदलने का भारी दबाव है। रूस-यूक्रेन युद्ध के चलते भारत का रूसी तेल आयात पश्चिमी देशों के बयानबाजी का केंद्र बना हुआ है। नाटो के महासचिव मार्क रुटे और अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप जैसे नेताओं ने भारत, चीन और ब्राजील को रूस के साथ व्यापार जारी रखने पर सेकेंडरी सैंक?शनंस और भारी टैरिफ की चेतावनी दे दी है। इन धमकियों को रूस पर दबाव डालने की रणनीति का हिस?सा माना जा रहा है ताकि वह शांति वार्ता के लिए गंभीर हो। हालांकि, भारत ने अब तक रूस से अपने तेल आयात में कटौती नहीं की है। अपनी ऊर्जा सुरक्षा और आर्थिक स्थिरता को उसने सर्वोच्च प्राथमिकता पर रखा है।

अमेरिका-यूरोप ने लटका दी है तलवार... रूस के कारण भारत की 'अग्निपरीक्षा'

(अमित शुक्ला)

भारत और रूस के बीच व्यापारिक रिश्ते पश्चिमी देशों को परेशान कर रहे हैं। विशेष रूप से तेल के आयात को लेकर अमेरिका और पश्चिमी देश कुछ ज?यादा ही चिंतित हैं। नाटो के महासचिव ने भारत, चीन और ब्राजील को व्यापार जारी रखने पर प्रतिबंधों की चेतावनी दी है। ट्रंप भी धमकी दे रहे हैं।

भारत का रूस के साथ व्यापार, खासतौर से तेल आयात, अब अमेरिका और पश्चिमी देशों को बहुत अखरने लगा है। उन?होंने भारत पर तलवार लटका दी है। यह किसी 'अग्निपरीक्षा' से कम नहीं है। भारत पर अपनी ऑयल स?ट्रैटेजी को बदलने का भारी दबाव है। रूस-यूक्रेन युद्ध के चलते भारत का रूसी तेल आयात पश्चिमी देशों के बयानबाजी का केंद्र बना हुआ है। नाटो के महासचिव मार्क रुटे और अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप जैसे नेताओं ने भारत, चीन और ब्राजील को रूस के साथ व्यापार जारी रखने पर सेकेंडरी सैंक?शनंस और भारी टैरिफ की चेतावनी दे दी है। इन धमकियों को रूस पर दबाव डालने की रणनीति का हिस?सा माना जा रहा है ताकि वह शांति वार्ता के लिए गंभीर हो। हालांकि, भारत ने अब तक रूस से अपने तेल आयात में कटौती नहीं की है। अपनी ऊर्जा सुरक्षा और आर्थिक स्थिरता को उसने सर्वोच्च प्राथमिकता पर रखा है।

वहीं, इकोनॉमिक थिंक टैंक ग्लोबल ट्रेड रिसर्च इनिशिएटिव का मानना है कि भारत को रूस से तेल खरीदने के अपने फैसले पर अडिग रहना चाहिए। उसे अमेरिका के दबाव को खारिज कर देना चाहिए। जीटीआरआई के संस्थापक अजय श्रीवास्तव के अनुसार, रियायती रूसी कच्चे तेल ने ग?लोबल उथल-पुथल के बावजूद भारत को महंगाई कंट्रोल में रखने और मैक्रोइकॉनोमिक स्थिरता बनाए रखने में भूमिका निभाई है। उनका तर्क है कि बाहरी दबाव में अपनी नीति बदलने से अमेरिकी धमकियां खत्म नहीं होंगी, बल्कि यह केवल और अधिक मांगों को दावत देगा। श्रीवास्तव ने यह भी जोड़ा कि वाशिंगटन के साथ एक व्यापार सौदा भी संरक्षण की गारंटी नहीं देगा। कारण है कि ट्रंप बाद में टारगेट बदल

सकते हैं।

भारत पर लटक रही है तलवार

अमेरिका के साथ चल रहे व्यापार युद्ध और टैरिफ की अनिश्चितताओं के बीच भारत का रूस के साथ व्यापार फिर से पश्चिमी देशों की बातों में छाया हुआ है। ये बातें रूस-यूक्रेन युद्ध को लेकर हो रही हैं। नाटो के सेक्रेटरी जनरल मार्क रूटे ने बुधवार को कहा कि अगर भारत, चीन और ब्राजील जैसे देश रूस के साथ व्यापार करना जारी रखते हैं तो उन्हें सेकेंडरी सैंक्शंस का बहुत बुरा असर झेलना पड़ सकता है। रूटे ने वाशिंगटन में कहा कि रूस के साथ व्यापार करने वाले देशों को राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन को फोन करके कहना चाहिए कि उन्हें शांति वार्ता को लेकर गंभीर होना पड़ेगा। नहीं तो इसका ब्राजील, भारत और चीन पर बहुत बुरा असर पड़ेगा।

कुछ हफ्ते पहले भारत में अमेरिका के एक बिल को लेकर चिंता जताई गई थी। इस बिल में रूस के साथ व्यापार करने वाले देशों पर 500 प्रतिशत तक टैरिफ लगाने का प्रस्ताव है। हाल ही में अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने भी धमकी दी थी कि अगर 50 दिनों के अंदर रूस-यूक्रेन के बीच शांति समझौता नहीं होता है तो रूसी सामान खरीदने वालों पर 100 प्रतिशत की दर से 'कड़े' सेकेंडी टैरिफ लगाए जाएंगे।

पुत?न पर दबाव बनाने की रणनी?ति

इंडस्ट्री के जानकारों और एक्सपर्ट्स का मानना है कि ये सब पुतिन पर दबाव बनाने की रणनीति है। ऐसा इसलिए किया जा रहा है ताकि रूस से आयात करने वाले देशों पर दबाव बनाया जा सके। भारत ने अभी तक रूस से तेल का आयात कम नहीं किया है। भारत का कहना है कि वह सबसे अच्छी कीमत पर तेल खरीदने को तैयार है, बशर्ते कि तेल पर कोई सैंक्शन न लगा हो। अभी रूसी तेल पर सीधे तौर पर कोई सैंक्शन नहीं है। लेकिन, अमेरिका और उसके सहयोगी देशों ने 60 डॉलर प्रति बैरल की कीमत सीमा तय की है। इसके अनुसार, अगर रूसी तेल की कीमत इस स्तर से ऊपर जाती है तो पश्चिमी शिपर्स और इंश्योरेंस कंपनियां रूसी तेल के व्यापार में शामिल नहीं हो सकती हैं। भारत और चीन रूसी तेल के सबसे बड़े आयातक हैं।

भारत सरकार अमेरिकी सांसदों और ट्रंप प्रशासन के साथ बातचीत कर रही है ताकि भारत की ऊर्जा सुरक्षा को लेकर अपनी चिंताएं बता सके। भारत अपनी कच्चे तेल की जरूरतों का लगभग 88 प्रतिशत आयात करता है। रूस लगभग तीन सालों से भारत के तेल आयात का मुख्य स्रोत रहा है। फरवरी 2022 में यूक्रेन पर रूस के आक्रमण के बाद पश्चिमी देशों ने रूसी तेल से किनारा कर लिया। इसके बाद रूस ने इच्छुक खरीदारों को अपने तेल पर छूट देनी शुरू कर दी। भारतीय रिफाइनर ने तुरंत इस मौके का फायदा उठाया। नतीजा ये हुआ कि रूस, जो पहले भारत को तेल की थोड़ी-बहुत सप्लाई करता था, अब भारत के लिए कच्चे तेल का सबसे बड़ा स्रोत बन गया है।

इसने पारंपरिक पश्चिम एशियाई सप?लायर्स को पीछे छोड़ दिया है। समय के साथ छूट में बदलाव आया है। लेकिन, पश्चिमी देशों के दबाव और रूस के तेल व्यापार पर लगे सीमित सैंक्शंस के बावजूद भारत में रूसी तेल का प्रवाह मजबूत बना हुआ है। रूस के साथ बढ़ते तेल व्यापार ने रूस को भारत के सबसे बड़े व्यापारिक भागीदारों की लिस्ट में भी ला दिया है।

अभी इसे कई चुनौतियों से जूझना होगा

(अरविंद रावल)

आंकड़े बताते हैं कि भारत में अमीरों की संख्या बढ़ना भले ही बाजारवाद की दृष्टि से गर्व करने वाली बात हो, पर हकीकत यही है कि हमारे देश की एक बड़ी आबादी आज भी सरकार पर निर्भर है। ऐसे में, स्वाभाविक ही टेस्ला को कई चुनौतियों से जूझना होगा। एलन मस्क निस्संदेह दुनिया के बड़े उद्योगपतियों में शुमार हैं और विश्व भर में उनकी कंपनियों के उत्पाद बिकते हैं। मगर भारत के ऑटो बाजार में उनका उतरना शायद ही फायदेमंद हो सकेगा।असल में, भारतीय बाजार की रीढ़ मध्यमवर्गीय लोग हैं। ये वे लोग हैं, जिनकी सालाना आमदनी पांच लाख रुपये से लेकर 20 लाख रुपये तक है। अधिक कमाने वाले लोग बेशक महंगी गाड़ियों का शौक रखते होंगे, लेकिन अधिकतर लोगों की पसंद सस्ती और टिकाऊ गाड़ियां होती हैं। इसके विपरीत, एलन मस्क की टेस्ला कार अत्याधुनिक तकनीकी से लैस है, जिसके कारण इसकी शुरुआती कीमत 60 लाख रुपये रखी गई है। भारतीय सड़कों पर इतनी महंगी गाड़ियां गिनी-चुनी ही दिखती हैं। फिर, यहां तकनीक को कितने लोग आत्मसात कर पाए हैं? कई तो सिर्फ इसलिए किसी नई तकनीक से तौबा कर लेते हैं, क्योंकि उनको लगता है कि इसमें उनकी अतिरिक्त ऊर्जा खर्च होगी। इसी कारण भारत में सस्ती गाड़ियां ज्यादा बिकती हैं। टाटा ने लखटकिया कार की संकल्पना भी इसी कारण से की थी। बाजार में आमतौर पर पांच से दस लाख तक की गाड़ियां ही ज्यादा दिखती हैं। ऐसे में भला 60-70 लाख रुपये की कितनी गाड़ियां टेस्ला कंपनी बेच सकेगी?एलन मस्क का भारतीय बाजार में अपनी बहुप्रतीक्षित टेस्ला कार बेचने का सपना देश की आर्थिक राजधानी मुंबई में पूरा हुआ है। वह लंबे समय से अपनी इलेक्ट्रिक कार भारतीय बाजार में उतारना चाहते थे, लेकिन ऊंचे सीमा शुल्क के कारण उनकी कार की कीमतें भारत के लिहाज से काफी ज्यादा हो रही थीं, जिसके कारण उनका विचार लगातार टलता गया। चूंकि अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के दूसरे कार्यकाल में वह अमेरिकी प्रशासन का हिस्सा थे, इसलिए उनके लिए राहें शायद आसान हो गईं। फिर भी, यदि उनको भारतीय ऑटो क्षेत्र में नेतृत्व करना है, तो मध्यवर्गीय लोगों की जरूरतों को ध्यान में रखकर कारें बनानी होंगी। हां, जब यहां प्रतिव्यक्ति आय में बढ़ोतरी होगी या लोग इस लायक बन जाएंगे कि महंगी गाड़ियां आसानी से खरीद सकें, तब शायद टेस्ला की इलेक्ट्रिक गाड़ियों की मांग बढ़ जाए। तब तक तो एलन मस्क को भारतीय उपभोक्ताओं की मानसिकता को समझकर ही आगे कदम बढ़ाना चाहिए।

बादल जब उमड़ते हैं, वे जीवन की नई संभावनाएं लेकर आते हैं

(अनन्या मिश्रा)

बादल हमें यह भी सिखाते हैं कि हर घटना का एक उचित समय होता है। इसके लिए धैर्य की आवश्यकता होती है। यह वह धैर्य है जो अध्यात्म की नींव है। 'कालः कर्षति भूतानि', समय ही सबका निर्माता है।

क्या आपने कभी पहली वर्षा की उस गंध को महसूस किया है, जो तपती हुई धरती से उठती है? जैसे वर्षों पुराना कोई वादा पूरा हो गया हो? जैसे आकाश ने धरती को फिर से स्मरण किया हो? बादल जब उमड़ते हैं, तो वे जीवन की नयी संभावनाएं लेकर आते हैं। वर्षा केवल खेतों की नहीं, अंतरात्मा की भी सिंचाई करती है। वह बताती है कि ठहराव के बाद गति और सूखे के बाद हरियाली भी संभव है। जैसे बादल धीरे-धीरे आकार लेते हैं, वैसे ही साधना से भीतर की अनुभूति पूर्णता की ओर बढ़ती है। यही तो वेदों का संदेश है, कि ऋतुओं के परिवर्तन में ही ब्रह्म की गति है, और जब पहली बूंद गिरती है, तो वह चेतना की पुकार होती है।

वेदों में वर्षा को 'ऋतस्य गर्भः' कहा गया है, वह जो ऋतु (नियम, गति, धर्म) को जन्म देती है। प्रकृति की यह स्थायी पुनरावृत्ति हमारे भीतर की चेतना को एक नया प्रारंभ देती है। वर्षा का हर आगमन हमें यह सिखाता है कि हर अंत के बाद एक नव आरंभ संभव है। जब भूमि महीनों तक तपकर कठोर हो जाती है, तो वह पहली बूँद को आत्मसात कर फूल जाती है। हम भी जीवन में कई बार ऐसे कठिन काल से गुजरते हैं, जहां भावनाएं सूख जाती हैं, संबंध बंजर हो जाते हैं, और विश्वास की भूमि दरकने लगती है। लेकिन यदि धैर्य रखा जाए, तो भीतर का आकाश भी बादलों से भर सकता है। यह वर्षा केवल बाहर नहीं, भीतर भी घटती है।

मनोविज्ञान में एक सिद्धांत है, 'रिलायंस' (प्रत्यास्थिता), जिसका अर्थ है- कठिन परिस्थितियों से पुनः उठ खड़ा होने की क्षमता। यह वही है जो वृक्षों के सूखने के बाद पुनः हरे-भरे पत्तों से पूर्ण कर देता है। हमारी आत्मा में भी वही प्रत्यास्थिता है, कि हम कितनी भी बार टूटें, फिर भी पुनः खिल सकते हैं। जैसे धरती जल को पीती नहीं, आत्मसात करती है; वैसे ही साधक प्रत्येक अनुभव को पीड़ा नहीं, प्रज्ञा में बदलता है। इसी प्रकार, जब बादल बिना किसी कारण के छा जाते हैं, और आसमान को घेर लेते हैं, वह अनिश्चितता नहीं, प्रतीक्षा होती है। उस प्रतीक्षा में आनंद छिपा होता है। श्रीमद्भगवद्गीता में कहा गया है कि जो योगयुक्त होता है, वह सहजता से आनंद को प्राप्त करता है। ठीक वैसे ही, जब हम जीवन की वर्षा का स्वागत करना सीख लेते हैं, बिना भय, बिना आशंका, तो वही साधारण क्षण एक महान अनुभव बन जाता है। वर्षा जब गिरती है, तो वह सबको एकसमान छूती है, यह समदृष्टि हमें सिखाती है कि आत्मिक दृष्टि किसी में भेद नहीं करती।

बादल हमें यह भी सिखाते हैं कि हर घटना का एक उचित समय होता है। इसके लिए धैर्य की आवश्यकता होती है। यह वह धैर्य है जो अध्यात्म की नींव है। 'कालः कर्षति भूतानि', समय ही सबका निर्माता है। साधना में भी यही होता है, हम जब भीतर की आग को सहते हैं, तब कोई अदृश्य शक्ति धीरे-धीरे बादलों को हमारे अंतरिक्ष में एकत्र करती है, और जब भीतर के तप की घड़ी पूरी होती है, तब वर्षा गिरती है। कभी वह करुणा बनकर, कभी मौन बनकर, कभी आत्म-ज्ञान की बूँद बनकर सामने आती है।

वर्षा की बूँद का स्थिर स्वर हमें भीतर के मौन से परिचित कराता है, जहाँ शब्द नहीं, केवल अनुभव होता है। प्रकृति के इस चक्र में एक और रहस्य है, हर वर्षा के बाद इंद्रधनुष का उगना। वह सात रंग जो इस बात का प्रतीक है कि जीवन में हर अनुभव, चाहे वह सुख हो या दुःख, एक रंग है, और सब मिलकर ही पूर्णता बनाते हैं। यदि एक भी रंग न हो, तो इंद्रधनुष अधूरा है।

इसी प्रकार, जीवन में जो वर्षा हमें दुखी करती है, वही हमें रंगों से भर देती है।

चुनाव के आसपास बढ़ते भाषाई विवाद

नव नियुक्त राज्यसभा सांसद उज्जवल निकम ने जो बताया, वह ज्यादा महत्वपूर्ण है कि प्रधानमंत्री ने फोन पर सबसे पहले कहा कि मैं हिंदी में बात करूं या मराठी में. निगम के अनुसार पीएम ने मराठी में बात करके मनोनयन की जानकारी दी. महाराष्ट्र में इस समय मराठी पर विवाद चरम पर है। दशकों पहले अलग हुए उद्धव और राज ठाकरे मराठी भाषा के नाम पर एक साथ आ गए हैं. महाराष्ट्र में नगरीय निकायों के चुनाव होने वाले हैं. मुंबई महानगर पालिका के संभावित चुनाव मराठी विवाद के पीछे हैं. शायद इसीलिए प्रधानमंत्री ने भी मराठी भाषा में बात कर महाराष्ट्र के लोगों को संदेश दिया।

(सरयूसुत मिश्रा)

राष्ट्रपति द्वारा राज्यसभा में मनोनीत किए गए चारों सदस्यों को पीएम ने स्वयं दूरभाष पर सूचना दी. पीएम की यह स्टाइल है. राष्ट्रपति को जब उम्मीदवार बनाया गया था, तब भी पीएम ने ही उन्हें सबसे पहले बताया था..!!

नव नियुक्त राज्यसभा सांसद उज्जवल निकम ने जो बताया, वह ज्यादा महत्वपूर्ण है कि प्रधानमंत्री ने फोन पर सबसे पहले कहा कि मैं हिंदी में बात करूं या मराठी में. निगम के अनुसार पीएम ने मराठी में बात करके मनोनयन की जानकारी दी. महाराष्ट्र में इस समय मराठी पर विवाद चरम पर है।

दशकों पहले अलग हुए उद्धव और राज ठाकरे मराठी भाषा के नाम पर एक साथ आ गए हैं. महाराष्ट्र में नगरीय निकायों के चुनाव होने वाले हैं. मुंबई महानगर पालिका के संभावित चुनाव मराठी विवाद के पीछे हैं. शायद इसीलिए प्रधानमंत्री ने भी मराठी भाषा में बात कर महाराष्ट्र के लोगों को संदेश दिया।

चुनाव के आसपास अक्सर भाषाई राज्यों में भाषा के विवाद उत्पन्न किए जाते हैं. दक्षिण भारत के राज्यों में तो यह विवाद चलते ही रहते हैं. महाराष्ट्र से अलग होकर गुजरात बना था. लेकिन गुजरात में भाषा को लेकर उतना विवाद नहीं है, जितना कि महाराष्ट्र में मराठी को लेकर है. व्यवसाय में जहां लाभ है, वहां भाषा भुला दी जाती है।

मुंबई में ही हिंदी सिनेमा का सबसे बड़ा फिल्म उद्योग है. वहां बनी हिंदी की फिल्में पूरी दुनिया में हिंदी भाषा पहुंचाती हैं. तमिल और दूसरी भाषा की फिल्मों को भी हिंदी में डबकर इसलिए दिखाया जाता है, क्योंकि देश में हिंदी का बाजार ज्यादा है. जैसे बाजार लाभ की भाषा में सोचता है, वैसे ही सियासत भी लाभ की ही भाषा समझती है।

सियासत बातें संविधान की करती है, लेकिन लाभ के लिए आचरण संविधान विरोधी करने लगती है. मराठी भाषा के मामले में जिस तरह से मुंबई में हिंदी भाषियों को मारा-पीटा जा रहा है, वह न केवल अपराधिक कृत्य है, बल्कि संविधान विरोधी भी है।

भारत का संविधान सभी लोगों को देश के किसी भी राज्य में किसी भी स्थान पर रहने का, रोजगार करने का और जीवन यापन का अधिकार देता है. यही संविधान अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का भी अधिकार देता है. इसका मतलब है, कि कोई भी व्यक्ति देश के किसी भी हिस्से में रह सकता है और अपनी भाषा में अभिव्यक्ति का उसे अधिकार है. जो हिंदी भाषी मुंबई में रहते हैं, उन पर

जबरदस्ती मराठी नहीं थोपी जा सकती. इसके उलट हिंदी देश की राजभाषा है. देश के सभी हिस्से में राजभाषा की शिक्षा त्रिभाषा फॉर्मूले में देना संविधान सम्मत है।

मराठी विवाद उद्धव ठाकरे और राज ठाकरे द्वारा मुंबई नगर पालिका चुनाव में राजनीतिक लाभ के लिए खड़ा किया जा रहा है. कोई भी ध्रुवीकरण शत प्रतिशत होता नहीं है. अगर मराठी ध्रुवीकरण भाषा के नाम पर कुछ सीमा तक हो भी जाता है, तो भी मुंबई में हिंदी भाषियों की संख्या पर्याप्त है. दोनों भाइयों को जितना मराठी भाषा के नाम पर एकजुटता लाभ पहुंचा सकती है, उतना ही हिंदी भाषियों में उनका जनाधार कमजोर होगा. इनका गठबंधन वैसे ही टूट गया है. मतलब कांग्रेस और एनसीपी मुंबई महानगर पालिका का अलग से चुनाव लड़ेंगी. यह सारे राजनीतिक गणित अभी धीरे-धीरे सामने आएंगे, लेकिन यह तो लगभग तय है कि कांग्रेस के साथ उनका गठबंधन नहीं होगा।

संविधान निर्माता भाषाई विवाद के दूरगामी दुष्परिणाम को जानते थे. शायद इसीलिए देश में ऐसी व्यवस्था की गई कि अगर भाषा के नाम पर राज्यों की राजनीति बहकने भी लगे तब भी राज्य की सरकार राष्ट्रीय उद्देश्य और लक्ष्य के अनुरूप काम करती रहेगी. सरदार वल्लभभाई पटेल ने अखिल भारतीय सेवाओं का जो स्ट्रक्चर खड़ा किया है,वह इतना मजबूत और प्रैक्टिकल है, कि कोई भी भाषा विवाद राज्य के प्रशासन को प्रभावित नहीं कर सकता है।

अगर भविष्य में ऐसी भी स्थिति बन जाए, कि भाषा के लिए सबसे अधिक आक्रामक राजनीति करने वाला नेता भी मुख्यमंत्री की कुर्सी पर बैठ जाए, तब भी राज्य प्रशासन को एकतरफा नहीं बनाया जा सकता. इसका कारण यह है, कि हर राज्य में अखिल भारतीय सेवाओं आईएएस और आईपीएस के कैडर में दो-तिहाई संख्या दूसरे राज्यों के अफसरों की रखी जाती है। किसी भी राज्य में जितने आईएएस अफसर हैं. उनमें तीन में एक ही अफसर उस राज्य का होगा. बाकी दो अफसर दूसरे राज्यों के होंगे. इसका मतलब है कि जो दूसरे राज्यों के दो अफसर हैं वह या तो हिंदी, अंग्रेजी भाषा के होंगे या किसी भाषाई राज्य से संबंधित होंगे. अगर राज्य का पॉलिटिकल नेतृत्व क्षेत्रीय भाषा को आक्रामकता के साथ राजनीतिक उपयोग की कोशिश करेगा तो भी राज्य का दो तिहाई प्रशासन ऐसे अफसरों के कंट्रोल में रहेगा, जो मूल रूप से उस भाषा से बिलॉन्ग नहीं करते हैं. जब इस व्यवस्था को बनाया गया था, तब संविधान निर्माताओं ने सोच लिया था, कि भाषा विवाद कभी ना कभी राज्य प्रशासन को प्रभावित कर सकते हैं।

अगर देश में आज संघवाद मजबूती के साथ काम कर रहा है, तो उसका भी एक बड़ा कारण अखिल भारतीय सेवाओं का स्ट्रक्चर कहा जा सकता है।

हिंदी संविधान के अनुसार भारत की आधिकारिक भाषा है. अंग्रेजी को एक निश्चित समय के लिए स्वीकार किया गया था, लेकिन वह सरकारी भाषा का रूप ले चुकी है. मराठी भाषा पर जो विवाद खड़ा किया जा रहा है, उससे बड़े-बड़े भाषा विवाद पहले हो चुके हैं. कई बार तो ऐसा लगने लगा था, कि कहीं देश का विखंडन भाषा के नाम पर ना हो जाए।

आजादी के बाद शुरुआती दिनों में भाषा के नाम पर बहुत विवाद हुए. अब धीरे-धीरे हमारा लोकतंत्र परिपक्व हो रहा है. हिंदी धीरे-धीरे देश के कोने-कोने में फैल रही है. इसका एक बड़ा कारण हिंदी सिनेमा और टेलीविजन के साथ ही विभिन्न राज्यों की संस्कृतियों का आदान-प्रदान और संवाद माना जा सकता है।

जिन राज्यों में पहले हिंदी भाषी अगर जाएं तो उनकी भाषा समझने वाला कोई नहीं मिलता था, वह स्थिति अब किसी भी राज्य में नहीं बची है. हिंदी भाषी पर्यटक भाषाई राज्यों में बड़ी संख्या में जाते हैं. उत्तर भारतीयों के चार धामों में से एक महत्वपूर्ण धाम रामेश्वरम तमिलनाडु में है. वहां उत्तर भारत के लोग तीर्थ यात्रा के लिए अनिवार्य रूप से जाते हैं. पहले वहां हिंदी भाषा समझने वाले नहीं मिलते थे, लेकिन अब केवल हिंदी भाषा जानने वाला संवाद शून्य नहीं रह सकता।

भाषा के नाम पर एक नई जंग विकास के रास्ते पर आगे बढ़ते भारत के लिए बाधक बन सकता है. भाषाई अंधभक्ति राज्य के हितों का संरक्षण नहीं कर सकती है. जिस तरह से हिंदी भाषी लोगों का आवागमन भाषाई राज्यों में हो रहा है, वह धीरे-धीरे भाषा के बैरियर को महत्वहीन कर देगा.

प्राइवेट स्कूल एसोसिएशन का शिक्षक प्रशिक्षण एवं प्रतिभा सम्मान कार्यक्रम आयोजित हुआ

पूर्व प्रांत संघ चालक एवं पूर्व प्रमुख सचिव व शिक्षा अधिकारी कार्यक्रम में हुए शामिल

जिले के 400 शिक्षकों का प्रशिक्षण और 150 विद्यार्थियों का हुआ सम्मान

क्लासरूम में विद्यार्थियों को पढ़ने के लिए न कहकर, पहचान कर सीखने के लिए प्रेरित करें- डॉ अशोक ठाकुर

बेमेतरा/मूक पत्रिका

प्राइवेट स्कूल मैनेजमेंट एसोसिएशन एवं समाधान कॉलेज, बेमेतरा के संयुक्त तत्वाधान में उत्कृष्ट विद्यार्थियों का प्रतिभा सम्मान समारोह एवं एक दिवसीय शिक्षक प्रशिक्षण कार्यशाला समर्थ गुरु सशक्त शिक्षकों का निर्माण विषय पर आयोजित हुआ। प्राइवेट स्कूल एसोसिएशन के संरक्षक दीपक अरोरा, समाधान महाविद्यालय के डायरेक्टर अविनाश तिवारी व प्राइवेट स्कूल एसोसिएशन के अध्यक्ष डॉ अवधेश पटेल, समिति की अध्यक्ष डॉ अलका तिवारी एवं प्राइवेट एसोसिएशन की टीम ने मुख्य अतिथि, विशिष्ट अतिथि व मुख्य वक्ताओं का स्वागत एवं अभिनंदन किया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि के रूप में छत्तीसगढ़ प्रांत के पूर्व प्रांत संघ चालक बिसराराम यादव ने आशीर्वचन व बधाई देते हुए कहा कि विद्यार्थियों की ज्ञानेंद्रियों व कर्मेंद्रियों को सही दिशा देकर शिक्षण प्रदान करें, जिससे वह अपनी प्रतिभा को पहचान कर आगे बढ़े। अगले मुख्य अतिथि के रूप में छत्तीसगढ़ शासन के रिटायर्ड आईएएस एवं प्रमुख सचिव गणेश शंकर मिश्रा ने अपने अनुभवों को साझा करते हुए बताया कि शिक्षा का उद्देश्य अज्ञानता को स्वीकार कर परिमार्जन व परिशोधन से श्रेष्ठता की ओर अग्रसर करना है। व्यक्ति के जीवन में तीन बोध ज्ञान बोध, इतिहास बोध व कर्म बोध की महिमा का विशेष महत्व है। विशिष्ट अतिथि के रूप में अरविंद मिश्रा, जिला शिक्षा अधिकारी दुर्ग से रहें। उन्होंने कहा कि प्रतिभावान छात्र-छात्राओं का सम्मान होना अनिवार्य है क्योंकि इससे लोगों को प्रेरणा मिलती है। अगले विशिष्ट अतिथि कमल कपूर बंजारे, जिला शिक्षा अधिकारी बेमेतरा से रहें। उन्होंने सम्मान समारोह पर बधाई देते हुए कहा कि विद्यार्थियों ने कड़ी मेहनत व लगन से सफलता हासिल की है। इस सफलता में शिक्षक व पालकों का भी योगदान हैं। अगले विशिष्ट अतिथि राजीव गुप्ता, अध्यक्ष प्राइवेट स्कूल मैनेजमेंट एसोसिएशन रायपुर से रहें। उनका शिक्षकों से आग्रह किया कि वे विद्यार्थियों में पढ़ाई के साथ साथ दया व करुणा का भी विकास करें। मुख्य प्रशिक्षक के रूप में मुनि इंटरनेशनल स्कूल के निदेशक एवं अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त शिक्षाविद् डॉ अशोक ठाकुर रहें। उन्होंने शिक्षकों के कार्यभार को 10 गुना कैसे कम करें? और छात्रों के अधिगम परिणाम को 20 गुना कैसे बढ़ाएं? विषय पर अपने विचारों को साझा करते हुए कहा कि विद्यालयों में स्कूलिंग हो रहा है लेकिन शिक्षा का कार्य नहीं हो रहा है। विद्यार्थियों को क्लास रूम में पढ़ने के लिए न कहे बल्कि चीजों को मूर्त व अमूर्त रूप में पहचानने? तथा पीयर टीचिंग, ग्रुप डिस्कशन व क्लासरूम डिस्कशन का वातावरण तैयार करें ताकि विश्व स्वयं से पढ़ने को तैयार हो जाए। इससे उनके स्व-प्रेरणा से सीखने की क्षमता बढ़ जाएगी। हमारा लक्ष्य आज के आधुनिक डिजिटल युग में छात्रों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के साथ अच्छे संस्कार भी देना है ताकि वे अच्छे इंसान बनकर वैश्विक रूप से जिम्मेदार नागरिक बने। मुनि इंटरनेशनल स्कूल इसी बुनियाद पर कार्य कर रहा है। हम छात्रों के पर्सपेक्शन पर नैतिकता से उनके बिलीफ सिस्टम को मजबूत करते हैं जिसके लिए हम उनमें छह आदतों-मैं ही जिम्मेदार हूं, इस दुनिया में कोई नकारात्मकता नहीं है बल्कि सकारात्मक है, इस दुनिया में चुनौतियां व समस्या हमें स्टार बनाने के लिए है तत्पश्चात कृतज्ञता, संयम व संकल्प को दिनचर्या में लागू करते हैं। क्लासरूम में डिस्कशन, करेक्शन, अंडरस्टैंड व सेलिब्रेशन का वातावरण देकर आनंदशाला बनाते हैं। इसके पश्चात अगले वक्ता वीर छत्रपति शिवाजी इंग्लिश मीडियम स्कूल रायपुर निदेशक एवं शिक्षाविद् मुकेश शाह रहें। उन्होंने शिक्षक के आभूषण व शिक्षकों और छात्रों का जुड़ाव विषय पर अपनी बात रखते हुए कहा कि बच्चों के मनोविज्ञान का अध्ययन कर उनसे जुड़ जाइए, तभी आप उनको सही ज्ञान प्रदान कर पाएंगे। अगले वक्ता एम्पावर एडुप्रेनर रायपुर के डायरेक्टर व शिक्षाविद् गोविंद मुदलियार रहें। उन्होंने बदलते शिक्षा के मद्देनजर कक्षा में शिक्षक और अधिगम प्रक्रिया की चुनौतियों का समाधान विषय पर बताया कि एनईपी 2020 शिक्षा में क्यों लागू किया गया है? जिसका प्रैक्टिकल अभ्यास कराकर समझाने का प्रयास किया। समाधान महाविद्यालय एवं ज्ञानभारती पब्लिक स्कूल के निदेशक एवं माइंड व मेमोरी ट्रेनर डॉ. अवधेश पटेल रहें। उन्होंने क्लास रूम में माइंड और मेमोरी पावर से छात्रों की एकाग्रता और रुचि कैसे बढ़ाएं? विषय पर अपनी बातों को साझा करते हुए कहा कि अच्छा शिक्षक वह है, जो विद्यार्थियों को पढ़ने के लिए तैयार करें। एलंस पब्लिक स्कूल और सैनिक स्कूल की प्राचार्या श्रीमती नीतू सिंह ने प्रेरणा से सशक्तिकरण-सार्थक शिक्षक की एक यात्रा पर अपनी बातों को साझा करते हुए बताया कि शिक्षक को विद्यार्थियों में छिपी हुई प्रतिभा को पहचान कर वास्तविक दुनिया के लिए तैयार करना चाहिए। अतिथियों को प्रतीक चिन्ह, शाल व श्रीफल से सम्मानित किया गया।

बेमेतरा जिले के शासकीय एवं निजी विद्यालय के कक्षा -10वीं एवं 12वीं की बोर्ड परीक्षा में जिला स्तर पर टॉप-10 एवं 90त्न से अधिक

बिजली बिल शून्य, आय में वृद्धि : पीएम सूर्य घर योजना बनी आमजनों के लिए वरदान

बलौदाबाजार/मूक पत्रिका

प्रधानमंत्री सूर्य घर मुफ्त बिजली योजना आम नागरिकों के लिए वरदान साबित हो रही है। बलौदाबाजार शहर के सदर रोड निवासी राजेश केशरवानी ने इस योजना का लाभ उठाकर अपने घर की छत पर 3 किलोवाट क्षमता का सौर ऊर्जा संयंत्र स्थापित किया है।अब उन्हें बिजली का बिल नहीं भरना पड़ता। केशरवानी ने बताया कि इस योजना की जानकारी उन्हें सोशल मीडिया और समाचार पत्रों से प्राप्त हुई, जिसके बाद उन्होंने बिजली विभाग से संपर्क कर आवश्यक मार्गदर्शन लिया। आवेदन की पूरी प्रक्रिया ऑनलाइन और सरल है, जिसे उन्होंने बिना किसी कठिनाई के पूरा किया। केशरवानी को सोलर सिस्टम स्थापना पर 78,000 की सब्सिडी प्राप्त हुई। पिछले छह महीनों से यह प्रणाली बिना किसी रुकावट के कार्य कर रही है। उन्होंने बताया कि पहले उन्हें हर महीने 2000 से 2500 तक का बिजली बिल भरना पड़ता था, लेकिन अब उनका बिजली बिल लगभग शून्य हो गया है। उन्होंने कहा कि यह योजना सिर्फ आर्थिक रूप से ही नहीं, बल्कि पर्यावरण की दृष्टि से भी अत्यंत लाभकारी है। उन्होंने जिले के नागरिकों से अपील की है कि वे भी इस योजना का लाभ उठाकर न केवल बिजली की बचत करें, बल्कि हर महीने की आय में भी सकारात्मक योगदान प्राप्त करें।

केशरवानी ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी एवं मुख्यमंत्री विष्णु देव साय के प्रति आभार व्यक्त करते हुए कहा कि यह योजना आमजन के जीवन में सच्चे अर्थों में बदलाव ला रही है और देश को ऊर्जा आत्मनिर्भरता की ओर अग्रसर हो रही है।

बेटी बचाओ- बेटी पढ़ाओ अभियान के तहत हुआ माहवारी स्वच्छता जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन

बलौदाबाजार/मूक पत्रिका

कलेक्टर दीपक सोनी के निर्देश एवं जिला कार्यक्रम अधिकारी अतुल परिहार के मार्गदर्शन में जिला स्तरीय महिला सशक्तिकरण केन्द्र (हब) के तहत शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय रामसागर भाटापारा में बेटी बचाओ- बेटी पढ़ाओ अंतर्गत माहवारी स्वच्छता पर जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया. कार्यक्रम में स्कूल के छात्र -छात्राओं को माहवारी स्वच्छता के बारे में गलत धारणाओं एवं मासिक धर्म स्वच्छता जैसे सैनिटरी नैपकिन तक पहुंच एवं उपयोग, मासिक धर्म एवं स्वच्छता के महत्व के बारे में जानकारी दी गई। महिला एवं बाल विकास विभाग की अन्य

योजनाओं जैसे महिला हेल्पलाईन नं. 181, चाईल्ड हेल्पलाईन नं. 1098, बाल विवाह, कार्यस्थल पर महिलाओं का लैंगिक उत्पीड़न से सुरक्षा अधिनियम 2013, घरेलू हिंसा 2005, सखी वन स्टॉप सेंटर, गुड टच बैड टच, बाल विवाह, घरेलू हिंसा एवं साइबर से संबंधित जानकारी जैसे साइबर हेल्पलाईन नम्बर 1930, की जानकारी दी गई। कार्यक्रम में जिला मिशन समन्वयक प्रीति नवरत्न, जिला महिला संरक्षण अधिकारी सुश्री मंजू तिवारी, स्वास्थ्य विभाग से सुश्री अंजिता बाबर्वे, स्कूल प्राचार्य लक्ष्मी यदु एवं अन्य शिक्षकगण सहित विद्यार्थीगण की उपस्थित रहे।

आने वाली पीढ़ी के सुरक्षित भविष्य के लिए वृक्षारोपण बहुत जरूरीः राजस्व मंत्री वर्मा

केबिनेट मंत्री ने एक पेड़ मां के नाम अभियान के तहत लगाया आम का पौधा

बलौदाबाजार/मूक पत्रिका

प्रदेश भर में एक पेड़ मां के नाम अभियान 2.0 के तहत व्यापक वृक्षारोपण कार्यक्रम चलाया जा रहा है। इसी कड़ी में वन विभाग द्वारा हायर सेकेण्डरी स्कूल चांपा में वन महोत्सव एवं एक पेड़ मां के नाम अभियान के तहत कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में राजस्व एवं आपदा प्रबंधन मंत्री टंकराम वर्मा शामिल हुए। उन्होंने अपने स्कूल परिसर में आम का पौधा लगाया। श्री वर्मा ने विद्यालयीन छात्र-छात्राओं और ग्रामवासियों को संबोधित करते हुए कहा कि आने वाली पीढ़ी के बेहतर भविष्य के लिए वृक्षारोपण बहुत जरूरी है। कार्यक्रम में वनमंडलाधिकारी गणवीर धम्मशील ने बताया कि अभियान के तहत जिले भर में लगभग 6 लाख पौधे लगाए जाएंगे।

कार्यक्रम में नगर पालिका परिषद बलौदाबाजार अशोक जैन, स्थानीय जनप्रतिनिधिगण, जिला पंचायत सीईओ सुश्री दिव्या अग्रवाल, ग्रामवासी एवं स्कूली छात्र-छात्राएं उपस्थित थे।

बेमेतरा में गरमाई सियासत विधायक ललित चंद्राकार ने कांग्रेस पर बोला हमला, चैतन्य बघेल की गिरफ्तारी को लेकर उठाए सवाल

बेमेतरा/मूक पत्रिका

दुर्ग ग्रामीण विधायक ललित चंद्राकार ने बीते सोमवार को प्रेस वार्ता कर कांग्रेस सरकार और पूर्व मुख्यमंत्री भूपेश बघेल पर बड़ा हमला बोला है। प्रेस कॉन्फ्रेंस में उन्होंने चैतन्य बघेल की गिरफ्तारी को लेकर कड़ी प्रतिक्रिया दी है। बेमेतरा जिला मुख्यालय के भाजपा कार्यालय में आयोजित प्रेस वार्ता के दौरान विधायक ललित चंद्राकार ने भूपेश बघेल के बेटे चैतन्य बघेल की गिरफ्तारी को लेकर कांग्रेस पर जमकर निशाना साधा। उन्होंने कहा कि कांग्रेस की नीतियाँ आज युवाओं के भविष्य से खिलवाड़ कर रही हैं। चंद्राकार ने प्रेस कॉन्फ्रेंस में यह भी कहा कि कांग्रेस अब धरातल पर कमजोर हो चुकी है और छत्तीसगढ़ की जनता अब असली चेहरा पहचान चुकी है।

वहीं भाजपा इस मुद्दे को लेकर लगातार कांग्रेस पर हमलावर है और इसे 'लोकतंत्र की हत्या' तक करार दे रही है। भारतीय जनता पार्टी से पूर्व विधायक अध्यक्ष चंदेल नगर पालिका अध्यक्ष विजय सिंह भाजपा नेता हर्षवर्धन तिवारी समेत नेता पत्रकार वार्ता में शामिल हुए।

क्योंकि सास भी कभी बहू थी' का नया प्रोमो हुआ जारी, जानिए क्या है खास!

जित मुम्बई/मूक पत्रिका

स्टार प्लस हमेशा से ही भावनाओं से जुड़ी और भारतीय संस्कृति से गहराई से जुड़ी फैमिली ड्रामा कहानियां दिखाने में आगे रहा है। इस चैनल ने हमेशा भारतीय टीवी की कहानी कहने की सीमा को आगे बढ़ाया है और अपने दर्शकों से जुड़ाव बनाए रखा है, खासकर रिश्तों, परिवार की परंपराओं और बदलते दौर के पारिवारिक रिश्तों की कहानियों के जरिए। इन्हीं में से एक थी क्योंकि सास भी कभी बहू थी, जो ना सिर्फ सास-बहू शोज़ की परिभाषा बदलने वाली बनी, बल्कि करोड़ों लोगों की रोजमर्रा की जिंदगी का हिस्सा भी। शो के नए सीजन की घोषणा ने सोशल मीडिया पर पहले ही हलचल मचा दी थी, और जैसे ही पहला प्रोमो रिलीज हुआ, दर्शकों का उत्साह और भी बढ़ गया। पुराने थीम सॉन्ग की धुन ने नॉस्टैल्जिया का असर ऐसा किया कि डिजिटल प्लेटफॉर्म्स पर जबरदस्त रिस्पॉन्स देखने को मिला। प्रोमो ने सिर्फ नए सीजन की झलक ही नहीं दी, बल्कि तुलसी का लुक भी सामने आया जिसमें वही गरिमा और मजबूती झलक रही थी, जिसकी वजह से वो हमेशा फैंस की फेवरेट रही हैं। अब जब नया प्रोमो रिलीज हो चुका है, मेकर्स ने इसे शेयर करते हुए लिखा है, ÷बदलते वक्त के साथ एक नए नजरिए के साथ लौट रही है तुलसी! क्या आप तैयार हैं उसके इस नए सफर में उसके साथ जुड़ने के लिए? देखिए क्योंकि सास भी कभी बहू थी, 29 जुलाई से, रात 10:30 बजे, सिर्फ स्टार प्लस पर और कभी-कभी जियोहॉटस्टार पर! इस नए सीजन में जहां पुराने दिनों की याद दिलाई गई है, वहीं एक नया नजरिया भी देखने को मिलेगा। प्रोमो की शुरुआत होती है तुलसी की उन यादों से, जो उसने बीते वक्त के साथ जोड़ी हैं, लेकिन साथ ही वह आगे आने वाले सफर की झलक भी दिखाती है। गोमजी की नाम वाली शर्ट से लेकर सास-बहू के रिश्तों में आए उतार-चढ़ाव तक, तुलसी बदलते वक्त और अपने मूल्यों पर कायम रहने की बात करती नजर आती है। प्रोमो में तुलसी की मजबूती और पारिवारिक मूल्यों से उसकी गहरी जुड़ाव को खूबसूरती से दिखाया गया है, वो भी आज के बदलते दौर की चुनौतियों के बीच। कहानी पुराने जाने-पहचाने पलों से शुरू होकर नए दौर की झलकियों तक पहुंचती है, जिसमें बीते कल की यादें और आज का समय एक साथ बंधे नजर आते हैं। अंत में यह याद दिलाया जाता है कि 'क्योंकि सास भी कभी बहू थी' सिर्फ एक शो नहीं, बल्कि एक बार फिर से जगा हुआ जज्बात है।

विवेक रंजन अग्निहोत्री की 'द बंगाल फाइल्स' ने न्यू जर्सी में किया धमाका, पहला प्रीमियर बना दर्शकों के बीच चर्चा का विषय

जित मुम्बई/मूक पत्रिका

फिल्ममेकर विवेक रंजन अग्निहोत्री की आने वाली फिल्म 'द बंगाल फाइल्स' का टीजर जब रिलीज हुआ था, तो उसने दर्शकों को चौंका दिया था। अब इस फिल्म ने न्यू जर्सी, यूएसए में अपने पहले शानदार प्रीमियर के साथ वहां हलचल मचा दी है। जैसा पहले ही बताया गया था, 'द बंगाल फाइल्स' की भारत में बड़ी रिलीज से पहले इंटरनेशनल प्रीमियर होंगे, जिसकी शुरुआत बड़े यूएसए टूर से हुई है। न्यू जर्सी में हुए पहले प्रीमियर में लोग ताली बजाते रहे, चीख पड़े, रो पड़े क्योंकि इस आंखें खोल देने वाली फिल्म में दिखाए गए सच ने उन्हें अंदर तक झकझोर दिया। अपने सोशल मीडिया पर विवेक रंजन अग्निहोत्री ने ऑडियंस के रिएक्शंस की झलकियां शेयर कीं, जिसमें साफ दिखा कि इस कड़वी, चौंकाने वाली और अब तक अनकही कहानी 'डायरेक्ट एक्शन डे' को देखकर लोग कितने भावुक हो गए। ये वही कहानी है जो एक बड़ा सवाल उठाती है, क्या बंगाल भी कश्मीर बनने की कगार पर है? साथ ही उन्होंने ये कैप्शन भी लिखा – ÷न्यू जर्सी में हिंदू नरसंहार की अनकही कहानी #TheBengalFiles की पहली स्क्रीनिंग के बाद दर्शकों का रिएक्शन। द बंगाल फाइल्स के 11 बड़े प्रीमियर का अमेरिका में शेड्यूल इस तरह रहेगाः 19 जुलाई को न्यू जर्सी में, 20 जुलाई को वॉशिंगटन डीसी में, 25 जुलाई को रैले में, 26 जुलाई को अटलांटा में, 27 जुलाई को टैम्पा में, 1 अगस्त को फीनिक्स में, 2 अगस्त को लॉस एंजिलिस में, 3 अगस्त को एसएफ बे एरिया में, 7 अगस्त को डेट्रॉयट में, 9 अगस्त को शिकागो में और 10 अगस्त को ह्यूस्टन में प्रीमियर होगा।

द बंगाल फाइल्स को लिखा और डायरेक्ट किया है विवेक रंजन अग्निहोत्री ने, और इसे अभिषेक अग्रवाल और पल्लवी जोशी ने बनाया है। फिल्म में मिथुन चक्रवर्ती, पल्लवी जोशी, अनुपम खेर और दर्शन कुमार नजर आएंगे। तेज नारायण अग्रवाल और आई एम बुद्धा के बैनर तले बनी ये फिल्म विवेक की फाइल्स ट्रिलॉजी का हिस्सा है, जिसमें द कश्मीर फाइल्स और द ताशकंद फाइल्स भी शामिल हैं। यह फिल्म 5 सितंबर 2025 को सिनेमाघरों में आएगी।

भाजपा ने पत्रकार वार्ता में किया कांग्रेस के झूठ का पर्दाफाश, जारी किए,कोयला आबंटन और पेड़ों की कटाई के भूपेश बघेल सरकार के कई दस्तावेज

भ्रष्टाचारियों को बचाने प्रदेश की जनता को परेशान कांग्रेस पार्टी कर रही है इसे कहते है चोरी ऊपर से सीना जोरी

जांजगीर चांपा - भूपेश बघेल झूठ की फैक्ट्री, कोयला आबंटन के लिए कई पत्र लिखे ,परमिशन दिलवाई। कांग्रेस बताएं कि भूपेश बघेल के बेटे चैतन्य बघेल कांग्रेस के किस पद पर है जिस व्यक्ति का कांग्रेस में कोई पद नहीं उसे व्यक्ति के लिए पूरी कांग्रेस प्रदेश में प्रदर्शन कर रही है इसका साफ मतलब है भूपेश बघेल ने पूरी कांग्रेस को पुत्र मुंह में झोंक दिया है। हमने पहले भी बड़े-बड़े ऐसे उदाहरण देखें हैं जिसमें लोगों ने पुत्र मोह में खुद को भी बर्बाद किया और अपने पूरे साम्राज्य को भी बर्बाद किया भूपेश बघेल इस दिशा में काम करते हुए दिखाई दे रहे हैं। भूपेश बघेल और कांग्रेस भ्रष्टाचारियों को बचाने पूरे प्रदेश की जनता को परेशान कर रही है और साथ ही उनका आर्थिक रूप से नुकसान भी करने जा रही है जो की प्रदेश की जनता स्वीकार नहीं करेगी। कोल ब्लॉक आवंटन को लेकर कांग्रेस पार्टी और भूपेश बघेल के झूठ का पर्दापाश हो गया है। कांग्रेस चोरी और सीनाजोरी का उदाहरण बार-बार प्रस्तुत कर रही है। आप सबको पता होगा कि अपने शासनकाल के पाँच वर्ष में भूपेश बघेल

जी ने छत्तीसगढ़ को दस जनपथ का चारागाह बना दिया था। शराब घोटाले, कोयला घोटाले, चावल घोटाले, गोठान घोटाले से लेकर पीएससी घोटाले तक में इसने प्रदेश के संसाधनों को जम कर लूटा था, आज इन घोटालों के आरोपी एक एक कर नप रहे हैं। सभी जेल जा रहे हैं। और बेवजह जिस तरह अपराधियों के विरुद्ध हो रही कानून सम्मत कार्रवाई को कहीं और मोड़ा जा रहा है, वह दुर्भाग्यजनक और कांग्रेस में हिप्पोक्रेसी का सबसे बड़ा नमूना है।

जब भी आप सभी कॉल ब्लॉक आवंटन और पेड़ कटाई आदि पर सवाल उठाते थे, तो दस जनपथ के दबाव में सीधे तौर पर भूपेश बघेल जी बचाव में आ जाते थे। कहते थे कि कोल ब्लॉक आवंटन का विरोध करने वाले अपने-अपने घरों की बिजली बंद कर दें। सवाल यह है कि अब जब झूठे और बेबुनियाद आरोप लगा कर भूपेशजी अपनी कालिख धोने की कोशिश कर रहे हैं, तो क्या वह अपने घर और राजीव भवन की बिजली बंद करेंगे?

यह तथ्य है कि न केवल भूपेश बघेल ने कोल ब्लॉक अशोक गहलोत को आवंटित किया था, बल्कि उससे पहले भी मनमोहन सिंह जी की सरकार में तमाम नियमों को धत्ता बताते हुए छत्तीसगढ़ के कोल ब्लॉक आवंटन की राह आसान की थी। उन्होंने कहा कि साल 2010 में केन्द्र में काँग्रेस की सरकार थी, तब कोयला मंत्रालय और पर्यावरण एवं वन मंत्रालय द्वारा हसदेव अरण्य को पूरी तरह से नो-गो जोन घोषित किया गया था। उसे कांग्रेस सरकार के पर्यावरण मंत्री जयराम रमेश ने ही सबसे पहले गो एरिया घोषित किया था। 23 जून 2011 को केन्द्र में कांग्रेस की सरकार रहते ही तारा परसा ईस्ट और कांटे बेसन कोल ब्लॉक को खोलने का प्रस्ताव दिया गया। जब छत्तीसगढ़ और राजस्थान में कांग्रेस की सरकार थी, उस वक्त अडानी को दो बड़ी खदानों गारे पेलमा सेक्टर-2 और राजस्थान में केते एक्सटेंशन ब्लॉक का ऑपरेटर बनाया गया। इसी तरह भूपेश बघेलजी के मुख्यमंत्री कार्यकाल में ही 16 अक्टूबर 2019 को राज्य सरकार ने पर्यावरण स्वीकृति के लिए सिफारिश भेजी। 31 मार्च 2021 को ओपन कास्ट गारे पेलमा सेक्टर-2, मांड-रायगढ़ कोलफील्ड के लिए हुआ समझौता भी सबके सामने है। इसी क्रम में 19 अप्रैल 2022 को भूपेश बघेल जी के मुख्यमंत्री रहते ही कांग्रेस सरकार द्वारा वन स्वीकृति स्टेज-1 और 23 जनवरी 2023 को वन स्वीकृति स्टेज-2 के लिए सिफारिश भेजी गई। महाजेंको कोल फील्ड की स्वीकृति में तत्कालीन मुख्यमंत्री भूपेश बघेल की संलिप्तता को लेकर तब अनेक अखबारों ने समाचार भी प्रकाशित किए थे।

25 मार्च 2022 को भूपेश सरकार ने राजस्थान में अशोक गहलोत की सरकार के रहते राजस्थान को कोल माइंस का आबंटन किया था। भाजपा ने कांग्रेस से सवाल किया कि क्या वह मनमोहन सिंह सरकार के समय हुए निर्णयों के लिए आज माफी मांगेंगे?

क्या भूपेश बघेल यह घोषणा करेंगे कि अब कांग्रेस कभी बिजली का उपयोग नहीं करेगी, क्योंकि स्वयं यह कह चुके हैं कि विरोध करने वाले अपने घर की बिजली बंद कर दें।

क्या कांग्रेस हर अपराधी के पक्ष में ऐसे ही खड़ी होगी, जैसे आज पूर्व मुख्यमंत्री के बेटे के लिए हुई है?

जब छत्तीसगढ़ में कांग्रेस की सरकार रही तब राजस्थान के तत्कालीन मंत्री बी डी कल्ला ने भूपेश बघेल को पत्र लिखा और राजस्थान के तत्कालिक मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने एक सप्ताह के भीतर कई पत्र लिखे कोल ब्लॉक आंबटन के लिए। जिसे छत्तीसगढ़ और देश की जनता ने देखा है उक्त पत्रकार वार्ता मे जिलाध्यक्ष अंबेश जांगड़े सोशल मीडीया के प्रदेश प्रभारी प्रशांत सिंह ठाकुर पूर्व विधायक चुन्नीलाल साहु नगरपालिका अध्यक्ष रेखा गढ़वाल जिला उपाध्यक्ष अमर सुल्तानिया विवेका गोपाल पंकज अग्रवाल अभिमन्यु राठौर मोहन यादव उपस्थित थे।

जिला कांग्रेस कमेटी का प्रतिनिधिमण्डल पुलिस अधीक्षक से मिलकर की कार्यवाही की मांग

महामंत्री रितेश पटेल के खिलाफकी गई टिप्पणी के विरोध में सामने आई कांग्रेस पार्टी

कोंडागांव/मूक पत्रिका

जिला कांग्रेस कमेटी अध्यक्ष बुधराम नेताम के नेतृत्व में कांग्रेस कमेटी के प्रतिनिधि मण्डल ने पुलिस अधीक्षक वाय अक्षय कुमार से मिलकर दीपक वैष्णव के खिलाफतत्काल उचित कार्यवाही की मांग की उनका कहना था रितेश पटेल हमारे कोंडागांव जिला कांग्रेस कमेटी संगठन के प्रभारी महामंत्री हैं जिनके खिलाफएक दीपक वैष्णव नामक व्यक्ति ने व्हाट्सएप्प ग्रुप मे अनर्गल टिप्पणी की है जिसके संबंध मे रितेश पटेल ने दिनांक 19 जुलाई को लिखित शिकायत कोंडागांव थाना कोतवाली मे दर्ज कराई है साथ ही सोशल मीडिया मे वायरल हो रहे दीपक वैष्णव द्वारा किये गए कमेंट्स की स्क्रीनशॉट भी संलग्न किया गया है।चुंकि रितेश पटेल हमारे संगठन के प्रमुख पदाधिकारी हैं उनके खिलाफकी गयी टिप्पणी से उनकी व्यक्तिगत छवि के साथ साथ पार्टी की बदनामी भी हो रही है,दीपक वैष्णव के द्वारा किये गए कमेंट्स मे 700 पेज का प्रमाण पुलिस के पास होना बताया गया है, ऐसे कौन से मामले हैं रितेश पटेल के खिलाफ जिसमे 700 पेज के प्रमाण हैं जिला कांग्रेस कमेटी यह जानना चाहती है साथ ही कमेंट्स मे कलेक्टर महोदया को भी संज्ञान मे लेने की बात लिखी गयी है एवं यह भी लिखा गया है कि ÷अब देखने वाली बात होगी कोंडागांव के पुलिस अधीक्षक कहे जाने वाले वाय अक्षय कुमार मसले मे क्या बोलते है÷ कांग्रेस प्रतिनिधि मण्डल का कहना था,हमें तो यह पता है आप ही जिले के पुलिस कप्तान हैं और इस तरह कि टिप्पणी हमें अशोभनीय लगी है, कहीं न कहीं उक्त व्यक्ति के द्वारा पुलिस की कार्यप्रणाली पर भी प्रश्नचिन्ह लगाया गया है।दीपक वैष्णव द्वारा किये गए कमेंट्स से कांग्रेस पार्टी से जुड़े कार्यकर्ताओ एवं क्षेत्रवासियों में काफ़ी रोष है हम उक्त व्यक्ति के खिलाफ कड़ी से कड़ी कार्यवाही करने की मांग करते हैं ताकि कांग्रेस पार्टी द्वारा इस मामले को लेकर कोई प्रदर्शन करने की जरूरत न पड़े। कोंडागांव जिला शांत क्षेत्र है दीपक वैष्णव जैसे व्यक्ति द्वारा ऐसी टिप्पणी कर शांत क्षेत्र को अशांत करने का कुत्सित प्रयास किया जा रहा है जो की क्षेत्र के लिए एक गंभीर विषय है। उक्त व्यक्ति के खिलाफ कार्यवाही मे विलम्ब होने कि स्थिति मे पार्टी आंदोलन का रुख अपनायेगी जिसकी सम्पूर्ण जिम्मेदारी प्रशासन की होगी।कांग्रेस कमेटी कोंडागांव ने पुलिस प्रशासन से निवेदन किया और कहा मामले की गंभीरता को देखते हुए दीपक वैष्णव के खिलाफ त्वरित कार्यवाही की जाए जिससे क्षेत्र में अशांति का माहौल ना बन सके।इस दौरान जिलाध्यक्ष बुधराम नेताम, पूर्व जिला पंचायत अध्यक्ष देवचंद मतलाम, शहर कांग्रेस अध्यक्ष तरुण गोलछा, प्रदेश सचिव सकुर खान,कार्यकारी शहर अध्यक्ष नरेन्द्र देवांगन,ब्लॉक कांग्रेस अध्यक्ष भारत देवांगन, मंडल अध्यक्ष नंदू दीवान,आई टी सेल जिलाध्यक्ष रवि गोयल, युवा कांग्रेस महासचिव श्रीराम नेताम सहित कांग्रेस जन मौजूद रहे।

मुख्यमंत्री आगमन की तैयारी का कलेक्टर ने किया स्थल निरीक्षण

- जिलाधिकारी के साथ कार्य म स्थल में आवश्यक व्यवस्था सुनिश्चित करने बनाया प्लान
- 28 जुलाई को दाढ़ी में हितग्राही सम्मेलन कार्य म में शामिल होंगे : मुख्यमंत्री साय

मूक पत्रिका/बेमेतरा- मुख्यमंत्री विष्णु देव साय का आगामी 28 जुलाई को जिला बेमेतरा के नगर पंचायत दाढ़ी में कार्यक्रम प्रस्तावित है। मुख्यमंत्री साय के आगमन को दृष्टिगत रखते हुए कलेक्टर रणबीर शर्मा ने अधिकारियों के साथ यहां पहुंचकर आवश्यक व्यवस्था सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। निर्धारित कार्यक्रम स्थल पहुंचकर कलेक्टर ने यहां मुख्य मंच निर्माण, हितग्राही दीर्घा, सुरक्षा व्यवस्था, पार्किंग व्यवस्था, बैरिकेटिंग, व्ही आई पी बैठक व पार्किंग व्यवस्था, विभागीय स्टॉल, सहित अन्य व्यवस्था के लिए अधिकारियों के साथ आवश्यक चर्चा किया।

कलेक्टर शर्मा ने अधिकारियों को मुख्यमंत्री कार्यक्रम का गरिमामय आयोजन करने निर्देशित किया। उल्लेखनीय है, कि हितग्राही सम्मेलन कार्यक्रम में विभिन्न। विभागों द्वारा संचालित योजनाओं के तहत हितग्राहियों को लाभान्वित किया जाएगा। इसके साथ ही जिले में हुए विभिन्न विकास कार्यों का लोकार्पण एवं भूमि पूजन भी किया जाएगा। मुख्यमंत्री विष्णु देव साय विभिन्न योजनाओं का लाभ ले रहे हितग्राहियों से कार्यक्रम में भेंट करेंगे। हितग्राहियों से चर्चा कर योजनाओं का लाभ लेने से उनके जीवन में आए परिवर्तन से रूबरू होंगे।

श्रावण सोमवार पर नंदेश्वर महादेव का फल श्रृंगार, 3 अगस्त को निकलेगी भव्य कांवड़ यात्रा

- नंदेश्वर महादेव का फल श्रृंगार, 3 अगस्त को निकलेगी भव्य कांवड़ यात्रा

कांकेर/मूक पत्रिका

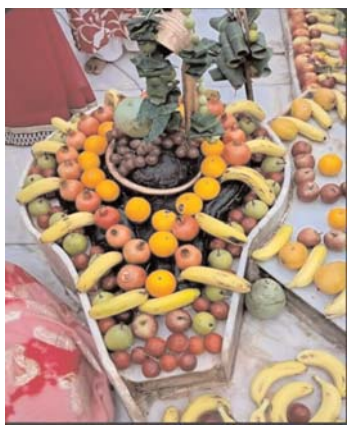

श्रावण मास के दूसरे सोमवार को कांकेर स्थित ऊपर-नीचे रोड के नंदेश्वर महादेव मंदिर में भगवान भोलेनाथ का फल-श्रृंगार कर श्रद्धा भाव के साथ पूजा-अर्चना की गई। संध्या 7 बजे आयोजित महाआरती में सैकड़ों की संख्या में श्रद्धालु शामिल हुए और ÷बोल बम÷ के जयघोष से मंदिर परिसर गूंज उठा।

कार्यक्रम का आयोजन शिव मंदिर समिति द्वारा किया गया, जिसकी अगुवाई समिति अध्यक्ष अरुण कौशिक ने की। उन्होंने जानकारी दी कि 3 अगस्त 2025, रविवार को भव्य कांवड़ यात्रा का आयोजन किया जा रहा है। कौशिक ने बताया कि कांवड़ यात्रा के लिए सुबह 7:00 बजे शिव मंदिर प्रांगण में सभी श्रद्धालु एकत्र होंगे, जहां से बस के माध्यम से उन्हें सरंगपाल स्थित त्रिवेणी संगम महानदी ले जाया जाएगा। वहां से पवित्र जल भरकर भक्त कांवड़ यात्रा के माध्यम से लौटकर नंदेश्वर महादेव का जलाभिषेक करेंगे।

यह आयोजन श्रावण मास की महत्ता को दर्शाते हुए भक्ति, संयम और सेवा भाव को समर्पित रहेगा। समिति ने समस्त श्रद्धालु भक्तों से अधिक संख्या में उपस्थित होकर कार्यक्रम को सफल बनाने की अपील की है।

झोड़ियांबाढ़म में नक्सली पीड़ितों को मकान देने का जमीन विवाद गहराया

ग्रामीणों ने सरपंच पर ग्राम सभा के अनुमति के बिना ही 35 आवास निर्माण का लगाया आरोप

- *एस डी एम गीदम मीडिया के सवालों के जवाब दिए बगैर ही चले गए

मूक पत्रिका/दंतेवाड़ा - जिले के गीदम विकासखण्ड अन्तर्गत ग्राम पंचायत झोड़ियांबाढ़म में विगत 02 माह पूर्व नक्सली पीड़ितों हेतु दंतेवाड़ा विधायक एवं कलेक्टर की उपस्थिति में इंदिरा आवास का भूमि पूजन हुआ था, करीबन 35 नग मकान नक्सली पीड़ितों को बनाकर दिया जाना था, जिसके लिए नींव रखी गई है ,लेकिन अब ग्राम वासियों का कहना है कि बिना ग्राम सभा के अनुमति के शासन ने हमारे ग्राम में नक्सली पीड़ितों को जमीन मुहैया कराई है।

आज ग्राम पंचायत में ग्राम सभा का आयोजन किया गया था जिसमें अनुविभागीय अधिकारी राजस्व गीदम, मुख्य कार्यपालन अधिकारी जनपद पंचायत गीदम बलराम ध्रुव,सरपंच,सचिव, एवं ग्रामीण जन उपस्थित रहे और सभी ग्रामीणों द्वारा ग्राम पंचायत क्षेत्र में 35 नग मकान जो नक्सल पीड़ित लोगों के लिए बनाया जा रहा है उसका विरोध किया गया है।एवं ग्राम सभा में सर्व सम्मति से निर्णय लिया गया है कि किसी भी स्थिति में नक्सल पीड़ित लोगों को ग्राम पंचायत क्षेत्र में बसने नहीं दिया जाएगा। ना ही बिना ग्राम सभा के अनुमति बिना किसी भी प्रकार का निर्माण कार्य होगा।

अब ह्व2 माह पूर्व हुए इन 35 नग मकान शासन प्रशासन के लिए गले में फंसी हड्डी के समान हो गई है,अब देखना लाज़मी होगा कि शासन प्रशासन नक्सल पीड़ित लोगों के आवास को लेकर कौन सा रास्ता निकालती है।

एसएसपी बेमेतरा रामकृष्ण साहू ने सुनी आम जनता की शिकायतें, निराकरण का दिया आश्वासन

मूक पत्रिका/बेमेतरा-वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक बेमेतरा रामकृष्ण साहू (भा.पु.से.) द्वारा आम नागरिकों की शिकायतों एवं समस्याओं की जनसुनवाई की गई। जिले के विभिन्न क्षेत्रों से आए नागरिकों ने अपनी-अपनी शिकायतें एवं समस्याएं प्रस्तुत की।

जनसुनवाई के दौरान प्राप्त शिकायतों को गंभीरता से सुनते हुए एसएसपी ने संबंधित थाना/चौकी प्रभारियों को आवेदनों का त्वरित निराकरण सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। तात्कालिक महत्व की समस्याओं का मौके पर ही समाधान किया गया, जबकि विस्तृत जांच की आवश्यकता वाले प्रकरणों को विधिवत शिकायत के रूप में दर्ज कर संबंधित अधिकारियों को समयबद्ध कार्रवाई करने हेतु निर्देशित किया गया।

इस अवसर पर अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक श्रीमती ज्योति सिंह, स्टेनो सउनि (अ) अजय कुमार देवांगन, एसएसपी रीडर सउनि विष्णु सप्रे सहित अन्य पुलिस अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित रहे।

कृषि महाविद्यालय बेमेतरा में स्वास्थ्य परीक्षण शिविर का आयोजन

मूक पत्रिका/ बेमेतरा- रेवेन्द्र सिंह वर्मा कृषि महाविद्यालय एवं अनुसंधान केन्द्र ढोलिया, में अधिष्ठाता डॉ. संदीप भंडारकर के मार्गदर्शन में राष्ट्रीय सेवा योजना के द्वारा सी. एच. सी. खंडसरा, स्वास्थ्य विभाग की टीम की सहायता से स्वास्थ्य परीक्षण शिविर का आयोजन दिनांक 21 जुलाई 2025 को महाविद्यालय प्रांगण में किया गया। इस आयोजन का उद्देश्य दैनिक स्वास्थ्य समस्याओं को रोकना तथा समस्याओं को शुरू होने से पहले ही पहचानना है और विद्यार्थियों को स्वास्थ्य के प्रति जागरूक करना है। इस कार्यक्रम में छात्र-छात्राओं, अधिकारियों एवं कर्मचारियों का स्वास्थ्य संबंधी जाँच जैसे ब्लड ग्रुप, शुगर जाँच, हीमोग्लोबिन, सिक्लीन, एवं बी.पी. जाँच के साथ-साथ स्वास्थ्य परामर्श और दवाईयों का वितरण किया गया। यह कार्यक्रम सी. एच. सी. से डॉक्टर शरद कोहाड़े, ब्लॉक मेडिकल ऑफिसर खंडसरा, डॉ. ज्योति वर्मा, डॉ. अभिषेक यादव, एवं अन्य कर्मचारी मनीष साहू, श्रीमति दीपा विश्वकर्मा की सहायता से सम्पन्न हुआ। जिसमें महाविद्यालय के समस्त अधिकारी, कर्मचारीगण एवं छात्र-छात्राएँ उपस्थित रहे एवं कार्यक्रम को सफल बनाया।

मंत्री श्रीमती लक्ष्मी राजवाड़े ने चरण पादुका का किया वितरण

- सूरजपुर जिले में 61,413 महिला संग्राहकों को मिलेगी चरण पादुका
- जिला स्तरीय वन महोत्सव एवं एक पेंड़ माँ के नाम कार्य म आयोजित
- सूरजपुर वन मंडल में इस साल 7 लाख पौधों का होगा रोपण

मूक पत्रिका/सुरजपुर - महिला एवं बाल विकास मंत्री श्रीमती लक्ष्मी राजवाड़े के मुख्य आतिथ्य में आज सूरजपुर वनमंडल अंतर्गत गायत्री रोपणी नमदगिरी के समीप आयोजित जिला स्तरीय वन महोत्सव एवं एक पेड़ मां के नाम कार्यक्रम में छत्तीसगढ़ सरकार की चरण पादुका योजना का विधिवत शुभारंभ हुआ। इस मौके पर मंत्री श्रीमती राजवाड़े ने तेन्दूपत्ता संग्राहक महिलाओं को चरण पादुकाएं प्रदान करते हुए सभी को बधाई और शुभकामनाएं दी। चरण पादुका योजना के तहत सूरजपुर जिले में 61,413 तेंदूपत्ता संग्राहक परिवार की महिलाओं को लाभान्वित किया जा रहा है। मंत्री श्रीमती राजवाड़े ने इस अवसर पर आम का पौधा रोपित कर जिला स्तरीय वन महोत्सव एवं एक पेड़ मां के नाम 2.0 कार्यक्रम का भी शुभारंभ किया। सूरजपुर वनमण्डल अंतर्गत इस साल कैम्पा, ग्रीन इंडिया मिशन, ग्रीन क्रेडिट योजना के तहत 7 लाख पौधों का रोपण किया जाएगा। ''किसान वृक्ष मित्र योजना'' के तहत् हितग्राहियों के निजी भूमि पर ढाई लाख क्लोनल नीलगिरी पौधों का रोपण भी किया जायेगा। सूरजपुर जिले में वृक्षारोपण को बढ़ावा देने के लिए मनरेगा योजना के तहत् तैयार किये गये पौधों का निःशुल्क वितरण भी ग्रामीणों को किया जा रहा है। मंत्री श्रीमती लक्ष्मी राजवाड़े ने मुख्यमंत्री विष्णु देव साय एवं विधानसभा अध्यक्ष डॉ रमन सिंह को धन्यवाद ज्ञापित करते हुए कहा कि तेन्दूपत्ता संग्राहक महिलाओं के परेशानियों को ध्यान में रखते हुए इस योजना की शुरूआत की गई थी, ताकि तेन्दूपत्ता संग्रहण के दौरान पैरों में कांटा, कंकड़ न चुभे। पूर्ववर्ती सरकार ने इस योजना को बंद कर दिया था, जिसे प्रदेश के संवेदनशील मुख्यमंत्री विष्णु देव साय ने फिर से शुरू किया है। यह योजना तेन्दूपत्ता संग्राहक महिलाओं के सम्मान और सुरक्षा से जुड़ी है। उन्होंने शत-प्रतिशत संग्राहक महिलाओं को इस योजना का लाभ सुनिश्चित करने की बात कही। प्रेमनगर विधायक भूलन सिंह मरावी ने कहा कि बढ़ते प्रदूषण को रोकने के लिए पेड़ पौधे लगाना बहुत जरूरी है। प्रतापपुर विधायक श्रीमती शकुंतला पोर्ते एवं वन विकास निगम अध्यक्ष रामसेवक पैकरा ने सभी को अपने-अपने माता के नाम से एक पेड़ लगाने और उसकी सुरक्षा की अपील की। इस अवसर पर जिला पंचायत अध्यक्ष श्रीमती चन्द्रमणि पैकरा, जिला पंचायत उपाध्यक्ष श्रीमती रेखा राजलाल राजवाडे, जनपद पंचायत अध्यक्ष श्रीमती स्वाति सिंह, जनपद पंचायत उपाध्यक्ष मनमत कुमार बछाड, नगरपालिका उपाध्यक्ष शैलेष कुमार अग्रवाल एवं अन्य जनप्रतिनिधियों, कलेक्टर एस जयवर्धन एवं विभिन्न विभागों के अधिकारियों और नागरिकों द्वारा पौधरोपण किया गया।

बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ योजना के तहत बालिकाओं को मिली सुरक्षा और शिक्षा का संदेश

- साईबर अपराधों के लिए किया जागरूक

मूक पत्रिका/सुरजपुर - छत्तीसगढ़ में बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ योजना के अंतर्गत बालिकाओं की सुरक्षा, सशक्तिकरण और शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए महत्वपूर्ण कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं। मनेंद्रगढ-चिरमिरी-भरतपुर जिले में ऑनलाइन सुरक्षा एवं साइबर जागरूकता विषय पर पहला सत्र आयोजित किया गया। मनेन्द्रगढ़ स्थित शासकीय कन्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में आयोजित जागरूकता सत्र का उद्देश्य तेजी से बढ़ रहे साइबर अपराधों के प्रति बालिकाओं को सतर्क करना था। सत्र में ऑनलाइन धोखाधड़ी, डेटा चोरी, बैंकिंग फ्रॉड, सॉफ्टवेयर चोरी, मैलवेयर, रैनसमवेयर, डी-डॉस अटैक और साइबर जासूसी जैसे खतरों के बारे में विस्तारपूर्वक जानकारी दी गई।बालिकाओं को सोशल मीडिया के सुरक्षित उपयोग, पासवर्ड सुरक्षा, संदिग्ध लिंक से बचाव और ऑनलाइन गोपनीयता बनाए रखने के उपाय बताए गए। साथ ही बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ, बालिका समृद्धि योजना, पूरक पोषण आहार, किशोरी बालिकाओं के लिए संचालित योजनाएं तथा चाइल्ड हेल्पलाइन 1098 की जानकारी दी गई। सत्र में बालिकाओं को उनके संवैधानिक अधिकार, डिजिटल साक्षरता और आत्मरक्षा के प्रति जागरूक कर आत्मनिर्भर बनने की प्रेरणा दी गई। इसके अलावा नोनी सुरक्षा योजना, सक्षम योजना, सखी निवास, शक्ति सदन, नारी अदालत, महतारी वंदन योजना, मातृ वंदन योजना और नवा बिहान जैसी प्रमुख योजनाओं के उद्देश्य, लाभ और प्रक्रिया से परिचित कराया गया। इसी क्रम में फूंदुरदिहारी स्थित प्राथमिक व पूर्व माध्यमिक शालाओं में शाला प्रवेश उत्सव कार्यक्रम का आयोजन किया गया। नवप्रवेशी बालिकाओं को आत्मीय वातावरण में स्वागत कर शिक्षा के प्रति प्रेरित किया गया। बालिकाओं को यूनिफॉर्म, कॉपियां, किताबें, पेन और पेंसिल जैसी शैक्षणिक सामग्री वितरित की गई।कार्यक्रम के दौरान नोनी सुरक्षा योजना, सक्षम योजना, महिला हेल्पलाइन 181, चाइल्ड लाइन 1098, बाल विवाह निषेध आदि विषयों पर जानकारी दी गई।

भूपेश के बेटे कांग्रेस के कौन से पद पर है जो कांग्रेस प्रदर्शन कर रही है, भ्रष्टाचारियों को बचाने प्रदेश की जनता को परेशान किया जा रहा है इसे कहते है चोरी ऊपर से सीना जोरी-चैतराम अटामी

पुत्र मोह में भूपेश ने पूरी कांग्रेस को झोंका– चैतराम अटामी

मूक पत्रिका/दंतेवाड़ा - विधायक दंतेवाड़ा चैतराम अटामी ने कहा कि कांग्रेस बताएं कि भूपेश बघेल के बेटे चैतन्य बघेल कांग्रेस के किस पद पर है जिस व्यक्ति का कांग्रेस में कोई पद नहीं उसे व्यक्ति के लिए पूरी कांग्रेस प्रदेश में प्रदर्शन कर रही है इसका साफ मतलब है भूपेश बघेल ने पूरी कांग्रेस को पुत्र मुंह में झोंक दिया है। अटामी ने कहा हमने पहले भी बड़े-बड़े ऐसे उदाहरण देखें हैं जिसमें लोगों ने पुत्र मोह में खुद को भी बर्बाद किया और अपने पूरे साम्राज्य को भी बर्बाद किया भूपेश बघेल इस दिशा में काम करते हुए दिखाई दे रहे हैं। भूपेश बघेल और कांग्रेस भ्रष्टाचारियों को बचाने पूरे प्रदेश की जनता को परेशान कर रही है और साथ ही उनका आर्थिक रूप से नुकसान भी करने जा रही है जो की प्रदेश की जनता स्वीकार नहीं करेगी।

भाजपा जिलाध्यक्ष दंतेवाड़ा संतोष गुप्ता ने कहा की कोल ब्लॉक आवंटन को लेकर कांग्रेस पार्टी और भूपेश बघेल के झूठ का पर्दापाश हो गया है। उन्होंने कहा कि कांग्रेस चोरी और सीनाजोरी का उदाहरण बार-बार प्रस्तुत कर रही है। आप सबको पता होगा कि अपने शासनकाल के पाँच वर्ष में भूपेश बघेल जी ने छत्तीसगढ़ को दस जनपथ का चारागाह बना दिया था।

श्री गुप्ता ने कहा कि शराब घोटाले, कोयला घोटाले, चावल घोटाले, गोठान घोटाले से लेकर पीएससी घोटाले तक में इसने प्रदेश के संसाधनों को जम कर लूटा था, आज इन घोटालों के आरोपी एक एक कर नप रहे हैं। सभी जेल जा रहे हैं। श्री गुप्ता ने कहा कि बेवजह जिस तरह अपराधियों के विरुद्ध हो रही कानून सम्मत कार्रवाई को कहीं और मोड़ा जा रहा है, वह दुर्भाग्यजनक और कांग्रेस में हिप्पोक्रेसी का सबसे बड़ा नमूना है।

श्री गुप्ता ने कहा कि जब भी आप सभी कॉल ब्लॉक आवंटन और पेड़ कटाई आदि पर सवाल उठाते थे, तो दस जनपथ के दबाव में सीधे तौर पर भूपेश बघेलजी बचाव में आ जाते थे। कहते थे कि कोल ब्लॉक आवंटन का विरोध करने वाले अपने-अपने घरों की बिजली बंद कर दें। सवाल यह है कि अब जब झूठे और बेबुनियाद आरोप लगा कर भूपेशजी अपनी कालिख धोने की कोशिश कर रहे हैं, तो क्या वह अपने घर और राजीव भवन की बिजली बंद करेंगे?

श्री गुप्ता ने कहा कि यह तथ्य है कि न केवल भूपेश बघेल ने कोल ब्लॉक अशोक गहलोत को आवंटित किया था, बल्कि उससे पहले भी मनमोहन सिंह जी की सरकार में तमाम नियमों को धत्ता बताते हुए छत्तीसगढ़ के कोल ब्लॉक आवंटन की राह आसान की थी। उन्होंने कहा कि साल 2010 में केन्द्र में काँग्रेस की सरकार थी, तब कोयला मंत्रालय और पर्यावरण एवं वन मंत्रालय द्वारा हसदेव अरण्य को पूरी तरह से नो-गो जोन घोषित किया गया था। उसे कांग्रेस नीत सरकार के पर्यावरण मंत्री जयराम रमेश ने ही सबसे पहले गो एरिया घोषित किया था। भाजपा जिलाध्यक्ष संतोष गुप्ता ने कहा कि 23 जून 2011 को केन्द्र में कांग्रेस की सरकार रहते ही तारा परसा ईस्ट और कांटे बेसन कोल ब्लॉक को खोलने का प्रस्ताव दिया गया। जब छत्तीसगढ़ और राजस्थान में कांग्रेस की सरकार थी, उस वक्त अडानी को दो बड़ी खदानों गारे पेलमा सेक्टर-2 और राजस्थान में केते एक्सटेंशन ब्लॉक का ऑपरेटर बनाया गया। इसी तरह भूपेश बघेलजी के मुख्यमंत्री कार्यकाल में ही 16 अक्टूबर 2019 को राज्य सरकार ने पर्यावरण स्वीकृति के लिए सिफारिश भेजी।श्री गुप्ता ने कहा कि 31 मार्च 2021 को ओपन कास्ट गारे पेलमा सेक्टर-2, मांड-रायगढ़ कोलफील्ड के लिए हुआ समझौता भी सबके सामने है। इसी क्रम में 19 अप्रैल 2022 को भूपेश बघेल जी के मुख्यमंत्री रहते ही कांग्रेस सरकार द्वारा वन स्वीकृति स्टेज-1 और 23 जनवरी 2023 को वन स्वीकृति स्टेज-2 के लिए सिफारिश भेजी गई।

श्री गुप्ता ने कहा कि महाजेंको कोल फील्ड की स्वीकृति में तत्कालीन मुख्यमंत्री भूपेश बघेल की संलिप्तता को लेकर तब अनेक अखबारों ने समाचार भी प्रकाशित किए थे। 25 मार्च 2022 को भूपेश सरकार ने राजस्थान में अशोक गहलोत की सरकार के रहते राजस्थान को कोल माइंस का आबंटन किया था।

भाजपा जिलाध्यक्ष संतोष गुप्ता ने कांग्रेस से सवाल किया कि क्या वह मनमोहन सिंह सरकार के समय हुए निर्णयों के लिए आज माफ़ी मांगेंगे, क्या भूपेश बघेल यह घोषणा करेंगे कि अब कांग्रेस कभी बिजली का उपयोग नहीं करेगी, क्योंकि स्वयं यह कह चुके हैं कि विरोध करने वाले अपने घर की बिजली बंद कर दें,क्या कांग्रेस हर अपराधी के पक्ष में ऐसे ही खड़ी होगी, जैसे आज पूर्व मुख्यमंत्री के बेटे के लिए हुई है? गुप्ता ने कहा कि जब छत्तीसगढ़ में कांग्रेस की सरकार रही तब राजस्थान के तत्कालीन मंत्री बी डी कल्ला ने भूपेश बघेल को पत्र लिखा और राजस्थान के तत्कालिक मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने एक सप्ताह के भीतर कई पत्र लिखे कोल ब्लॉक आंबटन के लिए। जिसे छत्तीसगढ़ और देश की जनता ने देखा है।

रेडियो से बदलाव की ओर :- नवादंतेवाड़ा रेडियो जॉकी प्रशिक्षण कार्यक्रम में पहुंचे कलेक्टर कुणाल दुदावत, युवाओं को दी प्रेरणा

दंतेवाड़ा/मूक पत्रिका

नवादंतेवाड़ा रेडियो स्टेशन (90.4 स्नरू) द्वारा युवाओं के सशक्तिकरण और स्थानीय प्रतिभाओं को निखारने के उद्देश्य से आयोजित रेडियो जॉकी प्रशिक्षण कार्यक्रम में बीते सोमवार को जिले के कलेक्टर कुणाल दुदावत ने विशेष रूप से शिरकत की। यह 20 दिवसीय प्रशिक्षण 9 जुलाई से 29 जुलाई तक जिला कार्यालय परिसर स्थित नवादंतेवाड़ा रेडियो केंद्र में आयोजित किया जा रहा है।

कार्यक्रम में पहुँचकर कलेक्टर ने प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे प्रतिभागियों से आत्मीय संवाद किया। उन्होंने प्रशिक्षणार्थियों के अनुभवों को गंभीरता से सुना, उनकी जिज्ञासाओं का समाधान किया और रेडियो की दुनिया से जुड़ी कई महत्त्वपूर्ण जानकारियाँ साझा कीं।

कलेक्टर दुदावत ने बताया कि रेडियो केवल मनोरंजन का माध्यम नहीं, बल्कि यह समाज को जोड़ने, जनजागरूकता फैलाने और सकारात्मक बदलाव लाने का एक सशक्त उपकरण है। उन्होंने कहा कि रेडियो जॉकी का कार्य केवल प्रस्तुतिकरण नहीं, बल्कि समाज की नब्ज को समझकर संवाद स्थापित करना भी है।

प्रशिक्षणार्थियों के सवाल और आत्मीय संवाद- कार्यक्रम के दौरान प्रशिक्षणार्थियों ने कलेक्टर से अनेक दिलचस्प सवाल पूछे, जिनमें एक सवाल था ङ्क ÷आपकी पसंदीदा खाने की चीज़ क्या है?÷ इस पर मुस्कुराते हुए दुदावत ने जवाब दिया कि उन्हें 'फूटू' (एक लोकप्रिय स्थानीय सब्ज़ी) बेहद पसंद है। इस सरल उत्तर से उपस्थित युवाओं के चेहरे पर मुस्कान खिल उठी और कार्यक्रम का वातावरण आत्मीयता से भर गया।

रेडियो के ज़रिए बदलाव की प्रेरणा- इस दौरान कलेक्टर ने युवाओं से आग्रह किया कि वे इस प्रशिक्षण को केवल एक तकनीकी ज्ञान के रूप में न लें, बल्कि इसे एक जिम्मेदारी समझें। उन्होंने कहा कि रेडियो एक ऐसा मंच है, जहाँ से शिक्षा, स्वास्थ्य, स्वच्छता, पर्यावरण और सामाजिक बदलाव जैसे विषयों पर प्रभावी संवाद स्थापित किया जा सकता है। उन्होंने बच्चों और युवाओं को मेहनत, अनुशासन और लगन के साथ अपने जीवन के लक्ष्य की ओर बढ़ने की प्रेरणा दी।

यह प्रशिक्षण कार्यक्रम डिस्ट्रिक्ट प्रोजेक्ट लाइवलीहुड कॉलेज सोसायटी, दंतेवाड़ा के सौजन्य से विकास अनुसंधान संस्थान, दंतेवाड़ा द्वारा आयोजित किया जा रहा है। प्रशिक्षण के दौरान रेडियो जॉकी के तकनीकी पहलुओं, प्रस्तुति कला, साक्षात्कार कौशल, वॉयस मॉड्यूलेशन और प्रोडक्शन तकनीकों पर विशेषज्ञों द्वारा गहन जानकारी दी जा रही है।

आयुष्मान आरोग्य मंदिर तुड़पारास को मिला (एनक्यूएएस) प्रमाण पत्र गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सेवाओं की दिशा में बड़ी सफलता

दंतेवाड़ा/मूक पत्रिका

- जिले के ग्राम पंचायत तुड़पारास के स्वास्थ्य केंद्र आयुष्मान आरोग्य मंदिर को भारत सरकार के स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय द्वारा राष्ट्रीय गुणवत्ता आश्वासन मानक (एनक्यूएएस) का प्रमाण पत्र प्रदान किया गया है। ज्ञात होगी यह प्रमाण पत्र स्वास्थ्य सेवाओं में उत्कृष्ट गुणवत्ता, रोगी सुविधा, संक्रमण नियंत्रण और कुशल प्रबंधन जैसे मानकों पर खरा उतरने पर दिया जाता है।

इस उपलब्धि के पीछे कलेक्टर कुणाल दुदावत के निर्देशन, मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. अजय रामटेके, जिला कार्यक्रम प्रबंधक, खंड चिकित्सा अधिकारी डॉ. विजय भुवन कुर्रे और विकासखंड प्रबंधक जीवन नाग की सतत मेहनत और मार्गदर्शन का अहम योगदान रहा। केंद्र में कार्यरत सीएचओ और आरएचओ की समर्पित कार्यशैली और सेवा भावना ने इस केंद्र को राष्ट्रीय मानकों पर खरा साबित किया।

प्रमाणन के लिए केंद्र का मूल्यांकन आउटडोर व इनडोर सेवाएं, मातृ एवं शिशु स्वास्थ्य, औषधि वितरण, संक्रमण नियंत्रण, और रिकॉर्ड प्रबंधन जैसे कुल छह गुणवत्ता बिंदुओं पर किया गया। इस मूल्यांकन में तुड़पारास आरोग्य मंदिर ने 85.47 प्रतिशत अंक अर्जित कर एनक्यूएएस प्रमाणन प्राप्त किया, जो जिले के लिए गर्व की बात है। इस अवसर पर मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. अजय रामटेके ने टीम को बधाई देते हुए कहा कि यह उपलब्धि स्वास्थ्य विभाग की टीम भावना, निरंतर मेहनत और सेवाभाव का परिणाम है। उन्होंने विश्वास जताया कि इस प्रमाणन से क्षेत्रवासियों को और अधिक भरोसेमंद और गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सेवाएं प्राप्त होंगी।

उल्लेखनीय है कि इस कार्य में (ड्ड्ढ) और यूनिसेफ की तकनीकी सहभागिता भी सराहनीय रही। इस सफलता से प्रेरणा लेकर जिले के अन्य स्वास्थ्य संस्थानों में भी गुणवत्ता सुधार की दिशा में प्रयास जारी हैं, जिससे संपूर्ण जिले में स्वास्थ्य सेवाओं की गुणवत्ता को एक नई ऊंचाई दी जा सके।

उपमुख्यमंत्री विजय शर्मा को कवर्धा निवास पर दी जन्मदिवस की शुभकामनाएं, योगेश तिवारी

■ **छत्तीसगढ़ के हिन्दूत्व के फ़ायर ब्रांड नेता है उपमुख्यमंत्री मा विजय शर्मा जी आपका नेतृत्व सनातन संस्कृति की प्रेरणा हैं'**

मूक पत्रिका/बेमेतरा/देवकर – सर्व हिन्दू सनातन संगठन के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं किसान नेता योगेश तिवारी ने छत्तीसगढ़ के उपमुख्यमंत्री विजय शर्मा से उनके कवर्धा स्थित निवास पर मुलाकात कर जन्मदिन की हार्दिक शुभकामनाएं दीं।

योगेश तिवारी का यह शिष्टाचार भेंट केवल एक औपचारिकता नहीं, बल्कि एक विचारधारा की प्रतिबद्धता है। उन्होंने कहा कि विजय शर्मा का जीवन, हिन्दू संस्कृति, राष्ट्रधर्म और छत्तीसगढ़ी अस्मिता के लिए समर्पित है और ऐसे जननेताओं से भेंट करना स्वयं में सौभाग्य की बात है। उन्होंने विजय शर्मा को सनातन संस्कृति के प्रखर प्रतिनिधि बताते हुए कहा, ÷योगेश तिवारी ने बताया माँ विजय शर्मा छत्तीसगढ़ हिन्दुत्व के फ़ायर ब्रांड नेता है । और आपका नेतृत्व प्रदेश के युवाओं को अपनी संस्कृति से जुड़ने, राष्ट्रहित में सोचने और सेवा के पथ पर चलने की प्रेरणा देता है। आपके कार्य और विचार छत्तीसगढ़ में हिंदुत्व की नई चेतना का संचार कर रहा है।÷

योगेश तिवारी ने इस अवसर पर विजय शर्मा को दीर्घायु, उत्तम स्वास्थ्य एवं यशस्वी जीवन की शुभकामनाएँ देते हुए कहा कि आने वाले समय में संगठन और सरकार मिलकर छत्तीसगढ़ को वैभवशाली सांस्कृतिक और आध्यात्मिक राज्य बनाने में अग्रणी भूमिका निभाएंगे।

ईस अवसर पर लाश मे पीयुष शर्मा ।प्रियांशु सिंह माशुम पांनडे मनोज बंजारे सहित प्रमुख सांथी उपस्थित थे।

वृक्षारोपण अभियान से धरा पर आएगी हरियाली, इस उद्देश्य से किया गया पौधारोपण : उमराव सिंह वर्मा

मूक पत्रिका/ बेमेतरा – सदगुरु कबीर आश्रम भंडार गृह, बेमेतरा में पौधारोपण का कार्य किया गया और निरंतर वृक्षारोपण करते रहने व वृक्षों की देखभाल करने के लिए संकल्पित हुए। इस आयोजन के मुख्य उद्देश्य हैं पर्यावरण के प्रति पुरे विश्व के लोगों में जागरूकता बढ़ाना, प्रदूषण कम करना, जैव विविधता को बढ़ावा देना, पर्यावरण संरक्षण, जलवायु संतुलन बनाए रखना, वायु को शुद्ध करना, जैविक विविधता का संरक्षण, वन्यजीवों के लिए आवास प्रदान करना, जैव विविधता को बढ़ावा देना, स्वच्छ पेयजल, मिट्टी के संरक्षण आदि के लिए पौधारोपण और पौधों को वृक्ष के रूप में विकसित होने तक देखभाल करना आज अनिवार्य आवश्यकता है। इस महत्वपूर्ण उद्देश्य को सफल बनाने हेतु इस अवसर पर आश्रम समिति के अध्यक्ष बबलू वर्मा, कोषाध्यक्ष मुरली वर्मा, बल्लू वर्मा, हरमन वर्मा, भुजेंद्र वर्मा, फेंकू वर्मा, उद्धव वर्मा, नेमसिग वर्मा, अतुल वर्मा , दाऊ उमराव सिंह वर्मा, जीधन वर्मा, राजू वर्मा, सावित्री वर्मा, श्रीमती गौरी वर्मा, उस्मनी वर्मा, मीना वर्मा, असवनी वर्मा आदि उपस्थित थे।

जिला परियोजना लाईवलीहुड कॉलेज दन्तेवाड़ा में जिला स्तरीय ''कौशल तिहार-2025'' का होगा आयोजन

मूक पत्रिका/दंतेवाड़ा - कार्यालय जिला कौषल विकास प्राधिकरण से प्राप्त जानकारी अनुसार दिनांक 22, 23 एवं 25 जुलाई 2025 को जिला परियोजना लाईवलीहुड कॉलेज दन्तेवाड़ा में जिला स्तरीय ''कौशल तिहार-2025'' का आयोजन किया जा रहा है। जिसमें मुख्यमंत्री कौशल विकास योजना एवं प्रधानमंत्री कौशल विकास योजनांतर्गत वित्तीय वर्ष 2023-24, 2024-25 में प्रशिक्षण प्राप्त एवं वित्तीय वर्ष 2025-26 में प्रशिक्षणरत युवाओं के मध्य प्रतियोगिता का आयोजन किया जावेगा। कौशल तिहार-2025 के अंतर्गत ऑटोमोटिव, ब्रिक लेयिंग, इलेक्ट्रिकल इंस्टॉलेशन, प्लम्बिंग, फील्ड तकनीशियन इलेक्ट्रॉनिक्स जैसे 10 ट्रेड्स में प्रतियोगिता आयोजित कर विजेता प्रतिभागियों को पुरस्कृत किया जावेगा। जिला स्तर पर विजेता प्रतिभागियों को राज्य स्तरीय कौशल तिहार-2025 में सम्मिलित होने का अवसर प्राप्त होगा। प्रतियोगिता के लिए युवा 2 श्रेणी वर्ग 1 के अन्तर्गत 22 वर्ष से कम आयु वर्ग एवं वर्ग 2 के तहत 22 वर्ष से 25 वर्ष आयु वर्ग ऑनलाइन आवेदन कर सकते हैं।

आंगनबाड़ी सहायिका के रिक्त पद हेतु 21 जुलाई से 04 अगस्त तक कर सकते हैं आवेदन

ICDS

मूक पत्रिका/दंतेवाड़ा - महिला एवं बाल विकास विभाग मंत्रालय, डी.के.एस. भवन रायपुर के प्रेस विज्ञप्ति अनुसार एकीकृत बाल विकास परियोजना बड़े बचेली अंतर्गत वर्तमान में आंगनबाड़ी केंद्र ग्राम पंचायत मोलसनार बड़ेपारा, मसेनार मांझीपारा, बचेली वार्ड क्रमांक -15 में आंगनबाड़ी सहायिका रिक्त पद पर नियमानुसार पूर्ति किया जाना हैं। इस हेतु संबंधित ग्राम पंचायत तथा नगर पंचायत से इच्छुक सभी आवेदनकर्ताओं से दिनांक 21 जुलाई से 04 अगस्त 2025 संध्या 5.30 बजे तक कार्यालय में बंद लिफाफ, डाक या स्वयं के द्वारा आवेदन निश्चित प्रारूप में आमंत्रित किये गये हैं। शैक्षणिक अर्हतानुसार सहायिका पद हेतु 8वीं उत्तीर्ण होना तथा आयु 18 से 44 वर्ष का होना निर्धारित किया गया है। इस संबंध में किसी भी प्रकार की अतिरिक्त जानकारी, आवेदन पत्र का प्रारूप प्राप्त किये जाने हेतु सभी इच्छुक आवेदनकर्ता कार्यालयीन दिवसो में कार्यालयीन समय पर कार्यालय, एकीकृत बाल विकास परियोजना बड़े बचेली व महिला एवं बाल विकास विभाग से संपर्क कर सकते हैं।

मंत्री केदार कश्यप ने किया 42 लाख रुपए से अधिक के विकास कार्यों का भूमिपूजन

जगदलपुर/मूक पत्रिका

छत्तीसगढ़ सरकार में वन एवं जलवायु परिवर्तन, जल संसाधन, सहकारिता, कौशल विकास तथा संसदीय कार्य मंत्री केदार कश्यप ने बीते सोमवार को बस्तर जिले में नारायणपुर विधानसभा क्षेत्र अंतर्गत रतेंगा एवं घोटिया में विभिन्न विकास कार्यों का भूमिपूजन किया, जिससे क्षेत्र में अधोसंरचना और जनसुविधाओं का विस्तार होगा। इन कार्यों की कुल लागत 42 लाख 40 हजार रुपए है।

मंत्री कश्यप ने सालेभाटापारा में लच्छिधर घर के पास 5 लाख रुपए की लागत से बनने वाली 2 मीटर पुलिया के निर्माण कार्य का भूमिपूजन किया। इसी तरह, रतेंगा में किरमबाई नाला पर ?5 लाख की लागत से 2 मीटर पुलिया का निर्माण कार्य भी शुरू किया गया। ये पुलियाएं स्थानीय निवासियों के लिए आवागमन को सुगम बनाएंगी, खासकर बरसात के मौसम में क्षेत्र के लोगों को बहुत अधिक राहत मिलेगी।

इसके अतिरिक्त, क्षेत्र में सार्वजनिक सुविधाओं को मजबूत करने के उद्देश्य से 12 लाख 40 हजार रुपए की लागत से उचित मूल्य की दुकान भवन का निर्माण कार्य प्रारंभ हुआ। यह नई दुकान स्थानीय लोगों को आवश्यक वस्तुओं की उपलब्धता सुनिश्चित करेगी।

व्यवसायिक गतिविधियों को बढ़ावा देने के लिए 15 लाख रुपए की लागत से एक व्यावसायिक परिसर का भी भूमिपूजन किया गया, जिससे स्थानीय युवाओं को रोजगार का साधन मिलने के साथ ही अर्थव्यवस्था को गति मिलने की उम्मीद है।

घोटिया के अटारगुडा पारा में टिबुराम बघेल के घर के पास 5 लाख रुपए की लागत से एक और 2 मीटर पुलिया का निर्माण कार्य शुरू किया गया। यह पुलिया भी स्थानीय कनेक्टिविटी में सुधार लाएगी।

इस अवसर पर मंत्री केदार कश्यप ने कहा कि ये विकास कार्य क्षेत्र के लोगों के जीवन स्तर को बेहतर बनाने और उन्हें मूलभूत सुविधाएं उपलब्ध कराने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम हैं। उन्होंने भरोसा दिलाया कि सरकार क्षेत्र के सर्वांगीण विकास के लिए प्रतिबद्ध है।

गरीबों पर बढ़ा बिजली बिल का बोझ,स्मार्ट मीटर तकनीकी दिक्कतों का समाधान करे सरकार-गोपाल साहू

■ स्मार्ट मीटर में तकनीकी दिक्क त, तत्काल समाधान करे सरकार- बल्लू राम भवानी

मूक पत्रिका/ रायपुर/दंतेवाड़ा - आम आदमी पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष गोपाल साहू ने छत्तीसगढ़ सरकार द्वारा लगाया जा रहे हैं नए स्मार्ट मीटर की खामियों को बताते हुए कहा कि छत्तीसगढ़ में जो हर घर में स्मार्ट मीटर लगाए जा रहे हैं उसके दुष्परिणाम आने लगे हैं, स्मार्ट मीटर लगने के बाद जनता परेशान हो चुकी है जिन उपभोक्ताओं का बिल 300-400 रूपये आता था स्मार्ट मीटर लगाने के बाद उनका बिल 1000-1200 रूपये आ रहा है। साथ ही बिजली वोल्टेज की समस्या भी परेशानी दे रही है जिससे इलेक्ट्रॉनिक सामान खराब हो रहें हैं। दरअसल स्मार्ट मीटर भारत के के क्लाइमेट के हिसाब से नहीं बना है,स्मार्ट मीटर अभी तो समझ में नहीं आ रहा लोगों को जब टेंपरेचर बढ़ेगा गर्मी में तो मीटर और तेजी से घूमेगा और ज्यादा बिल आएगा स्मार्ट मीटर भारत के मौसम में फीट नहीं बैठता वह ठंडे प्रदेशों के लिए ठीक है।

गोपाल साहू ने कहा कि एक ओर तो सरकार डिजिटल तकनीक सुविधाओं को बढ़ाने का दावा करती है, लेकिन स्मार्ट मीटर की कमियों ने सरकार की इन दावों की पोल खोल दी है हालात ग्रामीण क्षेत्रों में और भी ज्यादा खराब है जहां गरीबों को बिजली का भारी बिल थमा दिया जा रहा है। स्मार्ट मीटरों में खामियों को लेकर हाल में कई उपभोक्ताओं ने शिकायतें की हैं। स्मार्ट मीटर का उद्देश्य बिजली उपभोग की सटीक निगरानी, ऑटोमैटिक रीडिंग और रियल-टाइम डेटा उपलब्ध कराना है, लेकिन कई जगह तकनीकी और संचालन संबंधी खामियाँ सामने आई हैं।रियल-टाइम डेटा ट्रांसमिशन की त्रुटियों से खपत ज्यादा दिख सकती है। खराब नेटवर्क के कारण रीडिंग सर्वर तक सही से नहीं पहुँचती। इससे बिलिंग चक्र में गड़बड़ हो जाती है। मीटर सही ढंग से कैलिब्रेट न होने पर बिजली खपत अधिक या कम दिख सकती है। स्मार्ट मीटर ढ्ढशञ्ज आधारित होते हैं, इसलिए हैकिंग और डेटा मैनिपुलेशन का खतरा रहता है। जिसकी ताज़ा घटना राजधानी रायपुर में घटी है जहां आधुनिक तकनीक से बिजली चोरी पकड़ी गयी है। हार्डवेयर खराब होने से मीटर रीडिंग बंद या गलत हो सकती है। बिजली कटने पर रीसेट संबंधी समस्याएँ आ सकती हैं। गलत बिलिंग को सुधारने की प्रक्रिया लंबी होती है, जिससे उपभोक्ताओं को परेशानी होती है।

नारायणपुर विधानसभा को मंत्री केदार कश्यप ने दी 42 लाख की सौगात, व्यवसायिक परिसर सहित विभिन्न निर्माण कार्यों का किया भूमिपुजन

बस्तर के विकास का संकल्प होगा पूरा – केदार कश्यप

मूक पत्रिका/जगदलपुर/दंतेवाड़ा - छत्तीसगढ़ शासन के वनमंत्री केदार कश्यप इन दिनों बस्तर प्रवास पर हैं। आज उन्होंने बस्तर के विकास और समृद्धि के लिये क्षेत्रवासियों को कई सौगात दिए। मंत्री केदार कश्यप ने ग्राम पंचायत रतेंगा, नवा रतेंगा, घोटिया, नारायणपाल में भवन निर्माण, व्यवसायिक परिसर, पुल- पुलिया सहित विभिन्न निर्माण कार्यों के लिये 42 लाख रूपये की सौगात दी।

मंत्री केदार कश्यप ने इस दौरान जन समूह को सम्बोधित करते हुए कहा कि बस्तर के विकास के लिये विष्णुदेव साय सरकार लगातार प्रयासरत है। लगातार क्षेत्र को मिल रही सौगात विष्णुदेव साय जी की बस्तरवासियों के प्रति सकारात्मक दृष्टि को दर्शाता है। बस्तर क्षेत्र में विकास की पहलों को बढ़ावा देने और स्थानीय लोगों के जीवन स्तर में सुधार लाने के लिए सरकार द्वारा कई कदम उठाए जा रहे हैं।

बस्तर के विकास के लिये सड़कों का सुधार और निर्माण कार्य जारी : वनमंत्री केदार कश्यप ने क्षेत्रवासियों से कहा कि सड़क निर्माण और सुधार कार्य साय सरकार में तेजी से चल रहा है। बस्तर में कॉंग्रेस सरकार ने पिछले पाँच साल एक भी सड़क का निर्माण नहीं किया न ही सड़क की मरम्मत की जिसके कारण आज क्षेत्र के लोगों को काफी दिक्कतों का सामना करना पड़ रहा है। लेकिन भाजपा शासन और विष्णुदेव साय सरकार ने क्षेत्र में आवागमन की सुविधा को दुरुस्त करने कई सड़कों के पुनर्निर्माण के लिये स्वीकृति दी है। उन्होंने बताया कि नारायणपुर कोंडागांव मार्ग का निर्माण कार्य जारी है वहीँ, अंतागढ़ से नारायणपुर, ओरछा से नारायणपुर सड़क निर्माण और सुधार के कार्य के लिये प्रशासकीय स्वीकृति मिल गयी है जल्द ही क्षेत्रवासियों को सुलभ सड़क प्राप्त होगा।

शिक्षा और स्वास्थ्य के क्षेत्र में सुधार जारी :- मंत्री केदार कश्यप ने कहा कि कांग्रेस शासन काल में प्रदेश की स्वास्थ्य व्यवस्था और शिक्षा व्यवस्था का बुरा हाल था। शिक्षा और स्वास्थ्य क्षेत्र में कांग्रेस सरकार ने काम के नाम पर केवल नाम बदलने का काम किया। कांग्रेस ने बस्तर ही नहीं पुरे प्रदेश में एक नया स्वास्थ्य केंद्र और न ही नये स्कूल का निर्माण किया। मंत्री केदार कश्यप ने कहा कि प्रदेश में जबसे विष्णुदेव साय जी की सरकार आयी है तब से बस्तर क्षेत्र में विकास कार्यों में तेजी आयी है। 15 हजार प्रधानमंत्री आवास स्वीकृत हुए, 45 आंगनबाडी केंद्र, पीएससी भवन, नवीन स्वास्थ्य केंद्र, महतारी सदन की स्वीकृति बस्तर क्षेत्रवासियों के सुविधा और सेवा के लिये प्राप्त हुए हैं।

उद्योग और रोजगार के क्षेत्र में कौशल विकास और सहकारिता को बढ़ावा देने पर हमारा प्रयास – वनमंत्री केदार कश्यप ने कहा कि बस्तर में उद्योग और रोजगार के अवसरों को बढ़ावा देने के लिए सरकार द्वारा प्रयास किए जा रहे हैं, जिससे स्थानीय युवाओं को रोजगार मिल सके। कौशल विकास के माध्यम से आज बस्तर में आत्म समर्पित नक्सलीयों को प्रशिक्षण दिया जा रहा है। स्थानीय युवाओं को पर्यटन क्षेत्र में होटल मैंनेजमेंट, फूड प्रोसेसिंग, डिजिटल मार्केटिंग जैसे विधाओं में पारंगत किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि साय सरकार स्थानीय स्तर पर व्यापार और उद्योग को बढ़ावा देने के लिये बस्तर क्षेत्र में व्यवसायिक परिसर का निर्माण कर रही है जिससे क्षेत्र के लोगों को स्थानीय स्तर पर व्यापारिक केंद्र प्राप्त होगा।

सहकारिता के माध्यम से सामूहिक समृद्धि को बढ़ावा- केदार कश्यप ने कहा कि सहकारिता के क्षेत्र में भी बस्तर में बेहतर कार्य हो रहे हैं। छत्तीसगढ़ में विष्णुदेव साय सरकार द्वारा प्रदेश के अनुसूचित जनजाति वर्ग के आर्थिक उन्नयन तथा उन्हें दुग्ध सहकारिता से जोड़ने के लिए प्रथम चरण में बस्तर क्षेत्र के 06 जिलों के 325 परिवारों को 650 दुधारू पशु प्रदाय करने की योजना एन.डी.डी.बी. के साथ मिलकर तैयार की गई है। इसके अलावा बस्तर में मत्स्य पालन, कुक्कूट पालन, बकरी पालन, मशरूम खेती के क्षेत्र में सहकारिता के माध्यम से समिति बनाकर कर कार्य करने के लिये स्थानीय निवासियों को प्रेरित किया जा रहा है।

एक पेड़ माँ के नाम कार्यक्रम के तहत किया वृक्षारोपण- वनमंत्री केदार कश्यप ने नवा रतेंगा, घोटिया, नारायणपाल में ÷एक पेड़ माँ के नाम÷ कार्यक्रम में सम्मिलित होकर वृक्षरोपण किया। उन्होंने वृक्षारोपण को लेकर कहा कि यह पहल बहुत ही सकारात्मक और पर्यावरण के प्रति समाज को जागरूक करने वाला कदम है। छत्तीसगढ़ सरकार पर्यावरण संरक्षण और वृक्षारोपण के महत्व को बढ़ावा देने यह अभियान चला रही है। उन्होंने कहा कि एक पेड़ माँ के नाम अभियान 2.0 के तहत अब तक हमने 1 करोड़ 7 लाख पौधा वृक्षारोपण का लक्ष्य प्राप्त कर लिया। मंत्री केदार कश्यप ने बताया कि भाजपा शासन आने के बाद ही भारतीय वन सर्वेक्षण रिपोर्ट (ढ्ढस्स्नक्र) 2023 के अनुसार छत्तीसगढ़ में जंगल और पेड़ों की संख्या में इजाफा हुआ है। और छत्तीसगढ़ ने संयुक्त वन एवं वृक्ष आवरण वृद्धि में देश में पहला स्थान हासिल किया है।

इस दौरान पूर्व सांसद दिनेश कश्यप, जिला पंचायत अध्यक्ष श्रीमती वेदवती कश्यप, जिला पंचायत उपाध्यक्ष बलदेव मंडावी जी, जनपद अध्यक्ष संतोष बघेल, जिला पंचायत सदस्य निर्देश दिवान जी एवं भाजपा के देवतुल्य कार्यकर्ताओं व परिवारजन उपस्थित रहें।

अघोषित बिजली कटौती से परेशान किसान व ग्रामीणों ने कार्यपालन अभियंता के नाम सौंपा ज्ञापन

दस दिवस के अंदर मांग पूरी नहीं हुई तो छपोरा सब स्टेशन घेराव करने का किया ऐलान

जांजगीर चांपा/सक्ती/मूक पत्रिका

सक्ती जिले के ग्राम पंचायत धमनी का मामला सामने आया जहां लाइन विभाग की बिजली कटौती से परेशान होकर ग्राम धमनी के किसान और ग्रामीणों ने सब स्टेशन छपोरा और नरियरा सब स्टेशन के बिजली विभाग के खिलाफ मोर्चा खोल दिया है साथ ही ग्रामीणों ने कार्यपालन अभियंता सक्ती के नाम सहा. अभियंता हसौद के द्वारा ज्ञापन दिया है ग्रामीणों ने बताया कि नरियरा सब स्टेशन में बार-बार लाइट बंद होने की समस्या के कारण किसान और ग्रामवासियों को काफी परेशानी हो रही है और हमारे दैनिक जीवन पर भी इसका प्रभाव पड़ रहा है साथ ही बिजली विभाग के द्वारा मानसून आने से पहले मेंटेनेंस नहीं करने के कारण उपभोक्ताओं को भारी परेशानी उठानी पड़ रही है कई जगह तो ऐसे हैं जहां एबी स्विच की जरूरत है वहां डायरेक्ट कर लाइन दिया जा रहा हैं ग्रामीणों ने बताया है कि नरियरा सब स्टेशन की जंफ्फर को बाईपास करके डायरेक्ट लाइन दिया जा रहा है जो पूर्णतः गलत है और ग्रामीणों का कहना है कि थोड़ा सा हवा चलने पर ही लाइन बंद हो जाती है और घंटो बाद आती है इन्हीं सब मुद्दों को लेकर हम सभी ग्राम वासियों ने बिजली विभाग की उच्च अधिकारियों को आवेदन के माध्यम से अपना समस्या बताएं हैं अगर हमारी समस्याओं का निराकरण 10 दिवस में नहीं होती है तो हम सब ग्रामवासी और किसान मिलकर छपोरा सब स्टेशन का घेराव करेंगे जिसकी सारी जिम्मेदारी बिजली विभाग के अधिकारियों की होगी अब देखना या होगा कि बिजली विभाग उपभोक्ताओं की मांग पूरा कर पाती है या आंदोलन का रास्ता देखेगी।

क्या कहते हैं जनप्रतिनिधि

नरियरा सब स्टेशन की बिजली कटौती से किसान सहित ग्रामीणों में आक्रोश का माहौल है जिसको लेकर हम लोगों ने बिजली की समस्या का निराकरण करने के लिए कार्यपालन अभियंता सक्ती को सहा. अभियंता के मध्यम से आवेदन दिए हैं अगर समस्या का समाधान नहीं होती है तो फिर आगे आंदोलन करेंगे।

विजय केशी जनपद सदस्य हसौद धमनी क्षेत्र

विद्युत समस्याओं को लेकर कांग्रेस ने किया न प भिभौरी में विद्युत कार्यालय का घेराव

बेमेतरा/मूक पत्रिका

विधानसभा के नगर पंचायत भिभौरी में कांग्रेस कमेटी के द्वारा छत्तीसगढ़ विद्युत मंडल कार्यालय का घेराव किया गया एवं रैली निकालकर प्रदर्शन किया गया जिसमें जिला कांग्रेस कमेटी अध्यक्ष आशीष छावड़ा ने भी शिरकत की इस दौरान आम जनता तथा कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुए पूर्व विधायक एवं जिला कांग्रेस कमेटी अध्यक्ष आशीष छाबड़ा ने कहा कि भाजपा की सरकार को छत्तीसगढ़ में सत्ता संभाले हुए 2 वर्ष भी नहीं हुए हैं और इन दो वर्षों में भाजपा ने राज्य की जनता को चार बार विद्युत टैरिफ बढ़ाने की सौगात दी है और तो और नगर पंचायत भिभौरी बेरला तथा ग्रामीण अंचलों में चार-चार ,छह छह घंटे की विद्युत कटौती की जा रही है तथा घर के विद्युत बिलों में अनाप-शनाप बिलिंग की शिकायतें क्षेत्र से लगातार प्राप्त हो रही है राज्य की भाजपा सरकार किसानों को ना तो खाद दे पा रही है और ना ही बिजली भाजपा का काम केवल लूटने का है और पूरी बीजेपी पार्टी उसे काम में एक जुटता के साथ लगी हुई है यही कारण है कि आज बेमेतरा के भाजपा जनप्रतिनिधियों को बेमेतरा विधानसभा क्षेत्र के न प भिभौरी में हो रही विद्युत कटौती तथा अनाप-शनाप बिजली बिल की शिकायतें नहीं दिख रही हैं पूर्व विधायक आशीष छाबड़ा ने विद्युत मंडल तथा शासन प्रशासन को आगाह करते हुए कहा कि अगर व्यवस्थाएं नहीं सुधरी तो कांग्रेस चुप नहीं बैठेगी इससे भी बड़ा प्रदर्शन और कार्यवाही करेगी जिसके लिए विभाग और प्रशासन जिम्मेवार होगा इस दौरान बेरला ब्लॉक कांग्रेस कमेटी अध्यक्ष रामेश्वर देवांगन तथा जनपद अध्यक्ष प्रतिनिधि रवि परगनिया जिला कांग्रेस कमेटी महामंत्री ललित विश्वकर्मा शुभम वर्मा नवाज खान चन्द्र विजय धीवर नेतराम निषाद निहाल परगनिया रवि साहू निलेश वर्मा नरेंद्र धीवर प्रकाश यादव मोहित धीवर बुद्धदेव नेवल वीणा साहू विक्की साहू राजेंद्र वर्मा तुलाराम धीवर मोतीलाल साहू दुर्गेश साहू टीकम वर्मा किशन साहू भूषण साहू रास बिहारी कुर्रे भारत भूषण साहू सुमित राजपूत प्रवीण शर्मा जयंत जांगड़े बबली सोनवानी किशन साहू कृष्णा चतुर्वेदी दिगंबर परगनिया लोकनाथ यादव रमेश पाटिल सहित बड़ी संख्या में कांग्रेस कार्यकर्ता एवं नगर वासी उपस्थित रहे।

कलेक्टर जन्मेजय महोबे ने जनदर्शन में सुनी आमजनों की मांग एवं समस्याएं

जनदर्शन में कुल 92 आवेदन हुए प्राप्त

जांजगीर-चांपा/मूक पत्रिका

कलेक्टर जन्मेजय महोबे ने बीते सोमवार को कलेक्टोरेट सभाकक्ष में आयोजित साप्ताहिक जनदर्शन में जिले के नागरिकों की समस्याओं, शिकायतों एवं मांगों को सुना एवं संबंधित अधिकारियों को जनदर्शन में प्राप्त आवेदनों का संवेदनशीलता के साथ निराकरण करने के निर्देश दिए। जनदर्शन में बीते सोमवार कुल 92 आवेदन प्राप्त हुए। जनदर्शन में तहसील मुख्यालय जांजगीर निवासी प्रदीप राठौर ने राजस्व प्रकरण में एक माह से अधिक समयावधि होने के बाद भी आदेश पारित नही होने के संबंध में आवेदन प्रस्तुत किया। तहसील बलौदा निवासी धनीराम जिस पर कलेक्टर ने एसडीएम जांजगीर को त्वरित कार्रवाई करने के निर्देश दिए। इसी प्रकार तहसील बलौदा के ग्राम खैजा निवासी द्वारिका प्रसाद ने नामांतरण प्रकरण की प्रतिलिपि प्रदान करने के संबंध में आवेदन प्रस्तुत किया। कलेक्टर ने तहसीलदार बलौदा को त्वरित निराकरण करने के निर्देश दिए। यादव ने निराश्रित पेंशन दिलाने के संबंध में आवेदन प्रस्तुत किया। जिस पर कलेक्टर ने संबंधित अधिकारी को आवश्यक जांच करते हुए निराकरण करने के निर्देश दिए। इसी प्रकार आज जनदर्शन में आर्थिक सहायता, राशन कार्ड, पीएम आवास सहित अन्य विषयों से संबंधित 92 आवेदन प्राप्त हुए।

पुत्र मोह में कांग्रेस को झोंक रहे भूपेश बघेल : भाजपा जिलाध्यक्ष घासी राम नाग का तीखा हमला

बीजापुर /मूक पत्रिका

पूर्व मुख्यमंत्री भूपेश बघेल के बेटे चैतन्य बघेल को लेकर उठे राजनीतिक बवंडर के बीच भाजपा ने कांग्रेस पर तीखा हमला बोला है। भाजपा जिलाध्यक्ष घासी राम नाग ने आज बीजापुर जिला भाजपा कार्यालय में आयोजित प्रेस वार्ता के दौरान कांग्रेस पार्टी पर ÷पुत्र मोह÷ में पूरे संगठन को झोंकने का गंभीर आरोप लगाया। घासी राम नाग ने सवाल उठाया, ÷भूपेश बघेल के बेटे चैतन्य बघेल का कांग्रेस में क्या पद है? वह किस हैसियत से कांग्रेस का विषय बन गए, जिसके समर्थन में पूरी पार्टी प्रदर्शन कर रही है?÷ उन्होंने कहा कि कांग्रेस का यह व्यवहार स्पष्ट करता है कि पूर्व मुख्यमंत्री ने कांग्रेस संगठन को व्यक्तिगत हितों की ढाल बना लिया है।

भ्रष्टाचारियों के समर्थन में खड़ी कांग्रेस : नाग-जिलाध्यक्ष नाग ने आरोप लगाया कि भूपेश बघेल और कांग्रेस, भ्रष्टाचार के आरोपों से घिरे लोगों को बचाने प्रदेश की जनता को गुमराह कर रही है। उन्होंने कहा, ÷शराब, चावल, गोठान, पीएससी, कोयला जैसे तमाम घोटालों में कांग्रेस की भूमिका संदेह से परे नहीं रही। आज जब इन घोटालों के आरोपी कानून के शिकंजे में आ रहे हैं, तब कांग्रेस विरोध की आड़ में बचाव कर रही है।÷

कोल ब्लॉक पर कांग्रेस का पर्दाफाश - दस्तावेजों के साथ लगाए आरोप -पत्रकार वार्ता में घासी राम नाग ने कोल ब्लॉक आवंटन के मामले में कांग्रेस की कथनी और करनी पर गंभीर सवाल खड़े किए। उन्होंने बताया कि ÷2010 में जब केंद्र में कांग्रेस की सरकार थी, तब हसदेव अरण्य क्षेत्र को नो-गो जोन से 'गो एरिया' घोषित किया गया। इसके बाद ही कोल ब्लॉकों की राह खुली। यह सब जयराम रमेश जैसे कांग्रेस मंत्रियों की भूमिका में हुआ।÷ उन्होंने आरोप लगाया कि ÷23 जून 2011 को कांग्रेस सरकार ने तारा, परसा ईस्ट और कांटे-बेसन कोल ब्लॉक खोलने की प्रक्रिया शुरू की। बाद में भूपेश बघेल सरकार ने 16 अक्टूबर 2019, 19 अप्रैल 2022 और 23 जनवरी 2023 को कोल ब्लॉकों के लिए पर्यावरण और वन स्वीकृति की सिफारिश की।÷

दस जनपथ को बताया 'चारागाह' -भाजपा जिलाध्यक्ष ने भूपेश बघेल पर आरोप लगाया कि ÷अपने शासनकाल के दौरान उन्होंने छत्तीसगढ़ को 'दस जनपथ' का चारागाह बना दिया था। कोल ब्लॉक से लेकर शराब, गोठान और पीएससी जैसी योजनाएं कांग्रेस की कमाई का जरिया बन गई थीं। अब जब जांच एजेंसियां कार्रवाई कर रही हैं, तो कांग्रेस को यह नागवार गुजर रहा है।÷

भाजपा ने कांग्रेस से मांगे जवाब

भाजपा ने कांग्रेस से तीन प्रमुख सवालों का जवाब मांगा-1. क्या कांग्रेस मनमोहन सरकार के समय हुए कोल ब्लॉक निर्णयों पर माफी मांगेगी?2. क्या भूपेश बघेल और कांग्रेस अब बिजली का उपयोग बंद करेंगे, जैसा कि उन्होंने विरोधियों को कहा था?3. क्या कांग्रेस हर आरोपी और अपराधी के समर्थन में सड़कों पर उतरती रहेगी? घासी राम नाग ने अंत में कहा कि ÷प्रदेश की जनता कांग्रेस की दोहरी नीति को समझ चुकी है और 2023 के चुनाव में जो सबक दिया, वह आने वाले चुनावों में और भी स्पष्ट दिखेगा।÷

इस पत्रकार वार्ता में भाजपा युवा मोर्चा प्रदेश कार्यसमिति सदस्य फूलचन्द गागड़ा और एसटी मोर्चा प्रदेश कार्यसमिति सदस्य हरिहर साहनी भी उपस्थित थे।

पुलिस की बड़ी कार्रवाई : गौवंश तस्करी का पर्दाफाश, 7 अंतरराज्यीय तस्कर गिरफ्तार

बीजापुर /मूक पत्रिका

जिले के थाना मद्देड़ पुलिस ने गौवंश तस्करी के एक बड़े नेटवर्क का पर्दाफाश करते हुए 83 पशुओं को तस्करों के कब्जे से मुक्त कराया है। इस कार्यवाही में पुलिस ने सात आरोपियों को गिरफ्तार किया है, जो तेलंगाना राज्य के निवासी बताए जा रहे हैं।पुलिस को मुखबिर से सूचना मिली थी कि मिनकापल्ली से तारलागुड़ा के जंगल रास्ते से भारी संख्या में मवेशियों को अवैध रूप से तेलंगाना राज्य के एटुनगरम क्षेत्र की ओर ले जाया जा रहा है। सूचना मिलते ही थाना मद्देड़ की टीम ने सक्रियता दिखाते हुए ग्राम मिनकापल्ली के जंगल क्षेत्र में घेराबंदी कर तस्करों को रंगे हाथों पकड़ लिया।पूछताछ के दौरान आरोपियों के पास मवेशी परिवहन के लिए कोई वैध दस्तावेज नहीं थे। मौके पर गवाहों की उपस्थिति में कुल 83 गौवंश पशुओं को जब्त किया गया। पुलिस द्वारा बरामद मवेशियों को एसडीएम भोपालपट्टनम के आदेशानुसार ग्राम पंचायत मद्देड़ के कांजी हाउस में सुरक्षित रखा गया है।

तर्रेम में माओवादियों की कायराना हरकत, दो ग्रामीणों की धारदार हथियार से हत्या

बीजापुर /मूक पत्रिका

जिले के तर्रेम थाना क्षेत्र में रविवार रात माओवादियों की कायराना करतूत एक बार फिर सामने आई है।

पुलिस सूत्रों के अनुसार, माओवादियों ने दो ग्रामीणों की धारदार हथियार से निर्मम हत्या कर दी। मृतकों की पहचान छुटवाई गांव के रहने वाले कवासी जोगा (55 वर्ष) और बड़ा तर्रेम के मंगलू कुरसम (50 वर्ष) के रूप में हुई है।प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार, इस वारदात को 4 से 5 अज्ञात माओवादियों ने मिलकर अंजाम दिया। थाना तर्रेम पुलिस ने घटना की पुष्टि करते हुए बताया है कि घटना की तस्दीक की जा रही है। विस्तृत जानकारी पुलिस जांच के बाद साझा की जाएगी। बीजापुर जिले में पिछले 25 दिनों में मुखबिरी के शक में नक्सलियों ने 6 ग्रामीणों,2 छात्रों एवं 2 शिक्षादूतों सहित 10 लोगों की हत्या की है।

नक्सली बेटे ने किया था सरेंडर

सूत्रों से मिली जानकारी अनुसार कुरसाम मंगलू के बेटे नंदू ने सरेंडर किया था। नंदू घर पर मौजूद नहीं था। आशंका है कि उसकी हत्या करने माओवादी आए थे। वो नहीं मिला तो पिता कुरसाम मंगलू की हत्या कर दी। इस घटना के बाद इलाके में दहशत का माहौल है।क्षेत्र में दहशत का माहौल देखा जा रहा है। पुलिस ने अतिरिक्त बल भेजकर इलाके में गश्त तेज कर दिया है।

खाद बिक्री में अनियमितता : 02 केन्द्रों को नोटिस व 03 पर लगा प्रतिबंध

मुंगेली/मूक पत्रिका

कृषि विभाग रायपुर के संचालक राहुल देव के निर्देशानुसार एवं कलेक्टर कुन्दन कुमार के मार्गदर्शन में किसानों को खाद-बीज की निर्बाध रूप से आपूर्ति सुनिश्चित करने तथा उर्वरक की कालाबाजारी व जमाखोरी एवं नकली खाद विक्रय रोकने लगातार प्रयास किया जा रहा है। इसी कड़ी में कृषि विभाग द्वारा विभिन्न कृषि केन्द्रों का निरीक्षण किया गया। कृषि विभाग के उपसंचालक एम.आर.तिग्गा ने बताया कि उर्वरक विक्रय में अनियमितता पाये जाने पर साहू कृषि केन्द्र मोहडंडा, पटेल कृषि केन्द्र मोहडंडा, मॉ महामाया कृषि केन्द्र देवरहट के विक्रय में उर्वरक नियंत्रण आदेश 1985 के निहित प्रावधानों के अन्तर्गत प्रतिबंध किया गया, साथ ही साहू कृषि केन्द्र खपरीकला, सत्येन्द्र कृषि केन्द्र तरकीडीह तथा उक्त प्रतिबंधित कृषि केन्द्रों को कारण बताओ नोटिस जारी किया गया। जिला निरीक्षक मनहरण कुर्रे ने निर्धारित मूल्य तथा पॉस मशीन के माध्यम से ही उर्वरक का विक्रय करने के निर्देश दिए। इसके अलावा उर्वरक के साथ अन्य सामाग्री कृषकों को नहीं देने, दुकानों में मूल्य सूची, स्टॉक की जानकारी स्पष्ट रूप से प्रतिदिन प्रदर्शित करने के भी निर्देश दिए गए। इस दौरान राजेश साहू निरीक्षक, लोकेश कोशले, योगेश दुबे निरीक्षक, उमेश दीक्षित निरीक्षक एवं सहायक भीष्म राव भोसले उपस्थित रहे।

कार्यालयीन समय में 20 से अधिक अधिकारी-कर्मचारी मिले गैरहाजिर

कलेक्टर ने किया जिला कार्यालयों का औचक निरीक्षण

अनुपस्थिति एवं विलंब पर जताई गहरी नाराजगी, नोटिस जारी करने तथा वेतन कटौती के दिए निर्देश

मुंगेली /मूक पत्रिका

कलेक्टर कुन्दन कुमार ने जिला कलेक्टोरेट स्थित समाज कल्याण, उद्योग, शिक्षा सहित विभिन्न विभागीय कार्यालयों का औचक निरीक्षण कर अधिकारी-कर्मचारियों की उपस्थिति की जांच की। निरीक्षण के दौरान 20 से अधिक अधिकारी-कर्मचारियों की अनुपस्थिति एवं विलंब पर कलेक्टर ने गहरी नाराजगी व्यक्त की और अधिकारियों को स्पष्ट निर्देश दिए कि लापरवाही किसी भी सूरत में बर्दाश्त नहीं की जाएगी। कलेक्टर ने अनुपस्थित अधिकारियों को कारण बताओ नोटिस जारी करने तथा एक दिन का वेतन काटने के निर्देश दिए। उन्होंने उपस्थिति पंजी का भी निरीक्षण किया और कहा कि उपस्थिति में पारदर्शिता और नियमितता आवश्यक है। निरीक्षण के दौरान शिक्षा विभाग के अधिकारी-कर्मचारी बड़ी संख्या में बिना सूचना के कार्यालयीन समय में अनुपस्थित पाए गए, इनमें जिला शिक्षा अधिकारी चन्द्र कुमार घृतलहरे, जिला मिशन समन्वयक ओ.पी. कौशिक, सहायक जिला परियोजना अधिकारी अजय नाथ सहित सहायक परियोजना समन्वयक, प्रोगामर, सहायक ग्रेड 03 व 02, कम्प्यूटर ऑपरेटर एवं भृत्य अनुपस्थित पाए गए। इसी तरह जिला उद्योग एवं व्यापार केन्द्र के महाप्रबंधक व प्रबंधक, समाज कल्याण विभाग के उपसंचालक और कम्प्यूटर ऑपरेटर के बिना सूचना के कार्यालयीन समय में अनुपस्थिति पर नाराजगी जाहिर करते हुए कारण बताओ नोटिस जारी करने तथा एक दिन का वेतन काटने के निर्देश दिए। वहीं समग्र शिक्षा के अंतर्गत कार्यरत प्रोग्रामर शशिभूषण पांडेय द्वारा गैरहाजिर रहने के बावजूद उपस्थिति पंजी में हस्ताक्षर करने के कृत्य को गंभीर लापरवाही मानते हुए कलेक्टर ने उक्त प्रकरण को गंभीरता से लेते हुए संबंधित कर्मचारी को सेवा से पृथक करने आवश्यक कार्रवाई करने के निर्देश दिए। उन्होंने सभी अधिकारी-कर्मचारियों को अनुशासन का कड़ाई से पालन करने और कार्यालय में समय पर उपस्थिति सुनिश्चित करने तथा कार्य के प्रति गंभीरता बरतने के निर्देश दिए। इस दौरान संबंधित अधिकारी मौजूद रहे।

स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक आशिष कुमार कंठले द्वारा स्वामी डीबी कार्प लिमिटेड के लिए प्लाट नम्बर 40/44 इंडस्ट्रियल एरिया बीरगांव रोड, उरला, रायपुर से मुद्रित एवं वार्ड नंबर 18 बाजार पारा बेमेतरा पोस्ट व जिला बेमेतरा छ.ग. पिन कोड 491335 से प्रकाशित । संपादक आशिष कुमार कंठले समाचार चयन के लिए पी.आर.बी. एक्ट के तहत जिम्मेदार मो. नं. 7999238079, 7828658259, समस्त विवादों का निपटारा बेमेतरा न्यायालय होगा।